RNI No. UPHIN/2011/40224
पंजीकृत सं.-ए स.ए स.पी./ए ल.डब्लू./ए न.पी-341/2021-2023

हिन्दी मासिक पत्रिका
अक्टूबर-2023
मूल्य: 20/- रुपये मात्र

प्रकृति मेल

जीवन विकास में रुकावट की घेराबंदी दूर करने का सूत्र

नोट: यह पत्रिका प्रत्येक माह की 6 तारीख को मुद्रित होकर उसी माह की 8 तारीख को डाक द्वारा भेजा जाता है।

मौसम
प्रकृति में समन्वय
सत्य का स्रोत
परिवर्तन
प्रकृति आश्रम
प्रकृति के तत्व विज्ञान, जीवन के मूल रहस्य
एवं जिज्ञासा पूर्ण करने की प्रकृति स्थली
'अशोक मानव'
9415041794, 9807636072
ग्राम-मड़वाना, पो0-रघुनाथपुर, निकट सैदापुर, लखनऊ।

कोमल
बिल्डिंग मैटेरियल
सत्य प्रकाश मिश्रा (राहुल मिश्रा)
बिक्रेता • बालू • मौरंग • सीमेंन्ट • गिट्टी
मछली शहर, जौनपुर
मो0 9792512188

प्रकृति मेल

हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष:13 अंक : 4 | अक्टूबर -2023

संरक्षक
डा० उत्तम प्रकाश मानव
संपादक
अशोक मानव
कार्यकारी संपादक
उमेश
विधि सलाहकार
नवनीत कुमार वर्मा
मुख्य संवाददाता
आशीष त्रिपाठी
वरिष्ठ संवाददाता
अरविन्द त्रिपाठी
दिल्ली संवाददाता
मनोज
पुर्वांचल हेड
श्री प्रकाश मिश्रा
संवाददाता
सूर्यमणि यादव, अनुराग, कामेश, सुनील प्रदीप, गौरव पंत, अभिषेक पंत, हेमंत पाण्डेय, प्रशांत द्विवेदी, सुमनलता यादव, मानवेन्द्र त्रिपाठी, अक्षय कुमार, अभय सिंह
ग्राफिक्स, डिजाइन एवं तकनीकि
संजय यादव
कैमरा मैन
धर्मेन्द्र त्रिपाठी
प्रबंध, विज्ञापन एवं सदस्यता
संपर्क 8423330911, 9598911575

पंजीकरण कार्यालय
सूर्या आश्रम, मानव नगर, कल्याणपुर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश– 226022
प्रधान कार्यालय
18/A ब्रह्मपुरी, निकट जुगौली क्रॉसिंग, फैजाबाद रोड, लखनऊ – 226016

इस पत्रिका में प्रकाशित सभी लेखों और विचारों के लिए उनका लेखक स्वयं उत्तरदायी होगा। विज्ञापनों में किये गये दावों की जाँच–पड़ताल स्वयं करें। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन होगा।
नोट: इस पत्रिका के समस्त सहभागी पदाधिकारीगण पत्रिका के प्रारम्भ के अंक से ही बिना किसी मासिक सहयोग धनराशि या वृत्तिका के स्वेक्षा से बिना किसी दबाव के समय दान के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी अशोक मानव द्वारा सूर्या प्रिंटिंग प्रेस एण्ड पब्लिकेशन, खसरा संख्या 872, ग्राम मड़वाना, जनपद–लखनऊ, उ. प्र. पिन-226104 से मुद्रित कराकर सूर्या आश्रम, मानव नगर, कल्याणपुर, लखनऊ, उ. प्र. से प्रकाशित किया।

संपादक – अशोक मानव
Website : www.prakritimail.com
Email : info@prakritimail.com
editor.prakritimail@gmail.com

अंदर के पन्नों पर

P 8 वास्तविक स्वतंत्रता और मुक्ति

P 16 स्व निर्द्वंद ध्वनि यात्रा– कर्म ज्योति

P 20 अमर्त्य सेन एक महान विचारक

P 22 एक राज्य एक चुनाव

P 24 भविष्य जानना भला क्यों

P 29 आत्महत्या निवारण दिवस

P 35 मेगलेव टेक्नोलॉजी विद्युत् गाड़ियों की ओर एक महत्वपूर्ण कदम

P 38 निगाहें आसमान की ओर

P 40 संयम और नैतिकता अपनाने से सर्वांगीण विकास

P 48 होम्योपैथी एक प्राचीन चिकित्सा पद्धति

P 32 प्रकृति विज्ञान

जीवन विकास में रुकावट की घेराबंदी दूर करने का सूत्र

'जीवन में आने वाली रुकावट पर प्रश्न - उत्तर न उत्पन्न करे ,जीवन में उत्पन्न होने वाली अवस्था के एहसास से गुजरते जाए, इसी क्रिया में बनने वाला गुण स्वत: रुकावट दूर कर देगा'

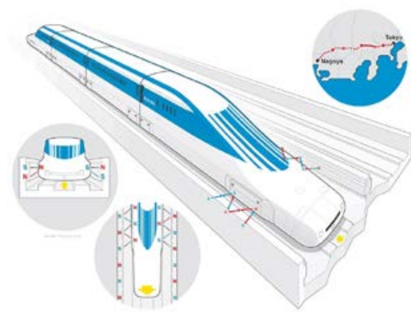

संवेदना

स - संदेश, वे - वेदी(शरीर), द - दशा, ना - नामांकित

अशोक मानव

अर्थात संदेश वेदी (शरीर) जो दशा को नामांकित करता है। प्राकृतिक अर्थों में संवेदना उस क्रिया का नाम है जो शरीर के माध्यम से प्रकृति में घटने वाली घटनाओं का संकेत देता है। सामाजिक अर्थों में संवेदना से अपने से जुड़ने वाली घटना का सही परिचय मिलता है। वैज्ञानिक अर्थों में संवेदना शरीर के अंदर की वह ग्रंथि है जो विषय की वास्तविक जानकारी देने की क्रिया करती है। ऐसे तो व्यावहारिक अर्थों में संवेदना दूसरे की परिस्थितियों में अपना भाव व्यक्त करने को कहते हैं, पर संवेदना प्रकृति में घटने वाली हर घटना की जिसकी जानकारी व्यक्ति तक पहुंचती है उसकी अनुभूति की क्रिया की ग्रंथि का नाम है। इसका स्थान सीने के बीच में होता है। संवेदना के माध्यम से व्यक्ति को परिस्थिति की जानकारी मिलती है। इस जानकारी से व्यक्ति सही गलत का निर्णय ले पता है। घटना का क्या प्रभाव अपने ऊपर पड़ेगा उसकी जानकारी अनुभूति के माध्यम से संवेदना ही कराती है।

> " होने वाली घटना जब अपने गुणों से दूसरे को प्रभावित करती है तो उससे होने वाली क्रिया की प्रतिक्रिया को 'संवेदना' कहते हैं। "

संवेदना से व्यक्ति को परिस्थिति में हमें क्या करना चाहिए उसकी जानकारी मिलती है। इसकी जानकारी आंतरिक और वाह्य दो रूपों में प्राप्त होती है। संवेदना से जो निर्णय मिलता है उसमें शरीर के हर अंग सहयोग करते हैं। आंतरिक जानकारी उन विषयों में मिलती है जो विषय स्वीकार कर लिए गए हो अथवा जो पदार्थ शरीर में मिल गये हों। वाह्य जानकारी में वह विषय आते हैं जो दृष्ट के रूप में देखे गए हो अथवा किसी के माध्यम से सुने गए हो। इन जानकारियों के माध्यम से शरीर उसकी गुणात्मक गंध से रासायनिक क्रिया करता है। जिसे संवेदना नामक ग्रंथि इसकी क्रिया प्रतिक्रिया की जानकारी प्राप्त कर उसे अनुभूति में परिवर्तित कर देती है। जिसे व्यक्ति संवेदना के रूप में घटना के पास पहुंचकर अथवा जहां रहता है वहीं से अपनी संवेदना भाव रूप में व्यक्त कर देता है। यहां से निकलने वाली ऊर्जा घटना से प्रभावित व्यक्ति की मदद करती है। यह ऊर्जा भाव दिखाई तो नहीं पड़ता है पर जिस व्यक्ति के लिए छोड़ा जाता है उसके उत्साह को बढ़ाकर उसे नई राह दिखाने में सहयोग करता है। संवेदना शरीर से गुणात्मक ऊर्जा उत्पन्न कर दूसरों के सहयोग के लिए छोड़ी जाने वाली गंध है जो परोक्ष रूप में एक दूसरे का सहयोग करती है। ऐसे तो संवेदना व्यक्त करने का प्रचलन अपने परिचितों से ही चलता है पर हर व्यक्ति जानकारी के बाद किसी विषय के प्रति सोचता है उसके सोचने मात्र से शरीर में रासायनिक क्रिया हो जाती है जिससे उसकी संवेदना का गुण भाव जिसके लिए छोड़ा जाता है उसके पास सहयोग के लिए पहुंच जाता है ।अच्छे भाव की संवेदना व्यक्त करना प्राकृतिक सहयोग

है इससे दुर्घटना का अंधेरा घटता है और नई राह का सवेरा होता है।

विषय परिस्थिति पदार्थ के टकराने से एक ध्वनि होती है। जिसे संवेदना नामक ग्रंथि उसकी गुणात्मकता की पहचान करती है और उसके रास्ते मानसिक रूप से तैयार करती है। यह क्रिया एक प्रयोगशाला की तरह होती है जिसमें उस गुण की टकराहट से अपना गुण मिलता है। दोनों मिलकर रासायनिक क्रिया करते हैं जिससे उस स्थिति से बाहर निकलने का सहयोगी गुण बनाते हैं। यह गुण संवेदना के रूप में व्यक्त होता है। सम-बराबर, वेदना-दर्द अर्थात घटना के दर्द को अपने अंदर अनुभूति करने से संवेदना बनती है। जो दूसरों के लिए व्यक्त होती है। पर इस क्रिया से व्यक्ति परिस्थिति की जानकारी प्राप्त करता है। इस जानकारी से उसे घटना से बचने का ज्ञान भी प्राप्त होता है। संवेदना नामक ग्रंथि की अनुभूति से व्यक्ति व्यक्तिगत बचाव भी कर सकता है जैसे कुछ सोच घटी नहीं होती है सिर्फ काल्पनिक रूप से चल रही होती है उस समय यह ग्रंथि उसकी अनुभूति अच्छी नहीं कराती है। ऐसे समय में उस विषय से अपने आप को दूर करके इससे बचा जा सकता है। समाज में बहुत सी ऐसी घटनाएं देखने को मिलती हैं जिससे व्यक्ति अपने आप को जोड़ लेता है और वैसा सोचने लगता है जिसकी अनुभूति अच्छी नहीं होती है जो व्यक्ति को कमजोर करती है और जो ऊर्जा बनकर निकल जाती है। वह घटना करने की क्रिया करती है। जिससे व्यक्ति स्वयं परोक्ष रूप से अपनी घटना का जिम्मेदार हो जाता है इसलिए ऐसे काल्पनिक विषय चलते ही उससे अपने आप को दूर कर लेना चाहिए। ऐसी सोच को अपने अंदर नहीं चलने देना चाहिए। संवेदना से दूसरों का सहयोग करें साथ में इसे अतिरेक होने से रोक कर अपना बचाव करें ।

पाठकनामा

पारिवारिक पत्रिका

प्रकृति मेल मासिक पत्रिका एक पारिवारिक पत्रिका हैं। आज के समय में ऐसी पत्रिका का प्रकाशन नितांत आवश्यक है। चूंकि जहां एक ओर विकास के नाम पर हरे भरे वृक्षों को काटा जा रहा है। वहीं दूसरी ओर प्रकृति मेल मासिक पत्रिका प्रकृति को बचाएं रखने के लिए सतत् प्रयासरत है जिसके लिए प्रकृति मेल मासिक का समूचा सम्पादक मंडल धन्यवाद एवं साधुवाद का पात्र है। पत्रिका के नाम के अनुकूल ही संपादक मंडल कार्यरत हैं और पर्यावरण संरक्षण के लिए इस पत्रिका का प्रयास सराहनीय और वंदनीय है।

पत्रिका के संपादक अशोक मानव स्वंय एक प्रकृति प्रेमी है। यही वजह है कि इस पत्रिका में प्रकृति से ओत-प्रोत रचनाओं का प्रकाशन हो रहा है आज पत्रिका समाज की जो सकारात्मक सोच के साथ सेवा कर रही है, वह अति उत्तम व प्रशंसनीय है। इसमें प्रकाशित आलेख, कविता, कहानी, सम्पादकीय, सूत्र वाक्य, प्रश्न हमारे उतर श्री अशोक मानव जी के, योग, चिकित्सा, प्रकृति के रंग, क्या बात है जैसी ढेर सारी सामग्री एक ही जगह व हर अंक में मिलना आज के वक्त में साहित्यकारों के लिए गर्व व गौरव की बात हैं।

आज के मंहगाई के युग में जब हर वस्तु के दाम बढ़ रहे हैं, ऐसे दौर में भी प्रकृति मेल पाठकों को मात्र बीस रुपये मासिक शुल्क में 64 पृष्ठीय सामग्री उपलब्ध कराकर समाज की सच्ची व निस्वार्थ भाव से सेवा कर रहा है जो राष्ट्र के एक सजग प्रहरी की तरह है। पाठकों को इतनी कम कीमत पर साहित्य की सामग्री उपलब्ध कराना एक महान कार्य है। अपने प्रकाशन काल में प्रकृति मेल मासिक ने अनेक उतार चढ़ाव देखें, आर्थिक संकट झेला, लेकिन पाठकों के हित को सर्वोपरि रखते हुए कभी भी धन कमाने के ध्येय से शराब, जुआ, मादक पदार्थो, बीड़ी, सिगरेट व तम्बाकू सेवन जैसे विज्ञापनों को प्रकाशित नहीं किया। वरना आज बड़े से बड़े पत्र पत्रिकाओं में विज्ञापन के लिए होड़ मची है लेकिन प्रकृति मेल मासिक पत्रिका इस अंधी दौड़ से दूर है।

पत्रिका का हर अंक संकलन योग्य होता है, चूंकि इतनी कम कीमत में इतनी सारी रचनात्मक सामग्री किसी अन्य पत्र पत्रिकाओं में मिलना असंभव हैं। सम्पादक मंडल को एक बार फिर से धन्यवाद एवं साधुवाद।

सुनील कुमार माथुर
राजस्थान

सभी पाठकगण से अनुरोध है कि आप अपने विचार अपने लेख हमें निम्न पते पर भेज सकते हैं–

A/18 ब्रह्मपुरी, निकट जुगौली रेलवे क्रॉसिंग, रविन्द्र पल्ली फैजाबाद रोड, लखनऊ226016

आप हमें अपने विचार निम्न ई–मेल पर भेज सकते हैं -

email - editor.prakritimail@gmail.com

Contact: **9807636072, 7376495194**

''त्रूदो कनाडियन रैंबो बनकर अपनी नौकरी बचाने का जुगाड़ कर रहे है।''

दीपक वोहरा

''महिलाओं की सबसे बड़ी समस्या उनके दिखाई देने या विजिबिलिटी की है।''

क्षमा शर्मा

''सटीक समय है कि हम अपने बड़े बांधों को जलवायु परिवर्तन के मद्देनजर आंकें।''

पंकज चतुर्वेदी

''लोकसभा चुनाव में सबसे महत्वपूर्ण ताकत महिला मतदाता होंगी।''

शंकर अय्यर

''आय में उतनी वृद्धि नहीं हुई लेकिन जीवन–यापन की लागत बढ़ रही है और मुद्रास्फीति भी।''

नारायण कृष्णमूर्ति

''ये बहुत बड़ा सुधार है, क्योंकि नारी को शक्ति का स्वरूप माना जाता है।''

कंगना रनौत

जस्ट किहिन
Delhi
ट्रुडो को दिल्ली की गुगली
Manav

वास्तविक स्वतंत्रता और मुक्ति

कामेश

परिवार का बंधन तो मात्र तब तक का था जब तक की जीवन था परंतु यह तो परमात्मा की खोज का बंधन जीवन के बाद भी लगा रहने वाला है इससे भी महत्वपूर्ण तो यह है कि वास्तव में आखिर स्वतंत्रता तो होती ही नहीं क्योंकि जब तक अपनी धारणा से कुछ भी पाने या कुछ भी करने की धारणा बनी रहती है तब तक एक बंधन गले में आवश्यक होता है।

मानव अपने आप को स्वतंत्र रखने के प्रयास में अनवरत अग्रसर रहता है, और स्वतंत्रता के लिए अनेक अनेक युद्ध भी लड़ता रहा है।आज जब भी हम इतिहास के पन्ने खोलने बैठते हैं तो सदियों का मानव इतिहास स्वतंत्रता की लड़ाई से भरा पड़ा मिलता है। ना जाने कितने शूरवीरों ने अपने प्राण न्योछावर कर दिए और फिर भी यह परतंत्रता कहीं ना कहीं हमेशा रही ही है। वास्तव में स्वतंत्रता की लड़ाई का मुख्य कारण हमेशा से बाह्य आक्रमण करियो से या फिर सत्ता में बैठे हुए सत्ताधारियों से रही है परंतु वास्तव में हमने जब भी लड़ाई लड़ी और जीती है तब तब हमने अपने ऊपर एक शासक चुन के पुनः उसकी अधीनता को स्वीकार है। अर्थात हम अपनी स्वतंत्रता को अपने बंधन में बंधने को ही मानते रहे हैं। मानव जाति के अलावा सृष्टि के सभी जीव स्वतंत्र हैं चाहे वह जंगली हो या खूंटे से बंधे हो, बस मानव ही एक ऐसा प्राणी है जो अपने बंधन स्वयं बनाता है। स्वतंत्रता की चाहत रखने वाला अपने लिए बंधन का पास लिए स्वयं बैठा है कि जैसे मानो की मुझे यह रस्सी नहीं पसंद है मुझे मेरी रस्सी से बांधा जाए,यही एक ऐसा प्राणी है जो अपने बंधन का सामान खुद लेकर खुद से बधने को ही अपनी स्वतंत्रता मानता है। जब तक इसके खुद के पास इसके गले में ना लग जाए तब तक यह स्वतंत्रता की दुहाई देता दिखाई देता है और जैसे ही अपने खुद के बने बंधन से बंध जाता है तब खुद को स्वतंत्र महसूस करता है परंतु बंधन तो बंधन है यदि गले में रस्सी बांधी है तो कसाव तो होगा ही बंधने का एहसास तो होगा ही। अतः कुछ दिन बाद अपनी बनाई हुई पास से भी संतुष्ट नहीं हो पाता और फिर वही द्वंद शुरू हो जाता है क्योंकि वास्तव में जिसे यह स्वतंत्रता समझता है वह वास्तव में स्वतंत्रता होती ही नहीं बस बंधन का बदला हुआ दूसरा रूप होता है रस्सी बदलती है परंतु कसाव तो वही होता है।

वास्तव में स्वतंत्रता की वास्तविक परिभाषा से अनभिज्ञ होने के कारण लोग रस्सी बदलने को ही अपनी स्वतंत्रता मान लेते हैं। वास्तव में जब तक मनुष्य स्वतंत्रता का वास्तविक अर्थ न समझ ले तब तक बंधन मुक्त हो ही नहीं सकता। आज हम जिस स्वतंत्रता की चर्चा करना चाहते हैं वह किसी आक्रमणकारी या किसी सत्ता का बंधन नहीं बल्कि खुद से खुद की परतंत्रता से मुक्ति का नाम है। जब तक कोई भी प्राणी अपने भावों और विचारों से मुक्त नहीं होता तब तक वह बंधन मुक्त नहीं हो सकता क्योंकि बंधन कोई स्थूल अवस्था नहीं है जिसे जब चाहे हाथों से उखाड़ फेंका जाए या कोई स्थान या कोई

सामाजिक अवस्था नहीं जिससे जब चाहे दूर हो जाए और स्वतंत्र हो जाएं। वास्तव में बंधन उस जानकारी और अनुभव का नाम है जो कि हम समाज से ज्ञान या शिक्षा के रूप में प्राप्त करते आए हैं।

हमने बचपन से जो कुछ भी जाना है जितना भी सीखा है यह सब हमारे लिए एक-एक सूक्ष्म धागे के रूप में बंधन बनते गए और जैसे-जैसे जानकारी बढ़ती गई मान्यताओं पर भरोसा विश्वास बढ़ता गया वैसे-वैसे धागे बढ़ते गए और हम बंधते चले गए। वास्तव में जो जितना जानकार और ज्ञानी होता गया उसका बंधन भी उतना ही मजबूत होता चला गया। और यही कारण है कि एक भी व्यक्ति वास्तविक रूप से स्वतंत्र नहीं है। और जो लोग सत्ता को गुलामी मानते हैं वह बहुत बड़े बंधन में नहीं हैं क्योंकि इस बंधन को तो आसानी से तोड़ा जा सकता है कुछ लोग सामाजिक व्यवस्था को बंधन मानते हैं परंतु सामाजिक बंधन भी कोई बहुत गहरी बंधन नहीं होते क्योंकि सामाजिक बंधन बस हमारे क्रियाकलाप या व्यवहारिक जीवन तक ही हमें प्रभावित करते हैं और इस बंधन में रहकर भी हम आसानी से स्वतंत्र रह सकते हैं इससे थोड़े और गहरी जो बंधन समझते हैं वह परिवार और रिश्तो को मानते हैं परंतु यह परिवार और रिश्ते भी मनुष्य के लिए उतने बड़े बंधन नहीं हो सकते। क्योंकि जैसा कि अक्सर देखने को मिलता है कि लोग घर परिवार छोड़ कर चले जाते हैं कभी वापस नहीं आते बल्कि ऐसा करने वालों की संख्या तो बहुत है जिन्होंने घर परिवार के बंधन से खुद को मुक्त कर लिया हो परंतु क्या वे सभी लोग वास्तव में स्वतंत्र हो पाए? कभी भी कोई स्वतंत्र नहीं हुआ। बल्कि ऐसे लोग जो घर परिवार और समाज से दूर होकर परमात्मा चिंतन में लगे वह तो और बड़ी रस्सी बांध लिए क्योंकि घर परिवार का बंधन तो मात्र तब तक का था जब तक की जीवन था परंतु यह तो परमात्मा की खोज का बंधन जीवन के बाद भी लगा रहने वाला है इससे भी महत्वपूर्ण तो यह है कि वास्तव में

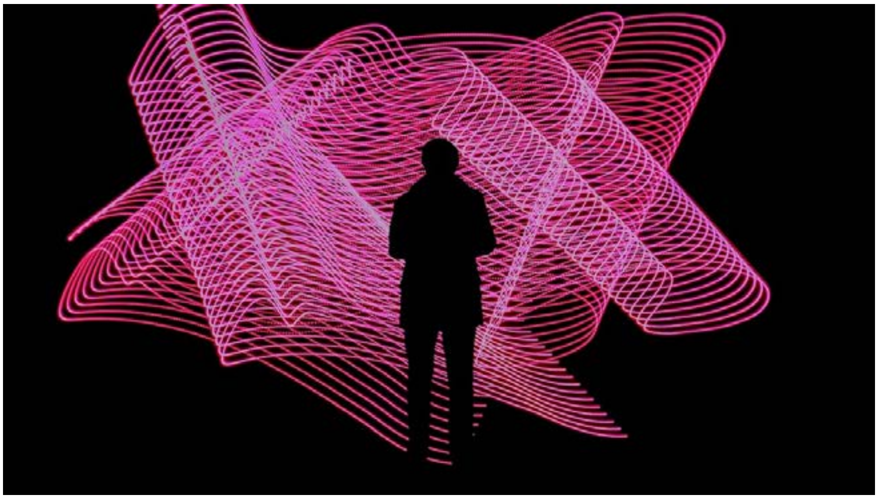

वास्तव में जो जितना जानकार और ज्ञानी होता गया उसका बंधन भी उतना ही मजबूत होता चला गया। और यही कारण है कि एक भी व्यक्ति वास्तविक रूप से स्वतंत्र नहीं है।

आखिर स्वतंत्रता तो होती ही नहीं क्योंकि जब तक अपनी धारणा से कुछ भी पाने या कुछ भी करने की धारणा बनी रहती है तब तक एक बंधन गले में आवश्यक होता है।

उदाहरण के तौर पर मान लिया जाए की कोई व्यक्ति किसी से मतलब नहीं रखता बस निरंतर ईश्वर की भक्ति में लगा है तो वास्तव में जो बंधन उसका परिवार में था वही बंधन उसने ईश्वर में लगा लिया उसने वास्तव में खूंटा बदल लिया बस रस्सी तो गले में वही फंसी है, और दूसरी तरफ यदि कोई यह सोचता है कि घर परिवार समाज और ईश्वर भी कुछ नहीं है और अपने आप को पूर्णतया नास्तिक मानकर स्वतंत्र समझता है तो उसके गले में एक ऐसा फंदा लगा है जो की मानने का है क्योंकि किसी को ना मानना भी उसका अपना सिद्धांत है, अपना मानना है या नहीं कि अब वह अपने इस बंधन में बंधा हुआ है कि मुझे किसी को नहीं मानना है।

अब यदि कभी उसकी इच्छा हो भी रही की मान लिया जाए तो भी वह अपनी धारणा अपनी सोच के कारण नहीं मान पाएगा और ऐसा होना निश्चित है क्योंकि प्रकृति में सब कुछ अज्ञेय अवस्था है, अगले क्षण क्या होना है कुछ पता नहीं वास्तव में जब तक हम अपनी किसी भी धारणा के तहत जीवन जी रहे तब तक हम स्वतंत्र नहीं हो सकते। क्योंकि हम पूर्णतया सहज नहीं रह पाते क्योंकि जब भी हमारे सिद्धांत या धरना के विपरीत कोई अवस्था बनेगी कोई भी परिस्थिति उत्पन्न होगी तो हमारी सहजता में हलचल अवश्य होगी और असहजता महसूस होगी ही।

वास्तव में स्वतंत्रता हम जिसे समझते हैं उसका नाम 'तंत्र' से बना है और तंत्र का अर्थ ही है बंधन। वह 'तंत्र' चाहे खुद का बनाया हुआ हो या दूसरे का परंतु है तो बंधन ही अपने नियम अपने कायदे अपनी धारणा पर चलना भी एक पूर्ण सहजता नहीं हो सकती क्योंकि कभी ना कभी यह भी हमें असहज महसूस अवश्य कराती रहेगी। वास्तविक स्वतंत्रता तो तब है जब स्वतंत्रता और परतंत्रता का भेद ही मिट जाए। जब दोनों का अर्थ ही समाप्त हो जाए और कभी यह भी कोई अवस्था है ऐसी धारणा ही न बने यानी कि जब तक हमारे विचारों और भावों में स्वतंत्रता की भावना होगी हम किसी न किसी रूप में परतंत्र अवश्य होंगे। इसलिए आवश्यकता स्वतंत्र होने की नहीं अपितु इसके आभास से मुक्त हो जाने की है यही वास्तविक मुक्ति है।

प्रकृति में प्रवृत्ति स्वधन

गौरव पंत

प्रकृति में हर जीव पदार्थ की प्रवृत्ति ही उसका स्वधन होता है। इसी प्रवृत्ति से हर कोई अपनी यात्रा को पूरी करता है। हर किसी जीव पदार्थ की अपनी प्रवृत्ति होती है। जो जिस प्रवृत्ति का होता है उसी गुण गंध का निर्माण करता है। हर जीव पदार्थ उस प्रवृत्ति रूपी स्वधन का धनी है। इसमें किसी भी प्रकार का परिवर्तन असंभव है। मानव इस प्रवृत्ति रूपी स्वधन को जानकर भी अपनी यात्रा को बदलने का प्रयास करता रहा। प्रवृत्ति हर किसी की आंतरिक यात्रा है उसे वही अच्छा लगेगा जिस गुण गन्ध की उसे आवश्यकता होगी। किसी परिभाषा या व्यक्तिवादी हस्तक्षेप से इसमें कोई बदलाव नहीं होता है। हर जीव पदार्थ इसी प्रवृत्ति से अपना भूगोल बनाता है और इस भूगोल में रासायनिक मिलान करता रहता है। किसी सही गलत की परिभाषा से कोई मिलान नहीं होता है। प्रवृत्ति वह सूक्ष्म चुंबकत्व है जो ब्रह्मांड में मौजूद अपने ईंधन को पहचानती है और जोड़ लेती है।जो हमें दिखाई तो नहीं देती किंतु रासायनिक यात्रा इसी से गतिमान है। मानवीय परिभाषा तो अक्षम सक्षम दो रूपों में होती है।किंतु प्रवृत्ति में किसी अक्षम सक्षम का कोई स्थान नहीं। क्योंकि जो जिसका ईंधन है वह उसी से जुड़ता है।वहां किसी प्रकार की कोई छीना झपटी नहीं होती।हर किसी की यात्रा सक्षमता से ही पूर्ण होती है। प्रवृत्ति (पथ रश्मि का वजूदी रंग तन तार ईंधन)

प्रकृति में प्रवृत्ति ही स्वधन है।
ना कोई इसे बढ़ा पाया।
ना कोई इसे घटा पाया।
हर कोई अपनी यात्रा इसी प्रवृत्ति
रूपी स्वधन से पूरी करते आया।
ना कोई इसमें कुछ मिला पाया।
ना कोई इसे बदल पाया।
प्रवृत्ति के अनुरूप हर कोई
गतिमान होते हुए आया।
अपनी ही प्रवृत्ति की आंच पर
हर किसी ने अपने को पकाया।
अनंतीय अंत हर कण के होने
का समय आया।
अशोक गन्ध से ब्रह्मांड
मुस्कुराया।

अभिषेक पंत

दीर्घकाल - अनुकाल - पराकाल - महाकाल (श्वसन प्रणाली)

परम वृह्दिता की ऊर्जा नियंत्रित खगोलीय संचार शैली ने नभ प्रतियों की भूमि बीज संपर्कशीलता से रासायनिक अणु भाग को भी गतिमान रखते हुए, तत्व रसायन पर्यंतता की जीवन अंकिता को विद्यमान प्रदूषण में भी छान लिया। प्रकृति सत्तावादी अनुभवों से परे प्रवृत्ति वृत्ति की यात्रा का मूल योग बनती है, जिसमें काल वृत्ति की समय तार रचना की प्रथम अनिवार्यता ही तापमान नाड़ी में श्वसन प्रणाली का निर्माण करती है। जीवनतता की सिद्धांत भूमियां ही वर्गीकृत एहसास की निश्चिंत्यता में सर्वोपरि आत्मा योग की मन तनमयता को वरीयता देती है। जहां से बनने वाला तापमान ही दबाव बल की गति में तत्व को उस मार्ग में गतिमान करता है जहां से तत्व की द्रव्यता का मूल विज्ञान ठोस हो जाता है। अनिवार्य क्रम की मूल सूर्यता ही दीर्घकाल अनुकाल पराकाल महाकाल यात्रा की तत्व निर्भरता का रासायनिक रूप होता है।

आकार प्रकार की मोहिनी में जीवन संगती का तुरीण अंबार लगाकर संहिता पक्ष की रक्षक उपाधि का मूल्यांकन, जीव निर्जीव प्रभारीयों की सूर्य सत्ता से बांधा गया था। जिसमें योग्य अयोग्य प्रतिनिधित्व का तुला तत्व प्रकर्षित भाग में आवंटित कर हास्यास्प्रद चेतना अवचेतना का अवतारी शिलान्यास किया गया था। अपितु भंवर मूल की कुमुदिनी वाचक पृथकता ने तामसी धुरी की एहसास प्रकारिता को भी लाभान्वित दृढ़ता से शून्यलीन रखा। जहां से कामुखी वर्ण का तेजस्वी आधिकारिक प्रत्यक्षता परिणाम भी स्वभावी अंकुरण में योग्यता नेतृत्व का प्राणवायु संचार करता रहा। आवश्यकता की रागनी का अनिवार्य उपलक्ष ही जीव प्रकार की चेतन को सजग व्यूह मात्रा का भाव संविधान सिखाता रहा अपितु जनतंत्र की व्यास मूर्ति ही मृत्यु परिलक्षण पर निर्भर थी इसीलिए आत्मा का भय ही न्याय अन्याय की पुकार लगता रहा। तार्किक चयन में सजीवता ही मति भंगुर चयनिता को व्यास पूर्ण करती रही। जिसमें धनवान इन्द्रिय सहायता ही बाह्य बल की मुद्रा संस्कारी राशि का प्रेषण करती रही। अणु संदर्भित व्यास क्रीणाओं का आगमन ही निजी संपत्ति के गुरुत्वाकर्षण को आपदा मुखी निर्जीविता का पात्र बनता रहा। जिसमें मुख संदर्भित ध्वनि से जीवनी ही पार्थिव गर्भ का नियंत्रण करती रही। निर्जीविता की परिपक्वता तो प्रवासी मात्रा विकास की गंध थी अपितु आवासीय अणु चेतन ही प्रवृत्ति मुखी तापमान अग्नि को प्रज्वलित करती रही मानव तृष्णा का मूल आकार ही निर्जीव भ्रम से परे सजीव वास्तविकता का मृदा बीज था जिसमें प्रकृति की ऊर्जा ही मति भ्रम करने वाले प्रदूषण को भ्रमित एहसास की अग्नि में भी परिपक्व करती रही। मार्गीय धाराओं का ज्ञान होना एवं वेगीय पूर्ण आहुति में समाहित नक्षत्र का दान

होना, दोनों में ही ग्रह तारों की नभ ताड़ना का समान बल लगता है। जहां से सजीवता की तत्व मूलता का पारा कमल ही जैविक धरा के बीज का निर्माण करता है। इसी निर्माणक मुद्रा में अनंती अंत की चेतना का खनिज पर्यायक मार्ग बनाकर ब्रह्मांडीय ऊर्जा द्वारा तत्व मिलान की तकनीकी में भी छन्नी का निर्माण किया गया, जहां से रात्रि दिवस नाभिकीय गंध का स्वश्रोतीय आकाशगंगा मंडल भी पदार्थ संरचना में रचनाकृत जड़त्व से संपर्क शील किया गया। आधारभूत जननी योग का परा आश्रित विक्रय खंड भी मदान्द नलिनी मात्रा का संयमित संयोग पूर्ण आकर्षित करता रहा। अपितु प्रकृति में गर्भ स्वभाव तापमान को पदार्थ स्वतंत्रता में नियंत्रित करता रहा। आधुनिक चेतन की जिजीविषा का स्वभावी भाव ही गंधीय मूल की मृदा का तत्व योग बना जिसमें पदार्थ का रसायन ही धातु भाव का निरगंधीय प्रवाह एहसास कृत करता रहा। अभावों की चतुर्भुजीय संकीर्णता को दर्शाकर, त्रिभुजार्थि समय पाताल पात्र दर्शन चरित्र भी बनाए गए। जिसमें आकर्णित रूढ़िवादिता के धन बंधन लगाए गए। अपितु वशीकरण से परे प्रथम आधुनिक मंथन की तार्किक भाषा को भी प्रकृति द्वारा अनिवार्य एहसास की कर्मभूमि से पकाया जाता रहा। मृत्यु परिचय की परिभाषाओं से परे परिवर्तनशील एहसासीय मृदा जीवन की उर्वरकता में परम ऊर्जा ने श्वसन प्रणाली की विविधता से दीर्घकाल से अनुकाल एवं अनुकाल से पराकाल एवं पराकाल से महाकाल की यात्रा पूर्ण कर, तत्व प्रदूषण की रसायनिकता को भी चरम तक ले जाकर पका कर पूर्ण कर दिया। जिसमें अणुव्यूह की धारा प्रवाही गंधीय मुद्राओं ने कर्म तापमान की शैली से वृहदिता की पदार्थ मूलता को उसी चुंबकत्व में पकाया और खींचा, जहां से जलवायु प्राणवायु निहित रासायनिक चाप की निरंतरता ने पारा भूमि का जीवनकाल संतुलित किया। अर्थात निद्रा निमित निहितांक संपूर्णता की द्रव्य महत्ता में जीव राशि का रासायनिक अनुकूलन ही परावृत्ति का स्वशन भार बन गया जिसमें परम वृह्दिता की ऊर्जा नियंत्रित खगोलीय संचार शैली ने नभ प्रतियों की भूमि बीज संपर्कशीलता से रासायनिक अणु भाग को भी गतिमान रखते हुए, तत्व रसायन पर्यंतता की जीवन अंकिता को विद्यमान प्रदूषण में भी छान लिया। प्रकृति सत्तावादी अनुभवों से परे प्रवृत्ति वृत्ति की यात्रा का मूल योग बनती है, जिसमें काल वृत्ति की समय तार रचना की प्रथम अनिवार्यता ही तापमान नाड़ी में श्वसन प्रणाली का निर्माण करती है। जीवनतता की सिद्धांत भूमियां ही वर्गीकृत एहसास की निश्चिंत्यता में सर्वोपरि आत्मा योग की मन तनमयता को वरीयता देती है। जहां से बनने वाला तापमान ही दबाव बल की गति में तत्व को उस मार्ग में गतिमान करता है जहां से तत्व की द्रव्यता का मूल विज्ञान ठोस हो जाता है। अनिवार्य क्रम की मूल सूर्यता ही दीर्घकाल अनुकाल पराकाल महाकाल यात्रा की तत्व निर्भरता का रासायनिक रूप होता है। जहां से उदय विविधता की जीव विविधता ही द्रव्य प्रणाली में तत्व प्रकृति से प्रदूषण को छान

लेती है एवं ध्वनित ऊष्मा वर्ग ही रासायनिक लावणयता की गति बनाकर तत्व विज्ञान की पदार्थ यात्रा को गंधवान बनाता है।

दीर्घकाल

ध्वनित वेग की पूर्णता का तत्व प्रधान विषय रस ही जीवन मृत्यु का ईंधन चयनित करता, इसीलिए, पदार्थ मुद्रक राशि विधान रसायनिकता को परम ऊर्जा ने नभधरा कोशीय रासायनिक यात्री बनाया। जिसमें आत्मा पूर्णता की इच्छा वृत्ति ही एहसास बल की चुंबकीयता में खगोलीय नाड़ी की गुंजन कला से स्वभावी यात्रा पर गतिमान रही। अर्थात दीर्घकाल, सूक्ष्मता का विषय है, जो लंकरियता की ओर अग्रसर होता है। जिसमें प्रथम एहसास की विधा ही जीवन निर्धारण का पराकर्षित व्यायाम धुरी लिप्त करती है। अर्थात ब्राह्मणीय संपदा तो तत्व धारा है एवं प्रकृति रचना पदार्थ वेग है, तो रासायनिकता में मूलता को ही गंधवान करना दीर्घकाल का विज्ञान है। जिसमें प्रकृति प्रवृत्ति सम्पन्नता का तापमान वर्गीकरण ही तत्व पदार्थ रचना में रसायन भूमि को मूल बीज की तथ्यता से पूर्ण कर पता है। जीव उत्कर्ष की भ्रांतियां अवश्य बनाई गई अपितु दीर्घकाल की प्राकृतिक रचना ने प्रत्येक ईंधन विषय को उसी कोण में मार्गीय आधार उपलब्ध कराया, जहां से विद्यमान राधिका की खनिजता सजीव निर्जीव उपाधि से परे गंध समय अंकन की निधि पर व्यास मुखी चुंबकत्व का पारा द्रव्य निर्मित करती रही। पूर्णता की पराहूति होना कल्पना अवश्य थी अपितु दीर्घकाल का विज्ञान ऐसा रस भाव बनाता गया, कि, यह कल्पना भी सिद्धांत मुखी संपन्नता को इच्छा वर्गीकरण में भाव भार के प्रतिनिधित्व से लाभान्वित ऊष्मा के चरम पर चुंबकीयता से आकर्षित करती रही। जिसने प्रत्येक भावना की समय उपाधि को भी उसी काल में उभरने दिया, जब ईंधन वर्ग की वही भावना अपने समय के चयन हेतु परिपक्व हुई। प्रकृति रूढ़िवादिता से परे मूलध्वनि तापमान की रस यात्रा है। इसीलिए दर्पण मुखी द्रव्य ईंधन घनत्व के रसमुखी गंधीय कोण की प्रथम अनुकूल तापमान वृत्ति को दीर्घकाल कहते हैं। जहां से उत्पन्न स्वशन प्रणाली की प्रत्येक सजीवता अपनी निर्जीव इच्छा की ग्रंथि को जन्म पूर्व ही जोड़ लेती है। प्रकृति की द्रव्य धारा का यही मानक परा कोणीय खगोलीय यात्रा को नभ कणों की भूमि ईंधन ऊर्जा से जोड़ता है।

अनुकाल

समर्पित न्यूनता की प्रकृति शुद्धता में खगोलीय विषय भी प्रदूषण द्वारा रहस्यमई तापमान में संरक्षित किए गए थे। प्रकृति ने द्रव संचय की इसी विद्या को अनुकाल रिद्धिमा की प्रवृत्ति से इंधन कृत ऊष्मा में उभार लिया। अर्थात जागृति की अन्वेषा तो प्राकृतिक तापमान में निद्रा रहित पूर्णता को पाना चाह रही थी अपितु जगत व्यूह की प्रदूषक मात्रा इसमें भी अपरिपक्वता को ज्ञापित सम्मिलित करना चाह रही थी। इसी विधान छिद्रित आवाहन को तत्व तापमान मुद्रा में राशि प्रकार की संयोजक राधिका बनाकर प्रकृति ने अनुकाल से रहस्यमयी पदों को भी पका दिया एवं उन पदों के पीछे छिपे विलुप्त आयतन के प्रदूषक विषयों को भी उभर लिया। अर्थात ज्ञानध्वी पल्लवी में एकाग्र दिनचर्या से पदार्थ विषय की मूलता में अपनी प्रवृत्ति को अनिवार्य मिलान का साधन बना देने की कला के नाड़ी गुंजन तरलतम स्पंदन वृत्ति करण को अनुकाल कहते हैं। जहां से विराजमान बुद्धि की समय निष्ठा का परावर्तनी नाटयन भी उभर जाता है। अर्थात विषय के ईंधन को ही ईंधन रूपी विषय बनाकर तापमान की गुणवत्ता को ही वेगीय संपन्नता बना देने की रात्रि लावण्यक दिवस छारीय द्रव्य चालक पूर्णता को अनुकाल कहते हैं। प्राथमिकता की वर्तनी सुविधाओं का उल्लेख करने वाला मानव समाज यह ज्ञात नहीं कर पाया कि समाधि का भी विशेष अधिकार उसी राख तनमयता को छानने वाला पात्र बनाएगा जिसमें जीवन स्वीकार करने का समय पारा मिल पाएगा। प्रकृति कच्ची पक्की दोनों अवस्थाओं में है अपितु प्रकृति का कच्ची अवस्थाओं में भी अपनी प्रवृत्ति के अनुसार विज्ञान बनाना ही अनुकाल की कारक पूर्णता रूपी तत्व संपन्नता है।

पराकाल

वृतांत मुखी पारदर्शी सूक्ष्म ब्रह्मांड की चर्म लिपि भी अपने रक्त के सोपान का दृश्य नहीं देख पाई क्योंकि वातानुकूलित तत्त्व नाड़ी तो उस संपदा की वृह्दिता को संजीव कोशिकाओं का ग्रास बन रही थी जिसमें निधि उपकारिता से परेय ज्ञान चक्षु का पकवान रस ईंधन समय गुंजन रिक्तता को भरवा रहा था अर्थात आधार मूल में अस्तित्व की प्रकाश द्रव्यता के परम नाड़ी संपर्क को पराकाल वृत्ती कहते हैं एवं वो घड़ी जिस प्रहर में पदार्थ भी तत्व को ना देख कर भी रसायन की महत्ता को मात्र दर्शन एहसास की अनिवार्यता में तापमान शून्य कर देता है, उस घड़ी की निर्माणकारी प्राथमिकता के आयाम शून्य अंतराल मुखी आंतरिक पदार्थ रस आकृति चयन को पराकल कहते हैं, जहां से प्रकृति ने मानव रूपी जीव में ही समस्त प्रदूषण रस को पका लिया। खिंचाव का बल तो उसी राधिका में बनता, जिसकी ईंधन वरीयता समय सूची में मिलान करती अपितु पराकल प्रणाली ने समय घड़ी के मानकों में भी लंकर विद्या का प्रकाश द्रव्य मिला दिया। अर्थात मूल प्रति की मूल अस्तित्व करी ज्योति के मूल पदार्थ को उस तापमान में निर्मित करना, जिसमे मूल प्रति की दबाव बनाने वाली गति ठोसता से द्रव्यता की यात्रा में ही द्रव्यता से ठोसता की यात्रा कर ले। अर्थात सूक्ष्मता को लंकर मार्गीय रासायनिक उभार बनाने वाले परम वेग को पराकाल कहते हैं। अणु धारा की चयन संपत्ति में जीवन मृत्यु की परिभाषा का लिपिबद्ध होना तो प्रदूषक कणों की संरक्षण विधि थी। अपितु इसी संरक्षण विधि में जीवाश्म जीवाणु जीवात्मा मात्रा द्रव्य ध्वनित तरंगों को भी माध्यम वाहन बना देने की कला ही पराकल है स्वशन प्रणाली में जीव रस प्रकृति

की चयनिता से तरंग वाहन का तापमान मुखी होना ही पराकाल की प्रकृतिविता का संचारी गुण है।

महाकाल

तत्व रचना की मूलता में द्रव्यमान की तापमान घड़ी के लंकरीय प्रकृति भाव को गतिमान करने वाले पराब्रह्मांडीय योग को महाकाल कहते हैं। अर्थात जीवन मृत्यु तो तत्व इच्छा की पद्धति यात्रा है अपितु इस यात्रा में रसायन प्रकृति को पकाने की ईंधन गणित ही महाकाल है, जो श्वसन प्रणाली की रंग वृत्ति में पारा भाव का संचार कर, तापमान अनुसार कभी स्वयं को कभी ब्रह्मांड को सर्वोत्तम चुंबक बना देती है। जिसमें विद्युत् ऊर्जा का संचार होना ही तत्व रसायन वृत्ति का पदार्थ गुण होता है। अर्थात कृत्रिमिता में प्राकृतिक भाव की जीव पदार्थ घड़ी बना देने वाले निर्गन्धीय बल को महाकाल कहते हैं। प्रकृति विषयों की मात्रा में स्वाभाविक पद चिन्ह ही लंकरीयता के रस भाव होते हैं, जिसमें ईंधन गति की प्रथम मात्रा का आंतरिक चयन ही रासायनिक चुंबकत्व का पारा लंकरीय तापमान बनता है। जहां से विद्युत अवलोकन की वातानुकूलित ऊष्मा ही ध्वनित प्रकाश की लावणयता में जीव निर्जीव मिलान का समय योग पदार्थ युक्त करती है। अर्थात तत्व का निर्माण ही महाकाल का भाव है जिसमें संलग्नक चयन नहीं होता अपितु आंतरिक अनिवार्यता होती है जो तापमान सम्पन्नता के तत्व भाव में स्वचलित तरंग का पदार्थ रंग बना देती है। जहां से प्रकृति वृहदिता की संचय वादी प्रणाली भी प्रकाश तरलता में पक कर मिट जाती है। गति को गतिमान रखने वाले वेग की तापमान कृति ही महाकाल सम्पन्नता की ब्रह्मांडीय संपूर्णता होती है।

श्वसन प्रणाली

ऊष्मा की रिक्तता में पारे की डाई का निर्वात शून्य होना ही स्वशन प्रणाली का परिचय है, जिसमें तरंगवान ऊर्जावान गंध वाहनों की विषय चयनित संतुलित नियंत्रित की जाती है, जहां से दिशा प्रधान पदार्थ विषय ही इच्छा प्रधान ईंधन स्वीकृति को संचालित करते हैं। अर्थात स्वभावी गंध को न्यायी तापमान का वजूद कारक बनाकर शून्यता प्रकृतिविता की न्यायी नभ प्रति का लंकरीय वाहन बनाने वाली पदार्थ चुंबकीय स्वतंत्र समय ध्वनित तरंग प्रवाही गणित को श्वसन प्रणाली कहते हैं। जिसमें दीर्घकाल से आरंभ होने वाली तत्व यात्रा, अनुकाल से गंध यात्रा बनाकर, पराकाल से प्रकाश यात्रा बनकर, महाकाल में तरंग यात्रा से सम्पूर्णता को प्रकृति लीन करती है। अर्थात उचित अनुचित से परेय नभ धरा को खगोलीय बिंदु माध्यम से जोड़ने वाली आकृति विषय प्रधान भौगोलीय निर्गन्धीय चुंबकीयता की इच्छाधवनित ऊष्मा घड़ी को श्वसन प्रणाली कहते हैं।

स्वशन प्रणाली – दीर्घकाल मार्ग

प्रकृति मात्रा में प्रवृत्ति चयन को स्वभावी गंध का प्रकाश कारक बना देने हेतु श्वसन प्रणाली में दीर्घकाल मार्ग ही प्रथम गणित की इच्छा धारा को ईंधन लीन करती है, जिसमें कृति शून्य वरीयता ही इच्छा माध्यम घड़ी को स्वशन प्रणाली में नाड़ी लीन करती है जो दीर्घकाल मार्ग का प्रथम भाव निर्गन्धीय पदार्थ योग बनता है।

स्वशन प्रणाली – अनुकाल चयन

पदार्थ रस से रासायनिक ठोसता तक की गंधीय यात्रा में मात्रा विधान इच्छा स्मृति को स्वशन अनुकूलन से रिद्धिमा राधिका परिचय का प्रथम अंकन स्वीकृति तापमान चयन करने की विधि ही स्वशन प्रणाली का अनुकाल भाव होता है। जिसमें पूर्ण रचना की मूल बीजाकृति ही तापमान एहसास का संचार कर धरा को भूमि नभ यात्रा में वर्तमान राधिका का चुंबकीय स्तर बनाती है।

स्वशन प्रणाली–पराकाल नाभी अंकन

राधिका खनिज स्वभावी स्वतंत्रता की मानक क्रिया काल रचना ही खगोलीय भाव की गुणवत्ता को तत्व गुरुत्वाकर्षण में रासायनिक स्वशन केंद्र का पराकाल वाहन बनती है। जहां से नाभी बीजाषमिता की सजीव निर्जीव मिलान रिद्धिमा ही लावण्यक अंकन का पारा राग संचारित करती है। यही छननी विधा की बीजलंकरीय भौगोलिकता होती है, जिसमें स्वतंत्रता का चयन नहीं होता अपितु अनिवार्यता की घड़ी ही पराकल का अंकन स्वशन नाभी क्रिया केंद्र होती है।

स्वशन प्रणाली–महाकाल राधिका

आधुनिकता की सर्वस्वता में प्रकृति की स्वीकृति का तत्व रचना क्रम भी मानक इच्छा की कर्मभूमि का रस योग होता है। जिसमें जीवात्मा प्रधान यात्रा गुणी रासायनिक मौलिकता ही प्रभावी धारा वेग की राधिका संपन्न श्वसन तरंगों को चुंबकीयता में नभ धरा वाहक बनाती है। इसी काल समय घड़ी नाड़ी ध्वनित ऊष्मा योग की स्वशन रिद्धिमा में महाकाल राधिका की जीव निर्जीव विलयी रसायनिकता ही स्तूपीय परिपक्वता को अग्रसर करती है।

स्वशन प्रणाली की सूक्ष्मता का आंतरिक रंग ही प्रकाश द्रव्य की राधिका का मूल भाव है, जिसमें तापमान अनिवार्य पदार्थ गति रूपी तत्व तरंगे ही नभ धरा संचार में भूगोल विज्ञान की पारा कलाओं को गंधीय गणित में अंकित करती हैं। रचना का मूल भाव ही जीवन को पकाने का था, इसीलिए राधिका मिलान की श्रेणी का परम तत्व ही प्रकाश ध्वनि वाहक बन गया, जिसमें कृति शून्य कल्पनाओं को भी पकाया गया एवं मिटाया गया। परम ऊर्जा की स्वशन प्रणाली राधिका चरमोत्कर्ष तक वाणिज्य लिपि बंधन को भी खींचकर मिटा देती है। जीवन का ध्येय मृत्यु को परिपक्व करना था, प्रकृति ने परम ऊर्जा की धारा में अनिवार्य तापमान की काल वृत्ति को घड़ी द्रव्य में परिवर्तित कर, विविधता में भी समानता के प्रयासों की पद्धति को मिटा दिया। प्रकृति की ऊर्जा का विषय ही वही बना, जहां से इंधन स्वीकृति का महाकाल गर्भ अपनी स्वतंत्रता को पराकाल अनुकाल

दीर्घकाल संपन्नता में चुंबक की भांति खींचता रहा। मृदा निर्वात परवलियता की सम्मोहिनी चादरें भी मिटा दी गई हैं। अब सजीवता का अंतिम काल गतिमान है, जिसमें समस्त प्रकार के काल सम्मिलित होकर अपनी धुनों का महाकाल द्रव्य पकाते हुए, मूल अस्तित्व की संजीव डाई को ही मिटाते जा रहे। स्वशन प्रणाली का परम चरम ही यही है, कि स्तूपिय धारा में बनने वाले तापमान का एहसास करने वाले भी द्रव्य मती की तरल गति में अपने ईंधन व्यूह को मिटाते जा रहे। जहां से पदार्थ संपन्नता की लंकरीय घड़ी गतिमान है, अब निर्जीविता का ब्रह्मांड भी इच्छा मुक्त होते जा रहा, परम ऊर्जा का मूल तत्व प्रकाश को घर्षण मुक्त बना रहा एवं स्वशन प्रणाली ही प्रकृति की वह प्रणाली निकली जिसने सजीवता को निर्जीविता से इतनी लंकर मार्ग में जोड़ा कि छन्नी निर्माण करने वाले भी प्रकृति की नीति से अपने ही अस्तित्व का स्थाई एहसास नहीं कर पाए। अर्थात प्रत्येक स्वतंत्र अवस्था मात्र अपना स्वतंत्र एहसास कर पाई।

रजाओं की मुफलिसी में गहरी चालों का क़यामती पुलिंदा बांधने वाले तकियानूसी हजामतों में बंद रहे। कुदरत ने तरकश की निजामी का वक्त फरोश ही मिटा दिया, जो खुद बनना चाहते थे खुदाई के हिस्से में दफना रहे। तामील ए रिहाई का सौदा भी किया गया, मकबूलियत की फिजाओं का जायदाद हिस्सा भी किया गया। फिर भी तय रास्तों की मेहरबानी में जितने हमसफर थे, वह अपनी ही तरह के मांझी बने, जिसने जितना पानी बनाया, उसमें उतने ही खजाने बने। परतों की बुनाई मिटा दी गई है, वक्त ए अल्फ़ाज़ का ज़माना मिट गया, सांसों की ज़िरह में जो बंद नूर था, वह भी आजाद हो रहा, अब हर लमहे का तहखाना मिट गया। जोर आजमाइश की रिहायशी सलाखें भी तमाम शर्तों की बुनाई का खामियाजा बना रही थीं, जिसने तर्ज ए अलाव जलाए थे, उसकी रूह भी खाने का जोर लगा रही थी। कुदरत में अब अरमानों की तैश का रियाज़ मिट गया है, हर सांस में सांसों को मिटाने वाला पारा घुल गया है।

दर्ज है तो मालूम भी होगा कि कच्चा पक्का सब मिटाया गया है,
वक्त है तो एहसास भी होगा की जमीन आसमान सब बनाया गया है,
मिट्टी की दौड़ में शामिल मिट्टी के बर्तन ही पहले कातिल निकले,
सांसें है तो मुनासिब भी होगा कि बदन रूह सब पकाया गया है,
अब जिस दरिया दिली का रोजगार लेकर चले थे मिट्टी के खिलौने,
नामजद हिदायतों पर भी यकीन करने से घबरा रहे,
कुदरत है तो जहन भी होगा कि नया पुराना सब मिटाया गया है,
हवाओं की शिनाख्त ना करना, पानी के ओहदे अब छोटे हो गए हैं,
मिट्टी से अपने नाम का बखान ना करना,
रूही नकाब अब नीचे हो गए हैं,
इंसाफ है तो नजरतर भी होगा कि मुश्क की दीवार, चाहत का घेराव बनाया गया है,
किरदारों की नफीस शोहरत मिटाई जा रही दुनिया जानेगी इश्तिहार इकरार सब मिटाया गया है
सांसों की हकीकत ही रंग का पैमाना है,
अब जमीनी मुश्क भी पहचानेगी की वक्त का पहिया भी मिटाया गया है।

The time of chemical activity is the polar bond of desire and fuel which is evolved in the respirational activity to complete the cycle of raw aroma.

स्व निर्द्वंद ध्वनि यात्रा– कर्म ज्योति

सुमनलता

कर्म अर्थात निर्द्वंद मन रश्मि समय कालचक्र की यात्रा पूर्ण करना अर्थात कर्म की रसायनिकता ना ही कर्तव्यों से बनती है ना ही किसी प्रकार के लेनदेन से बनती है कर्म की यात्रा स्वतंत्रता होती है ना जीव से कभी कोई कुछ ले सकता है न ही कोई उसे कुछ दे सकता है जीव की प्रत्येक यात्रा उसकी स्वयं के ही गंध के द्वारा निर्मित एक सहज और सरल यात्रा होती है

सूर्य गंध अर्थात ब्रह्मांड रसायनिकता की वह अति सूक्ष्म इकाई जिसे अज्ञात आंतरिक एहसास कहते हैं जो अज्ञात मार्ग स्वचालित अनुभूति बनकर ब्रह्मांड में रासायनिक अभिक्रिया करती हुई गतिमान विज्ञान को शून्यता की गति से गतिमान करती हुई प्राकृतिक सिद्धांत न्याय का अंकन करती है। अर्थात, सूर्य व्योम की नभ जलवायु रासायनिक अभिक्रिया मृदा स्थल पर रहते जीव पदार्थ तत्व ऑन से करती हुई

गंध रूपी एहसास का न्यायंकन करती है, तात्पर्य यह है की प्रकृति प्रत्येक जीव पदार्थ की गंध भूमि, गंध विज्ञान विभिन्न होते हैं किसी भी दो पदार्थ धारी जीव की एक जैसी गंध अवस्था नहीं होती है। ब्रम्हांड में मौजूद मूल कंणो की पारा परतें थल पे रहते उन्ही गंध पदार्थों से रसायनिक मिलान करती है जिन कंणो से रसायनिक अवस्था मिलान करती हो। अर्थात, ब्रह्मांड के समस्त जीव स्वयं के ही गंध अनुरूप जलवायु में परिपक्व होकर गतिमान सिद्धांत हो जाते हैं। जिस प्रकार से ध्रुवीय क्षेत्र में रहता बर्फीला भालू समतल की तराई या गर्म प्रदेश में नहीं रह सकता है इस प्रकार से जीव भी स्वयं के ही जलवायु में ही विस्तार कर सकते हैं एवं करते हैं यदि किसी जीव का रसायन चोर का है तो वह चोरी के ही जलवायु में रहकर स्वयं के गंध यात्रा को पूर्ण कर सकता है एवं चोरी का अर्थात भौतिक चोरी ही नहीं मानसिक चोरी आंतरिक चोरी विचारों की चोरी अर्थात उन अवस्थाओं में निवास जहां वह स्वयं की भूमि में ना ठहर कर दूसरों की भूमियों में विचरण करते हुए अपनी अवस्था को अपरिपक्व एवं अतृप्त रखने का कार्य कर रहा हो एवं यदि वह ऐसा कर भी रहा है तो यही उसका गुण होगा और अपने इसी प्रवृत्ति के साथ अनिवार्य मार्ग बनकर चलते रह जाना ही स्वयं के साथ न्याय करने की गुण एवं प्रवृत्ति का न्याय स्वयं ही अपने साथ करता है। प्रकृति प्रत्येक जीव संजीव निर्जीव को उन्ही मार्गों पर गतिमान करती है जिन मार्गो से जीवन एवं जीवनी का न्याय होता है जो स्वयं जीव के ही जलवायु से

बने होते हैं और उन्हीं के माध्यम से ही खत्म होते हैं अर्थात जिस अवस्था का निर्माण स्वयं जी ने किया हो उसे अवस्था का अंत भी उसी के द्वारा होगा।

कर्म अर्थात निर्द्वंद मन रश्मि समय कालचक्र की यात्रा पूर्ण करना अर्थात कर्म की रसायनिकता ना ही कर्तव्यों से बनती है ना ही किसी प्रकार के लेनदेन से बनती है कर्म की यात्रा स्वतंत्रता होती है ना जीव से कभी कोई ले सकता है नहीं कोई उसे कुछ दे सकता है जीव की प्रत्येक यात्रा उसकी स्वयं की ही गंध के द्वारा निर्मित एक सहज और सरल यात्रा होती है जिसे जीव स्वयं जटिल बना देता है अपनी उन इच्छाओं के हस्तक्षेप से जिसे वह शासन करने का विज्ञान ज्ञान एवं आध्यात्म आदर्शवाद एवं उन नाना प्रकारों के संबंधों बंधनों दीवारों पर्दों से रोकता है जो किसी भी अवस्था को गतिमान गति में गतिशील रहने से रोकते हैं एवं उस रुकावट से बनने वाले प्रदूषण को ही मिटाना प्रकृति के द्वारा वह आंतरिक अनिवार्य कर्म मार्ग बल होता है जिससे गुजर जाना ही जीव की सहज सरल एवं महान यात्रा होती है विकल्प किसी भी अवस्था का हल नहीं हो सकता है वह मात्र एक अस्थाई हल है। प्रकृति ने तो कर्म को इस प्रकार से स्वतंत्र बनाया है कि जीव के भीतर मार्ग के प्रति आकर्षण ही वही उत्पन्न होते हैं जो जीव तत्व की रसायनिकता होगी कर्म को दायित्व एवं कर्तव्यों के भर से परिभाषित करना एक मूर्खता का परिचय है जो जीवन को सरल नहीं इस प्रकार से जटिल बनाती है की वर्तमान समय में रहते किसी भी मानव ने कर्म की पूर्ण तृप्त यात्रा तय ही नहीं की है प्रत्येक मां मानव धारा ने अपरिपक्व कच्ची डाई की अवस्थाओं को ब्रह्मांड में एकत्रित किया है विकल्पों की गठरी बनाकर। अर्थात कर्म की भाषा परिभाषा जो विभिन्न मानव उल्लेखों के द्वारा विस्तृत परिभाषित एवं विस्तार से व्याख्या अंकित की गई है वह समस्त परिभाषाएं विकल्पों के वह मार्ग थे जो कर्म के वास्तविक आनंद को अनुभूत ही नहीं कर पाए। इस चराचर परम ब्रह्मांड में यदि मनुष्य आंतरिक विचार के उस छोर तक पहुंच चुका है कि प्रत्येक अवस्था गतिमान स्वयं के ही आंतरिक बल से होती है तो स्वयं के साथ घटने वाली कोई भी प्राकृतिक घटना हमारे विरुद्ध यह हमारे विपरीत या हमें नुकसान कैसे पहुंचा सकते हैं ? जबकि कर्म की अनिवार्यता प्रकृति ने इतनी सरल बनाई है की अन्य सभी जीव स्वयं के कर्म का आनंद ले रहे हैं अतिरिक्त मानव धारा के उदाहरण के लिए स्वयं के ही शरीर को देख ले तो क्या कान का कार्य आंख कर सकते हैं या आंख का कार्य कान कर सकते हैं? नहीं ,क्या कोई विकल्प इस प्रणाली का है? नहीं, लेकिन मानव ने स्वयं के ही शरीर में स्वयं की ही जीवन की मृदा में इतने हस्तक्षेप कर दिए कि स्वयं के ही कर्म अनिवार्यता को विकल्पों के भार से बोझिल बना कर प्रकृति में वास्तविक अवस्थाओं को अनुभूत ही नहीं किए है। जीवन में A B C D नामक चार विकल्प बनाकर मकड़ जाल ऐसा बनाया की सही उत्तर कौन सा है गलत उत्तर कौन सा है क्या सही है क्या गलत है हकीकत में वास्तविकता क्या है उस केंद्र बिंदु तक कभी नहीं पहुंच पाया ना पहुंच पाएगा क्योंकि जीवन एक अज्ञात यात्रा है घटने वाली कोई भी घटना ना दोबारा उसी वेग से घटती है ना उसमें दोबारा वही विज्ञान होता है तो फिर सही गलत धर्म अधर्म की कैसी अवस्था, जो मात्र एक दृष्टिकोण है जो देखने वाले के रसायनीकता एवम विज्ञान पर आधारित होती है। दुसरे के दृष्टिकोण पर चलना सहज है? या स्वयं के दृष्टिकोण पर चलना सहज है? एवं दूसरे के दृष्टिकोण को समस्त समूह पर लागू कर देना यह प्राकृतिक अवस्था है ?या स्व से स्व के भाव की यात्रा प्राकृतिक अवस्था है? यह स्वयं की गंध रसायनिकता बखूबी जानती है की स्वयं की अवस्था कभी भी स्वयं के लिए हानिकारक हो ही नहीं सकती है। सही गलत धर्म और धर्म नैतिकता और अनैतिकता यह समस्त मानसिक विचारों से उत्पन्न होने वाली एक मानसिकता होती है जो एक प्रकार से स्वयं के ही मृदा गुण को उभर कर कर्म अभिव्यक्ति के माध्यम से आंतरिक नभ पर अंकित कर देती है और प्रकृति किसी भी जीव को किसी भी मार्ग पर भेजने से पहले स्वयं में इतना सक्षम बना देती है कि जीव अपनी सुरक्षा रक्षा स्वयं करने में सक्षम होते हैं, मानव को ही क्यों हमेशा यह शिकायत रहती है समस्याओं का अंबार छाया रहता है की प्रकृति उसके लिए कुछ कर नहीं रही है या प्रकृति उसका साथ नहीं दे रही है या यह अन्याय हो रहा है यह ऐसे नहीं वैसे होना चाहिए जबकि जो भी घटना घट रही है उन समस्त घटित होने वाले घटनाओं के पीछे अतृप्ति के विज्ञान को पूर्ण करने का एक वैज्ञानिक प्राकृतिक बल होता है। यह सभी कलाएं स्वयं मानव धरा की मृदा में है जो उन्हें विकल्पों की दुनिया सही लगती है और अनिवार्य मार्ग की दुनिया इतनी कठिन लगती है कि उन्हें सहायता के तौर पर एक मार्गदर्शन चाहिए जबकि जो स्वयं जीव की चाहत होगी उसका मार्ग होगा उसे कोई और कैसे बता सकता है अपने लिए तो सबसे उचित अवस्था क्या होगी वह तो स्वयं अपनी ही भूमि जानती होगी तो अन्य की भूमि अन्य की दृष्टि अन्य की दृष्टिकोण हमारे मार्ग को प्रकाशित कैसे कर सकते हैं या वह हमारे मार्गदर्शक कैसे हो सकते हैं।

प्रकृति या सूर्य ब्रह्मांड वह स्वतंत्र न्याय प्रणाली है जो प्रत्येक जीव को स्वकर्मी सौर ऊर्जा गंध जलवायु वाहक बनाती हुई सिद्धांत न्याय कर्मी बनती है। अर्थात,जीवन मात्र कर्मों की पूर्ति करने वाली कोई भार युक्त बोझ से अंकित यात्रा नहीं है जिसमें क्षमादान ,परिवारवाद, भक्ति, संतान, विवाह, दायित्वों का निर्वाह किया जाए यह प्रलोभित मायावी आकर्षक वेदनात्मक रासायनिक अंकन मानव के ही मृदा द्वारा विकसित होकर फलीभूत होते हैं, वरन प्रकृति में तो ऐसी कोई प्रणाली होती ही नहीं है। यह धाराएं भी जो स्थापित हुई यह मानव की उन अहंकारों का

परिचय है एवं परिणाम है कि मानव है तो सर्वाधिक बुद्धिमान जीव, लेकिन प्रकृति के विरुद्ध में बुद्धिमान है जटिल जीवन बनाने में विकल्पों के माध्यम से स्वार्थ के माध्यमों से बुद्धिमान है कि ईश्वर को भी स्वयं का दास बनाने में सफल हो जाए स्वयं को दास कहकर कि हे ! प्रभु प्रकाश ऊर्जा मैं तेरा दास तेरी सेवा करता हूं बदले में नैवेद्यम का श्रृंगार करता हूं यदि जो मेरी यह मनोकामना पूर्ण कर दो, तो इसमें सेवक कौन हुआ ईश्वर या प्रकाश में ऊर्जा गेंद जो जो कदापि प्रकृति की मूल ऊर्जा बिंदु नहीं है जो एक के साथ भेद करती हुई स्वयं को को न्याय करता कहे ! अर्थात तात्पर्य यह है कि मानव ने ही अपनी हटी ध्यान साधना में स्वयं के ही मूल कर्म को एहसास करना ही नहीं चाहा बल्कि ईश्वर को प्राप्त करने की चाहत में ईश्वर की प्राप्ति में उसे उसके उद्देश्य को पूर्ण करेंगी की कल्पना में जितनी भी अवस्थाओं का भेदन एवं हस्तक्षेप अपनी आंतरिक ऊर्जा के प्राकृतिक बल से उत्पन्न किया है उन समस्त अवस्थाओं का परिणाम ही है असंतुलित अतृप्त एवं अपरिपक्व जीवन की अवस्था जो किसी भी अवस्था को पूर्ण होने का विज्ञान बल बने ही नहीं देती है शेष अवस्थाओं का इकट्ठा करने लगते हैं और प्रकृति शेषता को मिटाने वाली शेष परम ब्रह्मांड जीव सजीव निर्जीव अनंत अंत विज्ञान है।

यह जरूरी नहीं की बैरागिता या ध्यान साधना या फिर अध्यात्म से ही मनः शांति का मिलन होता हो ईश्वर से मिलन की अवस्था बनती है और फिर किस मिलन की चाहत चाहते हैं यह मानव धारा को जबकि अंतर मन की श्वसन राधिका आन्तरिक विज्ञान से हर पल धड़कनों की ध्वनि वेग तरंगों में प्रकृति की ब्रह्मांड ऊर्जा स्वयं की आंतरिक प्रकाश में प्राकृतिक ऊर्जा स्वयं के आंतरिक जैविक संरचना में मिलन करती हुई साथ चल रही है सिर्फ मानव के साथ ही क्यों संपूर्ण ब्रह्मांड पदार्थ जीव भूमि में किसी न किसी स्वरूप में प्रकृति की ब्रह्मांड व्यवस्था की गतिमान

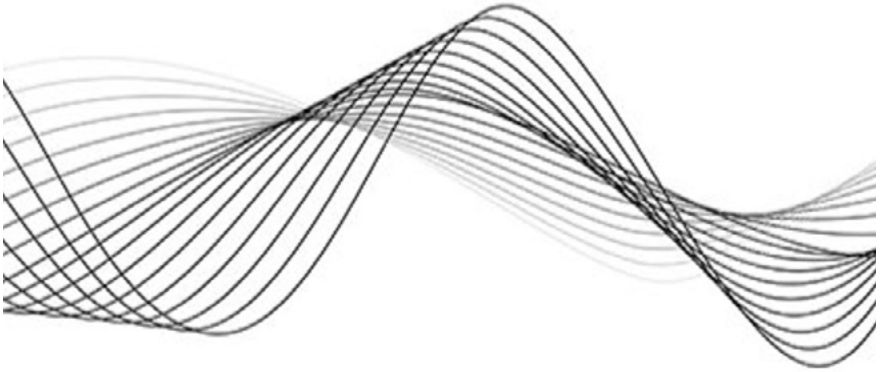

विज्ञान की उत्पत्ति तभी होती है जब किसी भी अवस्था को जीव अपनी रासायनिकता से या अपने आंतरिक मानसिक ऊर्जा के तरंग से जोड़कर स्वयं की अवस्था का मिलान करते हैं तब जिस विज्ञान की उत्पत्ति होती है उस विज्ञान के संचालक भी स्वयं जीव होते हैं एवं उस विज्ञान का अंत करने का बल भी स्वयं निर्माण करने वाली जीव की भीतर ही होता है, पीड़ा की अनुभूति तभी होगी जब हम किसी भी अवस्था को अपने मानसिक तरंग की जलवायु से जोड़ देते हैं जब तक हम पीड़ा को मानसिक अवस्था से नहीं जोड़ते हैं तब तक वह मात्र एक सतह से गुजर जाने वाली तरंग की अवस्था होती है जो न स्वयं को प्रभावित करती है ना हमसे निकलने वाली ऊर्जा से किसी अन्य की अवस्था को प्रभावित होती है।

है जो सजीव निर्जीव दोनों ही अवस्थाओं को गतिमान रखते हुए मूल अवस्था को परिपक्व कर मिटा देना का विज्ञान बनाते हैं अनिवार्य कर्म मार्ग विज्ञान से अर्थात, आंतरिक विज्ञान एहसास से गतिमान करती अशोक महाकाल स्वतंत्र निर्द्वंद अवस्था है। प्रकृति की सूर्य यात्रा बहुत ही सरल है जिसको कर्म के बोझ से निर्वाह करने का भार अनुभूत करना स्वयं के ही सरल यात्रा को जटिल बदल देने की एक क्रिया होती है अर्थात यह मानसिकता ही होती है कि हमें जो वस्तु पीड़ा दे रही है अगले के लिए वह वस्तु पीड़ा दायक नहीं होगी लेकिन हम उसे यह परिभाषित कर दे कि इस वस्तु से पीड़ा ही उत्पन्न होती है तो यह अवस्था केवल स्वयं पर लागू होती है अन्य पर लागू नहीं होती है और उसे एक बिंदु पर संपूर्ण विषयों का मिलान करके एक बना देना ही प्रदूषण मलबे का एकत्रण करना होता है अर्थात किसी भी अवस्था को जब तक मानसिक तरंगों से जोड़ा नहीं जाता है तब तक एहसास की अनुभूति नहीं होती है वह मात्र एक सतह परत की शारीरिक क्रिया होती है इसका कोई विज्ञान नहीं होता है विज्ञान की उत्पत्ति तभी होती है जब किसी भी अवस्था को जीव अपनी रासायनिक अवस्था से या अपने आंतरिक मानसिक ऊर्जा के तरंग से जोड़कर स्वयं की अवस्था का मिलान करते हैं तब जिस विज्ञान की उत्पत्ति होती है उस विज्ञान के संचालक भी स्वयं जीव होते हैं एवं उस विज्ञान का अंत करने का बल भी

स्वयं निर्माण करने वाली जीव की भीतर ही होता है पीड़ा की अनुभूति तभी होगी जब हम किसी भी अवस्था को अपने मानसिक तरंग की जलवायु से जोड़ देते हैं जब तक हम पीड़ा को मानसिक अवस्था से नहीं जोड़ते तब तक वह मात्र एक सतह से गुजर जाने वाली तरंग की अवस्था होती है जो न स्वयं को प्रभावित करती है ना हमसे निकलने वाली ऊर्जा से किसी अन्य की अवस्था प्रभावित होती है और प्रकृति में यही कर्म विज्ञान है की किसी को ना अपने अनुसार चलना है ना किसी के अनुसार चलना है ना किसी को प्रभावित करना है ना किसी से प्रभावित होना है अर्थात सामाजिक एवं सांसारिक अवस्थाएं जो मानव की वैज्ञानिकता ने विकसित किया है संबंध विभाग की दुनिया के नाम से उन समस्याओं को एक सात की क्रिया मानकर उन पर गतिमान होकर अपनी आंतरिक स्वतंत्र मानसिकता की आंतरिक यात्रा करना ही स्वयं के मूल जीवन का वास्तविक आनंद है क्योंकि अंततः हर जीव चाहे वह संजीव हो या निर्जीव हो भले ही उसमें कितना भी मिलन हुआ हो कितने भी हस्तक्षेप में हूं अंततः प्रत्येक जीव सजीव निर्जीव की अंतिम यात्रा या उसकी आंतरिक अवस्था स्वयं उसके ही अनुसार गतिमान होती है स्वयं जीव के ही मृदा के अनुसार उनके जलवायु का निर्माण करती है तो यह कहना अनुचित होगा कि किसी अवस्था के मिलन से हमारे इस अवस्था का विकास हुआ यह हमारी अवस्था बिगड़ गई है मिलान की इस प्रक्रिया में स्वयं जीव की ही बनी हुई उन अवस्थाओं का जो मिलान जीव के ही जलवायु से संभव था वरन विज्ञान का बल स्वयं के ही जीव मृदा से, अर्थात यदि जीव किसी एक प्रकाश बिंदु में अपनी ऊर्जा का निवेश करते हैं विश्वास मत के स्वरूप में तो फिर यह प्रश्न ही नहीं उठना चाहिए कि हमारे साथ किसी भी प्रकार की अन्याय रूपी अवस्था गतिमान होती है कि हम जिस भी प्रकाश बिंदु में अपनी ऊर्जा का निवेश करते हैं यदि हम उसे निवेशित ऊर्जा को स्वयं के भीतर या अनुभूत करते हुए गतिमान रहे कि वह ऊर्जा हमें जिस भी मार्ग पर ले जाएगी वह मार्ग हमारे ही रासायनिक गंध कर्म मार्ग की वह रसायनिकता है जो हमें सिद्धांत कर्म मार्ग में विलीन करते हुए एक मार्ग एक यात्रा एक जीवन वाहक बनाकर स्वयं से उत्पन्न हुई कच्ची अवस्था के डाई को मिटा देने की ऊर्जा क्रिया स्वयं हमारे ही द्वारा विकसित करते हुए हमें कच्चे डाई वाहन चालक नहीं बनती है प्रकृति। तो वह मार्ग यदि क्षण मात्र के लिए जीव को उदाहरण के लिए चोर बना रहे हो तो वह प्रकृति का ना ही कोई दंड है ना ही प्रकोप है बल्कि स्वयं से जीव के ही रसायन की कोई एक कड़ी है जो जीव से कर के रसायन को खत्म करती है और क्षण मात्र के लिए प्रकृति जीव की प्रवृत्ति चोर की बना देगी तो फिर किसी भी घटना में सही या गलत पाप या पुण्य दया या दान कर्म या कुकर्म न्याय या अन्याय की अवस्था शेष रही नहीं गई क्योंकि हर पल हर क्षण गतिमान होती अवस्था में स्वयं के ही प्रवृत्ति एवं गुण हर पल स्वयं के ही आंतरिक जलवायु के अनुसार परिवर्तित होती रहती है कि किसी हमें अच्छी अनुभूति होती है तो किसी क्षण हमें असहनीय खराब अनुभूति होती है तो इसका तात्पर्य नहीं है कि हर वक्त हमें वैसी अनुभूति होगी जिस वक्त हमें जिस अवस्था की अनुभूति हो रही होती है उस क्षण प्रकृति हमारे भीतर उन दबाव वेग और तापमान के जलवायु मंडल का दबाव डाल रही होती है जो प्रदूषण अवस्था को उभर कर दे अपने ही विज्ञान मंडल से मिलान करके मिटा देने का विज्ञान बना रही होती है। वास्तविक यात्रा तो आंतरिक अवस्था की यात्रा होती है भूगोल तो मात्र एक वाहन है सतह है जो जीवन के आत्मिक रासायनिक कर्म अवस्था को पूर्ण करने हेतु वाहन का कार्य करती है और ईंधन जीव को स्वयं उन्हें के गंध रासायनिक कर्म न्याय से, के द्वारा प्रदान करती है जो है स्वतंत्र यात्रा प्रवाह अर्थात, जिस मार्ग पर चले वही सही मार्ग है, मार्ग पर चलने के बाद उस पर सही और गलत का अंकन करना द्वंद का वह मकड़ जाल बनाते हैं जो फिर कभी मार्ग पर सरल यात्रा को अंकित होने ही नहीं देती है उसमें विचार रूपी क्रिट आकर द्वंद्व के अंडे देकर वेदनात्मकता एवं भयवादी जीवन को ही विकसित करते हैं। प्रकृति की आंतरिक यात्रा ध्वनि सुर्य महाकाल की अशोक स्वतंत्र न्याय निर्द्वंद कर्म यात्रा न्याय प्रणाली है। जिसके लिए विचार नहीं कोई कर्तव्य नहीं कोई दायित्व नहीं किसी प्रकार कि भावनात्मक या भक्ति वादी या किसी प्रकार की शासन शोषण वाद प्रथा नहीं है अपितु मात्रा वह स्व न्येयंकित अवस्था है जो मार्ग पर मार्ग का न्याय स्वतंत्रता यात्रा प्रवाह से करती हुई स्वतंत्र कर्म अनिवार्य मार्ग जगत का न्याय करती है। प्रकृति महाकाल स्वतंत्र है स्वतंत्र थी स्वतंत्र ही रहेगी जीवन की यात्रा अज्ञात थी अज्ञात है और अज्ञात ही रहेगी जो स्वतंत्र न्याय का ही अंकन करती है।

प्रकृतिमेल डेस्क

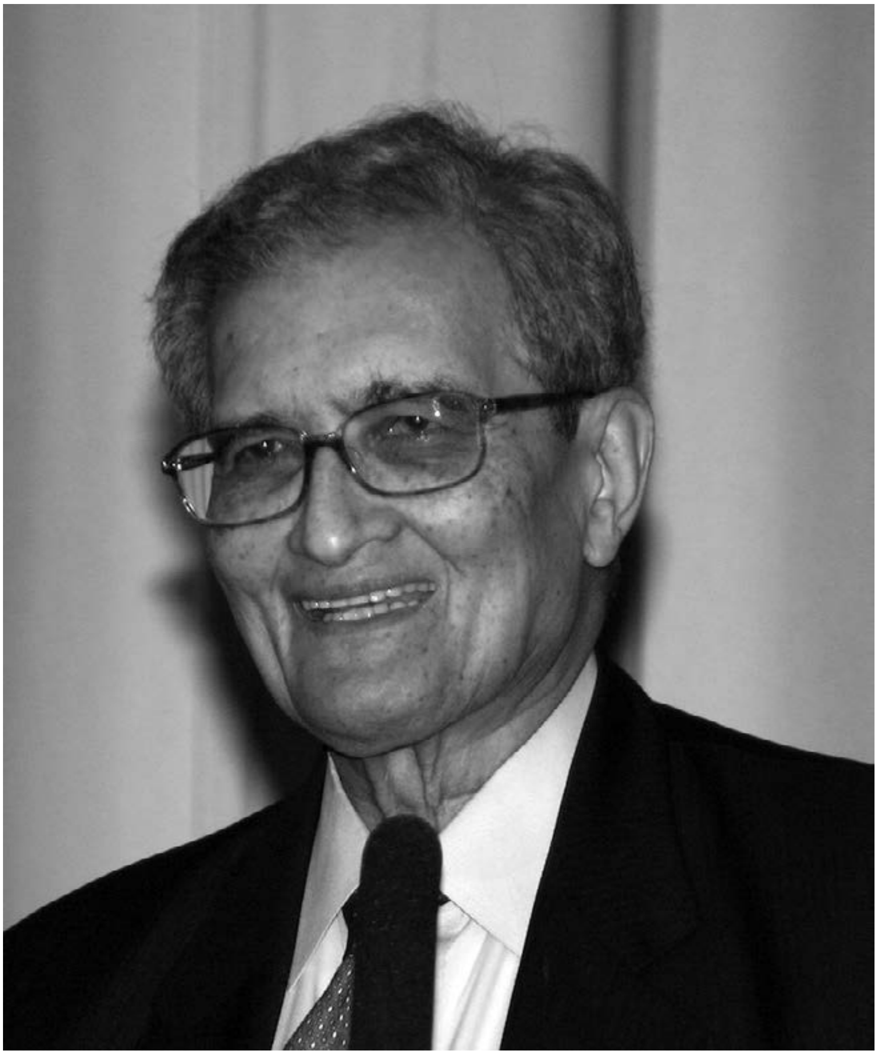

अमर्त्य सेन

एक महान विचारक की कहानी

आम लोगों के लिए उनके नाम से अधिक प्रसिद्ध, उनके विचारों और योगदान से जाने जाने वाले अमर्त्य सेन, एक अद्वितीय भारतीय विचारक और विश्वभर में एक विपणित नाम हैं। उनका जन्म 3 नवम्बर 1933 को बांकुरा, पश्चिम बंगाल, में हुआ था। उन्होंने अपने जीवन के दौरान अकादमिक रूप से महत्वपूर्ण योगदान किया है और विशेषकर आर्थिक विकास और सामाजिक न्याय के क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण विचारधारा के लिए प्रसिद्ध हैं।

अमर्त्य सेन का शिक्षा में बड़ा ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने कॉर्पस क्रिस्टी कॉलेज, कैम्ब्रिज, और ऑक्सफ़र्ड विश्वविद्यालय से अपनी पढ़ाई की और उन्होंने विभिन्न प्रमुख विश्वविद्यालयों में पढ़ाने का भी मौका पाया। उनकी शिक्षा की बड़ी महत्वपूर्ण विशेषता थी कि वे विभिन्न क्षेत्रों में अपनी पढ़ाई की, जैसे कि वित्तीय विकास, औद्योगिक रिश्तों का अध्ययन, और भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन, जिससे उन्होंने विशेषज्ञता प्राप्त की। अमर्त्य सेन का महत्वपूर्ण काम उनके आर्थिक विचारों में है। उन्होंने विकास और आर्थिक समृद्धि के क्षेत्र में अपनी विचारधारा को 'सामाजिक न्याय की सार्थकता' के साथ प्रस्तुत किया है। उनका कहना है कि विकास की माप, ताकत और धन में नहीं, बल्कि लोगों की जीवन की गुणवत्ता में होनी चाहिए। अमर्त्य सेन का और एक महत्वपूर्ण योगदान है उनका जीवन-कार्य क्षेत्र में व्यापक और गहरा योगदान करना। उन्होंने भारत के लिए महत्वपूर्ण और सकारात्मक परिवर्तन लाने का प्रयास किया है, खासकर ग्रामीण विकास और शिक्षा के क्षेत्र में। उन्होंने शिक्षा के प्रति अपनी दृष्टि और साक्षरता को बढ़ाने के लिए कई प्रयास किए थे।

अमर्त्य सेन का नाम विश्व व्यापी रूप से प्रसिद्ध है, और उन्होंने अपने जीवन में अनगिनत पुरस्कार और सम्मान प्राप्त किए हैं। उनकी विचारधारा और योगदान ने आधुनिक समाज में न्याय, विकास, और मानवाधिकार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण संकेत दिए हैं। अमर्त्य सेन का योगदान हम सभी के लिए महत्वपूर्ण है, और उनके विचारों को सुनकर हम सभी को अधिक समझदार, जागरूक, और सामाजिक न्याय के प्रति संवेदनशील बनने का मौका मिलता है। वे एक महान भारतीय हैं, जिनका योगदान हमारे समाज को बेहतर और न्यायपूर्ण बनाने में महत्वपूर्ण है।अमर्त्य सेन का कैरियर भी उनके विचारों की प्रमुख अंश था। उन्होंने विभिन्न प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों में शिक्षक के रूप में काम किया, जिसमें प्रिन्सटन, हार्वर्ड, और ऑक्सफ़र्ड भी शामिल हैं। उन्होंने अपने कैरियर के दौरान आर्थिक विकास, सामाजिक न्याय, और मानवाधिकार के क्षेत्र में अपनी विचारधारा को प्रस्तुत किया और छात्रों को

इन अद्वितीय दृष्टिकोणों के साथ पढ़ाया। अपने कैरियर में उन्होंने कई पुस्तकें लिखीं, जिनमें से कुछ बहुत ही प्रसिद्ध हैं। उनकी पुस्तक 'प्राधान्यता का सामाजिक सिद्धांत' विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, जिसमें वे आर्थिक न्याय और सामाजिक न्याय के मुद्दे पर अपने दृष्टिकोण को साझा करते हैं। उनकी दूसरी पुस्तक 'भारतीय विकास का एक आलोचनात्मक इतिहास' भारतीय सांस्कृतिक धरोहर और बहुवाद के मुद्दे पर चर्चा करती है।

अमर्त्य सेन का कैरियर और विचारधारा न केवल भारत में बल्कि पूरी दुनिया में महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने अपनी विचारधारा के साथ विश्व भर में बदलाव की दिशा में प्रमुख योगदान किया है और उन्होंने अपनी सोच को व्यापक रूप से साझा किया है।

अमर्त्य सेन को एक विचारक, शिक्षक, और समाजसेवक के रूप में याद किया जाता है, जिन्होंने अपने जीवन में न्याय, सामाजिक न्याय, और मानवाधिकार के कई अनावश्यक मुद्दे पर आलोचना की और उन्होंने इन मुद्दों के प्रति लोगों को जागरूक किया। द है और हमें उनकी विचारधारा का सम्मान करना चाहिए।अमर्त्य सेन का योगदान हमारे समाज में न्याय और सामाजिक न्याय की महत्वपूर्ण बातें समझने में मदद करता है। उन्होंने दिखाया कि आर्थिक समृद्धि केवल वित्तीय पैमानों में मापी नहीं जा सकती है, बल्कि समाज के हर वर्ग के लोगों को इसका लाभ मिलना चाहिए। उन्होंने आर्थिक असमानता और भूखमरी के मुद्दे पर भी अपनी विचारधारा को लागू किया और समाज को सामाजिक न्याय की ओर अग्रसर करने के लिए समझाया कि कैसे सही दिशा में कदम उठाना चाहिए।

उनके कैरियर ने भी उनके विचारों को एक नई दिशा दी। वे विश्व भर में आर्थिक विकास, ग्लोबलाइजेशन, और मानवाधिकार के मुद्दों पर अपने गहरे अध्ययन के साथ प्रसिद्ध हैं। अमर्त्य सेन का कैरियर हमें यह सिखाता है कि एक व्यक्ति कैसे अपने विचारों को उनके सामाजिक परिवेश में अद्वितीय रूप से प्रस्तुत कर सकता है और कैसे वह अपने योगदान के माध्यम से समाज में परिवर्तन ला सकता है। उनका कैरियर हमें यह भी सिखाता है कि ज्ञान और शिक्षा का महत्व क्या है और कैसे यह हमारे समाज को बेहतर बना सकता है।

अमर्त्य सेन की कहानी हमारे लिए प्रेरणास्पद है और उनका योगदान हमारे समाज के लिए महत्वपूर्ण है। अमर्त्य सेन का अनुसंधान कार्य भी उनके कैरियर का महत्वपूर्ण हिस्सा था। उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में गहरे अध्ययन किया और अपने अद्वितीय विचारों को अन्य अनुसंधानकर्ताओं के साथ साझा किया।

सामाजिक न्याय और आर्थिक विकास

उन्होंने आर्थिक विकास के साथ ही सामाजिक न्याय के मुद्दे पर अपने अद्वितीय विचार दिए। उनके अनुसंधान ने दिखाया कि आर्थिक विकास बिना सामाजिक न्याय के बगैर अधूरा है।

शिक्षा के क्षेत्र में योगदान

अमर्त्य सेन ने शिक्षा के क्षेत्र में अपने अनुसंधान के माध्यम से भारतीय शिक्षा प्रणाली को सुधारने के लिए महत्वपूर्ण सुझाव दिए। उन्होंने शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका को समझाने में अपनी खुद की विशेषज्ञता बनाई।

सांस्कृतिक धरोहर

उनका अनुसंधान सांस्कृतिक धरोहर के माध्यम से भारतीय समाज की विविधता को समझने में मदद करता है। उन्होंने भारतीय संस्कृति, भाषाओं, और इतिहास के प्रति अपनी रुचि को दर्शाया और उनके अनुसंधान ने इसके महत्व को प्रमोट किया।

मानवाधिकार

अमर्त्य सेन ने मानवाधिकार के क्षेत्र में भी अपने विचारों को प्रस्तुत किया। उन्होंने इसके महत्व को समझाया और विश्व भर में मानवाधिकार की सुरक्षा और सद्गति के लिए अपने योगदान को बढ़ावा दिया।

अमर्त्य सेन के अनुसंधान कार्य ने न केवल भारत में बल्कि पूरी दुनिया में ज्ञान और विचार के क्षेत्र में नए दिशाओं का निरीक्षण किया। उन्होंने अपने अनुसंधान के माध्यम से समाज को सुधारने और सामाजिक न्याय के प्रति जागरूक करने में महत्वपूर्ण योगदान किया है।अमर्त्य सेन ने अपने शैलीक प्राप्त ज्ञान और अद्वितीय विचारधारा के साथ विभिन्न संगठनों और संघों में सदस्यता और सहयोग की भी है। इनमें से कुछ प्रमुख संगठन निम्नलिखित हैं :-

ब्रिटिश एकेडमी

अमर्त्य सेन ने ब्रिटिश एकेडमी की सदस्यता ग्रहण की है, जो एक प्रमुख अकादमिक संगठन है जो शिक्षा, विज्ञान, और विशेषज्ञता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान करता है।

नेशनल ह्यूमनिटीज कॉमीशन

वे इस संगठन के सदस्य भी रहे हैं, जो मानविकता, शिक्षा, और साहित्यिक क्षेत्र में अपने योगदान के लिए प्रसिद्ध है।

वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम

अमर्त्य सेन ने वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम के सदस्य के रूप में भी काम किया है, जो आर्थिक मुद्दों और विकास के मुद्दों पर अन्तरराष्ट्रीय मंच के रूप में प्रसिद्ध है।

अमनेस्टी इंटरनेशनल

उन्होंने मानवाधिकार के मुद्दों पर काम करने वाले संगठन 'अमनेस्टी इंटरनेशनल' के सहयोगी के रूप में भी योगदान किया है।

इन संगठनों में अपने सदस्यता और सहयोग के माध्यम से, अमर्त्य सेन ने अपने विचारों को विश्वभर में प्रसारित किया और उनके योगदान को और भी महत्वपूर्ण बनाया है। उनकी सदस्यता और सहयोग ने उन्हें अंतरराष्ट्रीय मंच पर एक प्रमुख विचारक के रूप में प्रसिद्ध किया है।

एक राज्य एक चुनाव संभावनाएं और चुनौतियाँ

डॉ. उमेश कुमार
सह आचार्य, जनसंचार एवं नव मीडिया विभाग, जम्मू केन्द्रीय विश्वविद्यालय, जम्मू

एक देश एक चुनाव को प्रसांगिक बनाने के लिए जरुरी है कि मतदान में सुधार किया जाए। वर्तमान समय में चुनाव को एक महोत्सव की तरह देखा जा रहा है। इस अवधारणा को बदलने की जरूरत है। चुनाव कोई महोत्सव नहीं बल्कि नागरिकों का अधिकार और कर्तव्य दोनों होना चाहिए।

एक राज्य एक चुनाव के लिए वर्तमान भारत सरकार ने प्रयास तेज करते हुए पूर्व राष्ट्रपति महामहिम श्री रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता में 8 सदस्यीय समिति का गठन किया है। इस समिति को देश में एक साथ चुनाव कराने पर योजना प्रस्तुत करना है। इसके पीछे यह तर्क दिया जा रहा है कि 1959 से पहले देश में एक साथ ही लोकसभा और विधानसभा के चुनाव होते थे लेकिन समय के साथ इसमें परिवर्तन होता गया और वर्तमान समय में प्रत्येक वर्ष किसी ना किसी विधानसभा में चुनाव होते रहते हैं। यह चुनाव जहाँ एक ओर महंगे होते हैं वहीं दूसरी ओर सरकारी मशीनरी का बार-बार उपयोग करना पड़ता है जिससे विकास के कार्य बाधित होते हैं। एक राज्य एक चुनाव देश के सभी राज्यों में विपक्ष और राज्य विधानसभा चुनाव के समय को समकालिक बनाना है। यह अवधारणा 1967 तक प्रचलित थी, लेकिन दलबदल, ढील और सरकार के विघटन जैसे विभिन्न सिद्धांतों से यह बाधित हो गया। इस चक्र को पहली बार 1959 में जब केन्द्र सरकार ने केरल सरकार को भंग कर दिया और अनुच्छेद 356 के तहत आपातकाल लागू कर दिया था। इसके बाद, नेताओं के बीच दल-बदल और प्रति-दल-बदल के कारण, 1960 के बाद कई विधानसभाएं भंग हो गईं, जिसके कारण सार्वभौमिक और राज्य विधानसभाओं के लिए अलग-अलग चुनाव हुए। वर्तमान में, अरुणाचल प्रदेश, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश और ओडिशा में विधानसभा चुनावों के साथ चुनाव होते हैं। एक चुनाव नतीजे के विचार की विचारधारा 1999 में बीपी लाइफ रेड्डी की अध्यक्षता वाले विधि आयोग ने की थी। एक राज्य एक चुनाव की वर्तमान समय में प्रासंगिकता को देखते हुए

इसकी संभावनाओं, चुनौतियों अवसर और कमियों का मूल्यांकन करना आवश्यक है।

एक राज्य एक चुनाव की विषय में बात की जाए तो सबसे पहले यह बात उभर कर आती है कि देश में होने वाले प्रति वर्ष के चुनाव को रोका जा सकेगा और इससे सरकारी खर्चे में कमी लाई जा सकेगी। कई बार देश के अलग-अलग हिस्सों में चुनाव आदर्श आचार संहिता लगी होने कारण सरकार नई योजनाओं को लागू नहीं कर पाती है या समय और परिस्थितिगत देर होती है। इससे जहाँ एक ओर देश का विकास प्रभावित होता है वहीं लोगों को बार-बार चुनाव के लिए अपना समय देना पड़ता है। कई बार देखा गया है कि किसी एक चुनाव में मतदान का प्रतिशत बहुत अधिक होता है और वहीं दुसरे चुनाव में प्रतिशत कम हो जाता है। बार-बार चुनाव के कारण लोगों में उदासीनता की स्थिति भी बनने लगती है। एक साथ चुनाव कराने पर यह जरुर होगा कि मतदान के प्रतिशत को बढाया जा सकेगा और मतदान के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए सुनियोजित तरीके से जागरूकता अभियान चलाया जा सकेगा। विविधता से परिपूर्ण देश में एक साथ चुनाव कराना आसान नहीं है लेकिन यह प्रयास निश्चय ही देश के विकास समृद्धि के लिए सहायक सिद्ध होगा।

इसकी चुनौतियों की बात की जाए तो सहज ही कहा जा सकता है कि पूरे देश में एक साथ चुनाव कराना बहुत ही मुश्किल कार्य होगा। प्रत्येक राज्य की अपनी समस्या है और उनका समाधान एक साथ किया जाना संभव नहीं है। देश में दल-बदल या चुनाव के बाद नेताओं का एक पार्टी से दूसरी पार्टी की ओर जाना भी समस्या बनेगी। किसी राज्य में किसी दल का पूर्ण बहुमत नहीं होने की स्थिति में यह संभव है कि पांच वर्षों तक सरकार को चलाना संभव नहीं हो और बीच में ही विधानसभा को भंग करने जैसी स्थिति उत्पन्न हो जाए। ऐसी स्थिति में वहां पर क्या यह इंतजार किया जाएगा कि पांच वर्षों पर ही चुनाव कराया जाए या बीच में ही चुनाव कराना पड़ेगा। जैसा कि पूर्व में बताया जा चुका है कि 1959 तक देश में विधानसभा और लोकसभा के चुनाव एक साथ ही कराए जाते थे लेकिन केरल विधानसभा को भंग कर वहां आपातकाल लागू करने के बाद विधानसभा चुनाव और लोकसभा चुनाव लगा अलग समय में होने लगे थे। इसके साथी ही यह सवाल भी विचारणीय होगा कि राज्यसभा और विधान परिषद के एक तिहाई सदस्य प्रत्येक दो वर्षों पर चुने जाते हैं। उनके चुनाव को लेकर भी समस्या होगी। यह जरुर है कि इन चुनावों में आम जनता अपने मतदान का उपयोग नहीं करती है लेकिन आदर्श चुनाव आचार संहिता, सरकारी मशीनरी का उपयोग इन चुनावों में भी किया जाता है। राज्यों में एक साथ चुनाव कराने के साथ ही साथ यह भी सुनिश्चित करना जरुरी है कि चुने हुए जनप्रतिनिधि अपने दल को छोड़ कर किसी और पार्टी में नहीं जाएँ और अगर ऐसी स्थिति बनती है तो उसके लिए भी कुछ निश्चित कार्यविधि पर विचार किया जाना चाहिए।

एक देश एक चुनाव को प्रसांगिक बनाने के लिए जरुरी है कि मतदान में सुधार किया जाए। वर्तमान समय में चुनाव को एक महोत्सव की तरह देखा जा रहा है। इस अवधारणा को बदलने की जरूरत है। चुनाव कोई महोत्सव नहीं बल्कि नागरिकों का अधिकार और कर्तव्य दोनों होना चाहिए। बढ़ते संसाधनों और तकनीकी के इस युग में किसी एक दिन एक निश्चित स्थान पर उपस्थित होकर मतदान करने की पुरातन प्रक्रिया में बदलाब का प्रयास भी किया जाना जरुरी है। वर्तमान समय में लोकसभा के चुनाव लगभग 2 महीने तक पूरे देश के कभी एक हिस्से में तो कभी दुसरे हिस्से में चलते हैं। इस प्रवृत्ति को छोड़ते हुए एक महीने तक पूरे देश में मतदान के लिए निर्धारित कर देना चाहिए। जगह-जगह पर ईवीएम मशीन लगा कर उसे सुरक्षा बलों के हवाले करके लोगों को मतदान के लिए समय दे दिया जाना चाहिए। समय को 15 से 30 दिन तक या सक्षम स्तर पर कितने भी दिन निर्धारित करके किया जा सकता है। इसके साथ ही साथ आधार कार्ड के आधार पर व्यक्ति को वोट करने का अधिकार होना चाहिए। एक व्यक्ति देश के किसी भी हिस्से से अपनी उँगलियों की छाप के आधार पर अपने निर्वाचन क्षेत्र में मतदान करने के लिए योग्य होना चाहिए। इससे जहाँ मतदान का प्रतिशत भी बढेगा वहीँ चुनाव पर खर्च को भी कम किया जा सकेगा।

वास्तव में भारत सरकार द्वारा एक राज्य एक चुनाव को शुरू करने की योजना बहुत ही अच्छी है लेकिन इसके साथ ही साथ दुष्चिंताएं भी बहुत अधिक है। हमें यह भी सोचना होगा कि किसी एक राजनितिक दल का अधिकतर देशों में एक साथ सरकार होने की स्थिति में संविधान में मन चाहा परिवर्तन भी किया जा सकेगा। देश की जनता को ध्यान में रखकर योजनाओं को बनाने के स्थान पर अपने सम्बन्धियों या अपने से जुड़े लोगों को लाभ देने के लिए कार्यक्रमों का संचालन किया जा सकता है। हमें इस पर भी विचार करना होगा कि लोकतंत्र केवल मतदान का तंत्र नहीं है लेकिन व्यक्ति को पांच वर्षों में एक बार मतदान कर देना है केवल। लोकतंत्र, मतदान लोकतंत्र से आगे निकल कर यदि सहभागी लोकतंत्र की स्थिति में आता है तो एक सरकार एक चुनाव की प्रासंगिकता होगी अन्यथा कि स्थिति में यह केवल अपने लोगों को अनुचित लाभ पहुँचाने का माध्यम बन जाएगा क्योंकि राजनितिक पार्टियों को यह पता होगा कि अभी पांच सालों तक जनता के बीच में नहीं जाना है और जनता की याददाश्त इतनी क्षणिक होती है कि एक वर्ष में ही उसके लिए कुछ सकारात्मक करके आसानी से मत प्राप्त किया जा सकता है।

भविष्य जानना भला क्यों

उमेश

यदि आज हम मनुष्यों को देखे तो पायेगें कि वह अपने लिए स्वयं ही अलग-अलग अवस्थाओं का निर्माण कर रहे हैं जो कि अप्राकृतिक होने के साथ ही उसकी प्रवृत्ति के विरुद्ध भी है यही कारण है कि वह आज अनेकों और नवीन प्रकार की परेशानियों से घिरा है। आज का मानव चिंताओं में पड़कर अपने लिए नई-नई व्यवस्था बनाता हैदवाईयां खाता है आदि जिसमें उसे शांति नहीं मिल पाती। मनुष्य के लिए सबसे बेहतर होता है कि वह प्रकृति विज्ञान पर चले, जो हो रहा है उसे सही मानकर। इसी से वह तनाव मुक्त रह सकता है।''

गुरूवर श्री अशोक मानव जी का कहना है कि हम बाहरी जानकारी को ज्ञान मान लेते है और उसी को सत्य मानकर ऐसी राह पकड़ लेते है जिसपर भटकते रहते है। हम यदि अपने भीतर अपने सत्य पर चले तो हमें कभी निराशा नहीं होगी। हमारा स्वभाव हो गया है कि हम हमेशा दूसरों के द्वारा बताई गई बातों को अपने पर लागू करते है। कभी अपने स्व की आवाज नहीं सुनते। दूसरों को हम ज्यादा समझदार और ज्ञानी मानकर उनके बतायें रास्ते पर चलते है। यह अकसर होता है। फिर कोई दूसरा आकर कुछ और बता देता है तो हम वो करने लग जाते है। ऐसे हम भटकते रहते है। अपने सत्य की आवाज को अनसुना कर खुद से धोखा करते रहते है। यह कष्ट का कारण बनता है। हम यदि अपने को जाने, स्वयं की आवाज सुने तो हम बेहतर जीवन जी सकते है।'' इन्हीं उठा-पटक के बीच हम पता नहीं क्यों वो जानना चाहते है जो कि हमारे लिए अनुचित है और कष्टकारी भी। अकसर सुनने में आता है कि लोग अपना भविष्य जानने के लिए परेशान रहते है। अपने आने वाले कल को और अच्छा करने के लिए जुगत लगाते रहते है। गुरूवर इसपर कहते है कि ''न कुछ जाना जा सकता है, न कुछ बचाव किया जा सकता है। जो होना है और जो हो रहा है सब प्रकृति कि एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है, जो हमारे कर्मो के अनुसार काम करती है। हमने जैसा कर्म किया होता है हमारा भुगोल वैसा ही बनता है। जैसा भुगोल बना होगा और उस भुगोल में जो गंध एहसास के माध्यम से जुड़ी होगी। उसी एहसास के अनुसार अवस्थाएं आकर जुड़ती है। जुडने पर वे वैज्ञानिक अवस्था के अनुसार द्रव्य बनाकर छोड़ देती है। जो ऐच्छिक उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कार्य करती है।''

गुरूवर खुलासा करते है कि प्रकृति विज्ञान यूंही नहीं काम करता। हमारे अस्तित्व की हर एक इकाई एक विज्ञान के तहत ही कार्य करती है। हमारे शरीर का एक एक रोम, नाखून, बाल, पसीना आदि ये सब, जो कुछ भी बना रहे होते है वह प्रकृति की आवश्यकता और उसके विज्ञान के अनुसार ही बना रहे होते है। उसके मूल में वही होता है जिसके उद्देश्य के लिए उसका जन्म हुआ है। वैसी ही अवस्थाएं जुड़ती है। वैसी

ही उपयुक्त गंधों का मिलान होता है। यह मिलान प्राकृतिक सिद्धांत के अनुरूप विस्तार लेता है या नष्ट हो जाता है।''

यदि आज हम मनुष्यों को देखे तो पायेगें कि वह अपने लिए स्वयं ही अलग-अलग अवस्थाओं का निर्माण कर रहे हैं जो कि अप्राकृतिक होने के साथ ही उसकी प्रवृत्ति के विरुद्ध भी है यही कारण है कि वह आज अनेकों और नवीन प्रकार की परेशानियों से घिरा है। आज का मानव चिंताओं में पड़कर अपने लिए नई-नई व्यवस्था बनाता है, दवाईयां खाता है आदि जिसमें उसे शांति नहीं मिल पाती। मनुष्य के लिए सबसे बेहतर होता है कि वह प्रकृति विज्ञान पर चले, जो हो रहा है उसे सही मानकर। यही सबसे सरल साधन है। इसी से वह तनाव मुक्त रह सकता है।'' मनुष्य तो बाहरी बातों के प्रभाव में आकर तनावग्रस्त होता है और अपने लिए दुश्वारियां बनाता है।

गुरूवर कहते है कि ''प्रकृति विज्ञान के तहत जब किसी चीज को बनना होता है तब एक वेग बनता है। इस वेग से वह एहसास बनाता है जिसके लिए वह वेग तैयार हुआ था। ज्यों ही उस वेग से एहसास प्राप्त हो जाता है। विज्ञान के अनुसार वह वेग स्वतः ही शांत हो जाता है। उसके लिए अलग से किसी उपचार की आवश्यकता नहीं होती। फिर भी मानव घबराहट में इतने प्रयास कर डालता है। इतने उपचार कर लेता है, दवाईयां खा लेता है कि अनायास ही शरीर में अनेकों परेशानियां बन जाती है।''

गुरूवर श्री अशोक मानव जी कहते है कि इसी नसमझी में मनुष्य भविष्य के बारे में जानना चाहते है। वे कहते है कि जिस भविष्य को लोग जानना चाहते है उस भविष्य में उनकी मृत्यु है। जो पैदा हुआ है भविष्य में उसे मरना ही है। इससे क्या हासिल होगा। यदि हम यही जानने लगें कि कुछ समय बाद हमारा एक प्रिय व्यक्ति मर जायेगा। कुछ समय बाद दूसरा मर जायेगा। तो हमारा क्या होगा। हम कैसे रह पायेंगे। आखिर भविष्य

में और है ही क्या? एक दिन सभी को मरना ही तो है। जो भी देखकर बतायेगा यही तो बतायेगा।

आज मनुष्य के पास अपने जीवन की सबसे बड़ी घटना 'मृत्यु' का कोई विकल्प नही है। फिर मृत्यु पर शोक क्यों। आखिर क्या कोई इससे बाहर नहीं आ पाता। सभी ऐसी अवस्थाएं भुलाकर अपने जीवन में आगे बढ़ जाते है। उपाय यही है कि बिना कोई विकल्प बनाये, जिस अवस्था से गुजर रहे है, उसे शांत भाव से एहसास करें, और चुपचाप गुजर जायें। जो हो रहा है वह प्रकृति सिद्धांत के तहत ही कोई विज्ञान बनाने के लिए ही हो रहा है। ऐसा नहीं है कि प्रकृति भ्रमित हो ऐसा कर रही है या किसी के जीवन में अवरोध उत्पन्न करने के लिए ऐसा कर रही है।''

हम अकसर अपने जीवन से हारे, हताश परेशान रहते है। प्रकृति विज्ञान को न समझकर उलझन में पड़े रहते है। इस मनोस्थिति में हम अपने गुण-गंध के विपरीत की अवस्था को अपने साथ मिलान करने का प्रयास करते है। ऐसा प्रयास बहुत घर्षण पैदा करता है। यह हमे बहुत कष्ट देता है। अपने गुण-गंध से विपरीत स्थिति को अपने से जोड़ने का प्रयास अप्रिय होता है। क्योंकि जो हमारे से विपरीत है विज्ञान के अनुसार वह हमसे जुड़ेगा ही नहीं। बल्कि अधिक विरोध उत्पन्न होगा। मनुष्यों का यह प्रयास रहता है कि जीवन में अपने अनुसार वे बदलाव कर सकें, अपना जीवन अपने अनुसार जी सकें। इस सोच में वह जो कुछ भी संसाधन आदि बटोर रहा है, वे उसे वह सुख और शांति नहीं दे पा रहे जिसकी उसे खोज है। कुछ अनजान पाने कि दौड़ में वह अपना सुनहरा समय बेकार गवां दे रहा है। जो उसके पास है जो वास्तिविक रूप में उसका है उसे भूलकर वह पागल हो भाग रहा है।

गुरूवर कहते है कि ''हर कोई बीज रूप में ही वह सारा ईंधन लेकर पैदा होता है। हम वह सब अपने बीज रूप में लेकर आते है जिनकी आवश्यकता हमें अपने जीवन काल में होगी। वह हमारे अंदर बीज रूप में रहते है और विज्ञान के अनुसार सही समय और उचित अवस्था का इंतेजार करते है। अलग से जोड़ने वाला कुछ नहीं होता। प्राकृतिक रूप से अवस्था का एहसास करने पर सरलता और आनन्द का बोध होता है। अपना वेग लगाने पर भी, होगा प्रकृति विज्ञान के अनुसार बस उसमें आनन्द खत्म हो जायेगा और सरलता नहीं रहेगी।

चाँद पूनम का चुराना चाहता था!

प्रफुल्ल कुमार त्रिपाठी
आकाशवाणी से सेवानिवृत्त अधिकारी

एक लेखक मुस्तानसर हुसैन तरार का कहना है कि 'ज़िन्दगी में एक बार मोहब्बत जरूर करनी चाहिए ताकि आपको पता चले कि क्यों नहीं करनी चाहिए!' पुरुष और नारी के बीच पनपने वाला प्यार क्या होता है, आखिर यह कैसे जन्म लेता है और यह कैसे परवान चढ़ता है, यह क्या-क्या गुल खिलाया करता है और, ..और उसका अंजाम क्या होता है? कुछ ऐसे प्रेमी- प्रेमिका भी होते हैं जो अपनी जान तक दे देते हैं इसी प्यार को पाने के लिए। इसी क्रम में एक और बात विचारणीय है कि प्रेमी और प्रेमिका का आपस में शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करना क्या प्यार का अनिवार्य तत्व है? इश्क़, मुहब्बत, प्रेम या प्यार की इन ढेर सारी रहस्यमय बातों को कोई बता नहीं सका है।

लैला-मजनू, शीरी-फरिहाद बीते जमाने के प्रेमीसेकेण्ड ईयर का छात्र था तो एक तारा पांडे
होते जा रहे हैं। अब तो पूरा विश्व एक परिवारनामक लड़की को दिल दे बैठा था। उसे
बनता जा रहा है। प्यार हर सरहदों को पार करलाइब्रेरी में एक दिन देखा और उनमें जाने
ले रहा है। प्यार अब पुरुष-पुरुष और नारी-नारीक्या बात मुझे ऐसी लगी कि मैं मंत्रमुग्ध हो
के बीच हो रहा है और उसको कानूनी मान्यताउठा था। आज सोचता हूँ तो हंसी भी आती है
भी मिलती जा रही है। ।याद नहीं आ रहा है कि मैने आखिर उसका

अपनी चढ़ती उम्र में मैंने भी प्यार कियानाम कैसे जाना? किसी लड़की का आपको
था। कुछ प्लेटोनिक (काल्पनिक) और कुछदेखना, देखते रहना या आपका किसी लड़की
हकीक़त वाला। वो एक प्रचलित उक्ति है ना-को देखना, उसका साहचर्य पाना प्यार की
इश्क़ हकीकी और इश्क मज़ाज़ी! प्रेमियों कीनिशानी अवश्य हो सकती है लेकिन प्यार
ख़ुशी, दर्द, पीड़ा और परमानन्द की सामान्यतो तभी होगा जब दोनों राजी हों ।मेरे उस
भावनाएं इश्क़-मज़ाज़ी होती है और इश्क़'चैप्टर' का कुछ ही महीनों में 'दि एंड' भी
हकीकी में प्रेमी इन्सान है और प्रेमिका भगवानहो गया था ।लेकिन मेरे मन में प्यार के बीज
है। मैंने अपने जीवन में दोनों तरह के इश्क़तो पड़ ही गये थे और उनका अंकुरण हुआ
किये हैं। 1972 में जब यूनिवर्सिटी में बी. ए.वर्ष 1977 दिसम्बर में ।अच्छा ? तो सुनना

चाहेंगे क्या आप भी इसकी कहानी ?

कहानी की शुरुआत होती है आकाशवाणी गोरखपुर के ड्रामा स्टूडियो से ।सच मानिए,मेरे जीवन में प्यार उस एक पूनम की रात के समान आया था और मेरी प्रेमिका पूर्णिमा की चाँद के समान थी जिसे मैं 'चुरा' लेना चाहता था। वह मेरी असफल कोशिश थी क्योंकि पूनम के चाँद को भला कोई चुरा पाया है क्या ?

हाँ,याद आया। मोहन राकेश के लोकप्रिय नाटक "आधे अधूरे" के रेडियो रूपान्तरण की रिकार्डिंग हो रही थी। नायिका का रोल निभा रही लड़की भावमग्न होकर अपने डायलाग बोल रही थी ।" मुझे उस असलियत की बात करने दीजिए जिसे मैं जानती हूँ। ..एक आदमी है, घर बसाता है। क्यों बसाता है? एक जरूरत पूरी करने के लिए। कौन सी जरूरतें ? अपने अन्दर से किसी उसको..एक अधूरापन कह दीजिए उसे...उसको भर सकने की!"

मैं मंत्रमुग्ध होकर उस युवती को निहार रहा होता हूँ। रिकार्डिंग के बाद उससे औपचारिक परिचय होता है और पता चला कि यह वही युवती हैं जिनका जिक्र आकाशवाणी इलाहाबाद में मेरे सहयोगी निखिल जोशी ने किया था ।निखिल जोशी, इलाहाबाद की मशहूर साहित्यिक शख्सियत इलाचंद्र जोशी के पुत्र। उस समय निखिल से इस युवती के विवाह की बात चलकर समाप्त हो गई थी। बस! पहली दृष्टि में मैंने उसको दिल दे दिया। उसने भी अपनी मुस्कराहटें बिखेर दी ।इसे क्या माना जाय? यह मैं आप सभी पर छोड़ देता हूँ। लेकिन मेरा यह प्यार भी असफल रहा। प्यार की असफलता पर गुलज़ार के शब्द याद आ रहे हैं; " मुझको भी तरकीब सिखा दो यार जुलाहे,अक्सर तुझको देखा है जब ताना बुनते, जब कोई तागा टूट गया या ख़त्म हुआ, फिर से बाँध के और सिरा को जोड़ के उसमें, आगे बुनने लगते हो ।तेरे इस ताने में लेकिन,इक भी गाँठ गिरा मुन्दर की, देख नहीं सकता है कोई। मैनें तो इक बार बुना था एक ही रिश्ता,लेकिन उसकी सारी गिरहें साफ़ नज़र आती हैं। मेरे यार जुलाहे, मुझको भी तरकीब सिखा दो यार जुलाहे !"

आपके मन में यह प्रश्न उठना लाजिमी है कि अपने प्यार की कहानी की शुरुआत में ही मैं क्यों उसकी असफलता की बात करने लगा ? बस,एक दर्द की वज़ह से, एक टीस की वज़ह से जो उसकी असफलता से उपजी है और आज तक मुझे रह- रहकर कचोटती रहती है ।उस युवती का नाम था जोशी धीरा और उसके लिए उन दिनों में मैं अधीर होता चला गया ।उस दिन की स्टूडियो में हुई मुलाक़ात के बाद मैंने दोस्त निखिल को फोन पर खूब सुनाया ।मैंने उससे कहा कि उसने धीरा नहीं एक हीरा खो दिया है ।वह मुस्कुरा कर रह गया था क्योंकि अब ।उसकी शादी हो चुकी थी।।

उधर मेरे मन की बेतार तरंगें धीरा से जुड़ने लगी थीं। पता चला कि वह रेडियो की कैजुअल भी हैं और यहाँ की भाई बिरादरी वाद के चक्कर में उनकी बुकिंग बंद थी ।उद्घोषकों के दो रिक्त पदों पर कैजुअल बुकिंग होती थी और उस समय कैजुअल पैनल में डा.सतीश ग्रोवर, मोहसिना खान, सर्वेश दुबे, धीरा जोशी और बीना श्रीवास्तव आदि थीं। मैंने धीरा की ड्यूटी लगवानी शुरू की। उनके साथ अपनी ड्यूटी भी लगवाता था और उनसे निकटता बढाने के हर सम्भव उपाय किया करता रहा। निकट हो भी गया क्योंकि मैं भी गोरखपुर के एक प्रतिष्ठित परिवार से था और उसके परिजन मुझे मेरे परिवार को बखूबी जानते थे। एक दुपहरिया वह एक और उद्घोषिका मोहसिना खान मेरे घर भी आ गईं थीं ।संयोगवश मैं नहीं था लेकिन मेरी भाभी बीना ने उनको अटेंड किया। उसने शायद मेरे घर,घरवालों से अपनी निकटता की प्रत्याशा से यह विजिट की थी ।

ये सभी संकेत मेरे अनुकूल जा रहे थे इसलिए मैनें एक दिन अपने अभिभावकों को उनके घर जाने के लिए तैयार किया।हीरापुरी कालोनी में वे लोग एक शाम धीरा के घर उनके अभिभावकों से मिलने (प्रोफेसर हेमचंद जोशी) के लिए पहुंचे ।खूब स्वागत

सत्कार हुआ लेकिन ..हमारे और धीरा की शादी से सम्बन्धित कोई प्रस्ताव उनकी ओर से नहीं मिला। मेरा माथा ठनका और सच मानिए मुझे कुछ बुरा भी लगा ।अगली मुलाक़ात में इस रहस्य का खुलासा खुद धीरा ने करके मुझे हतप्रभ कर डाला ।

गोरखपुर में उन दिनों गीता वाटिका और उसमें रहने वाले राधा बाबा कुछ धार्मिक लोगों की गूढ़ आस्था के केंद्र बने हुए थे । बताया जाता है कि वे हमेशा राधामय रहते थे और समय समय पर लम्बी मौन साधना में चले जाते थे ।प्रोफ़ेसर जोशी सपत्नीक उनके अनन्य भक्त थे और उन्होंने बिटिया के लिए किसी वर की संस्तुति उनसे करवा ली थी ।जिस बीच मेरा प्रसंग शुरू हुआ उसी बीच किसी दिन धीरा का इंगेजमेंट भी बाबा जी ने करा दिया था ।पंजाबी ब्राम्हण परिवार का वह लड़का कैलिफोर्निया में साफ्टवेयर इंजीनियर था ।जब मैंने उत्तेजित होकर इस बारे में पूछा तो धीरा ने हाथ की उंगली में पहनी इंगेजमेंट रिंग दिखा कर अभिभावकों की अवज्ञा करने में असमर्थता दिखाई। मैं समझ गया कि मैं प्यार के इस खेल में हारा हुआ खिलाड़ी था। अपनी अंतिम ड्यूटी में धीरा ने फिल्मी गीतों पर आधारित एक ख़ास प्रोग्राम पेश किया जिसमें कंटेंट हमारे और अपने इस सम्बन्ध को बनाया, इसकी असफलता को बनाया था। फिल्म 'मुनीम जी' के लता मंगेशकर के गाये इस गीत की याद अभी भी बनी हुई है 'घायल हिरनिया मैं बन बन डोलूं,किसका लगा बान , मुख से ना बोलूँ..'।

दिसम्बर 1977 के आखिरी हफ्ते में मेरी पूर्णिमा के चाँद धीरा को इंजीनियर पी.के. शर्मा ब्याह कर अमेरिका उड़ा ले गए और मैं कारवाँ के गुजरने के बाद उठने वाले गुबार का हिस्सा बन कर रह गया।

इन भावुक प्रसंगों को याद करते हुए मन में आज अजीब सी तरंगें उठ रही हैं ।पुरानी याद के साए नए जज्बात भरने लगते हैं। अगर ऐसा होता तो क्या होता ?अगर वैसा होता तो क्या होता ?क्या धीरा और प्रफुल्ल का प्यार और फिर उनका वैवाहिक जीवन, जीवन की ऊबड़ खाबड़ घर गृहस्थी की कसौटी पर खरा उतर पाता ?क्या मेरे आगे के जीवन में आई मुश्किलों में उसका वैसा ही साथ मिल पाता जैसा मुझे मेरी व्याहता से मिला ? क्या धीरा का वैवाहिक जीवन सुखी रहा ? यदि हाँ तो उसने अपने जीवन का अंतिम दिन पुट्टपर्थी के आश्रम में बिताने का निर्णय क्यों ले लिया है?..ऐसे ढेर सारे प्रश्न अब भी मन में उठते रहते हैं ।

मेरे एक सहयोगी और मित्र संस्कृत और हिंदी के विद्वान, आकाशवाणी में सहायक निदेशक पद से सेवानिवृत्त अधिकारी डा.करुणाशंकर दुबे ने मेरे रिटायरमेंट के समय मुझ पर लिखे एक ब्लॉग में ठीक ही लिखा है-"एक राज़ की बात यह भी बताना चाहूँगा कि त्रिपाठी जी उन दिनों कुंआरे थे और जब इलाहाद में पोस्टेड थे तो उनके एक वरिष्ठ सहयोगी (साहित्यकार श्री इलाचंद जोशी के पुत्र)श्री निखिल चन्द्र जोशी ने आकाशवाणी गोरखपुर में विश्वविद्यालय में एक रीडर की बेटी कैजुअल एनाउंसर (जिनसे उनकी शादी का प्रस्ताव भी चला था) की बेहद तारीफ़ की थी। त्रिपाठी जी जब गोरखपुर ट्रांसफर पर आये तो उन्हीं सुन्दरी के सम्पर्क में आकर उनको सलाम ए इश्क कर बैठे ।लेकिन अन्ततःपरिस्थिति अनुकूल नहीं हो सकी और त्रिपाठी जी का वह इश्क कुबूल नहीं हो सका।"

इस प्रकरण ने मुझे कुछ दिनों तक परेशान किया, आज भी कभी कभी भावुक हो उठता हूँ । गुलज़ार के शब्दों में " मैं टूटे हुए कांच की तरह चकनाचूर हो गया, किसी को लग ना जाए इसलिए सबसे दूर हो गया।"

(क्रमशः अगले अंक में)

आत्महत्या निवारण दिवस

डा. इरा त्रिपाठी

एस एस पी जी मंडलीय दहजस्पटल
वाराणसी यूपी

अभी कुछ दिनों पहले रात्रि भोजन के समय रोज की तरह राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय विषयों को जानने की जिज्ञासा व समाचार चैनल पर एक प्रतिष्ठित कोचिंग संस्थान में हो रही एवं निरंतर बढ़ रही आत्महत्या की घटनाओं ने मन में अंदर तक दुख पहुंचा दिया । देश के भाभी भविष्य की इस कदर निराशा वाले कम से मन विदीन हो उठा अब तक भोजन का स्वाद भी पूरी तरह जाता रहा सब काम को निपटाते हुए मन भर बस युवाओं की मानस स्थिति में व्याप्त अंत ही निराशा और कोई मार्ग ना सोते हुए सिर्फ आत्महत्या के विविध से कृत्य को कर बैठना सोच कर मेरा मन अंदर तक पीड़ा से भर उठा ।

क्या है यह आत्महत्या ? कोई ऐसा क्या अनसुलझा रह जाता है जो व्यक्ति संज्ञा शून्य सा स्वयं को स्वयं से इतनी दर्द भरी कगार तक पहुंचा देता है सुना था आत्महत्या कर लोग करते हैं पर अपनी काउंसलिंग सत्र के अनुभव से तो ऐसा नहीं लगा बहुत साहस और भारी उदासीनता चाहिए अपने आप को खत्म करने के लिए पूर्व में लोग बहुत सकारात्मक हुआ करते होंगे जो कुछ नकारात्मक होंगे भी तो वह ऐसा ना करें इसलिए आत्महत्या को कायरता का पर्याय बनाकर उनको इस प्रकार की सोच से भी दूर किया जाता होगा पर आज का युवा या योग है कि समाज हर प्रकार से उत्तेजक कम को करने में अपनी शान समझता है और समाजवादी सोच के स्थान व्यक्तिवाद सोच की इतनी प्रधानता हो गई कि किसी से अपने दुख को भी साझा करने से डरता रहता है यहां तक इतना अकेला और संकीर्ण हो जाता है कि अपनी एक हर को ना पीपीटी हुए अपने अन्य डॉन उपलब्धियां को भी ना करते हुए उसे विशेष पल में अपने को खत्म करने का दुख और यह विभाग से रास्ता चुनता है ।

जी मेरे जीवन अनुभव में कई बार ऐसे लोग मेरे सामने आए हैं जो किसी के कहने पर अपनी समस्या को लेकर संपर्क में आए बहुत उदासी भाव से कहते हैं अब जीने को और मन नहीं करता जिंदगी ने मुझे हमेशा रुलाया है मेरी जिंदगी में अब कुछ भी अच्छा नहीं हो सकता कोई मेरी मदद नहीं कर पाएगा अब मेरे पास एक मात्र रास्ता करने का है वगैरा-वगैरा यह तो यकीन मानिए हमको बहुत कष्ट होता है सभी का आत्महत्या करने का अलग-अलग कारण होता है किसी को जीवन में वह लक्षण भी नहीं मिला जो वह चाहते थे तो कोई अपने सहज पैन से पीड़ित है कोई आर्थिक रूप से बहुत कमजोर है तो कोई शारीरिक रूप से कमजोर है किसी ने सामाजिक रूप से बहुत कष्ट झेलें हैं इत्यादि इत्यादि । पर सच तो यह है कि जीवन ही परिवर्तनशील है यह पल-पल स्थिति बदलते रहती है पर निराशा और हताशा व्यक्ति आसपास घट रही जीवन की सुंदर और सकारात्मक घटनाओं को उसके संगीतों को उसके आकर्षक छवियों को महसूस नहीं कर पता उसकी सभी इंद्रियां अपने को शून्य करने को आतुर हो जाती हैं यही आतुरता उसके आसपास एक ऐसी मकर दाल बना देती हैं जिससे उसकी सब व्यर्थ लगने लगता है जबकि यह स्थिति भी क्षणभंगुर होती है ।

आपको पता है यह वही समय है अगर कोई ईशान को उनके हस्तक्षेप न कर दे तो इनके अंदर पुनः जीवन का संचार किया जा सकता है जरूरत है तो बस इस क्षणिक आवेश को पहचाने कि उनके साथ रहने की उनके लिए संवेदनशील रहने की इस क्रिया हम अपने आसपास रह रहे व्यक्ति विशेष को पहचानने की जैसे उनकी बातों में लगातार आशाहीनता अस्तित्व हीनता असहाय होना दिखना , दैनिक जीवन में अरुचि दिखाना बार-बार करने की बातें करना इत्यादि ।

ऐसे में उनका धैर्य पूर्वक सोनी उनकी रकारात्मक सोच के पीछे छुपी भावनात्मक बातें जानने की कोशिश करें उनको जहां तक हो सके अकेला मत रहने दें उन पर सकारात्मक निगरानी रखें बातों बातों में जीवन के रुचिकर एवं रंगीन पशुओं के बारे में बताएं उनको रचनात्मक कार्यों में संलग्न करें और सबसे अनिवार्य उनका संगीत नृत्य प्राकृतिक सानिध्य एवं आध्यात्मिक आनंद में योजनाबद्ध ढंग से लगाए आवश्यकता होने पर चिकित्सकीय परामर्श भी दिलवाएं जीवन के पुस्तक की भांति है इसके सुख दुख पाठ की भांति हैं एक पाठ समाप्त होने के बाद आगामी पाठ खुलना निश्चित है एक पथ पर ठहरने के बजाय पुस्तक का अध्ययन करते चलें ।

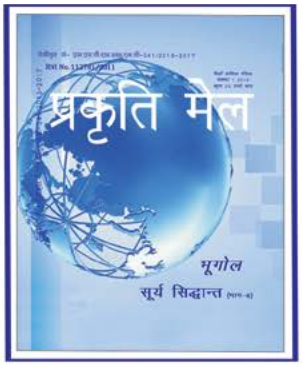

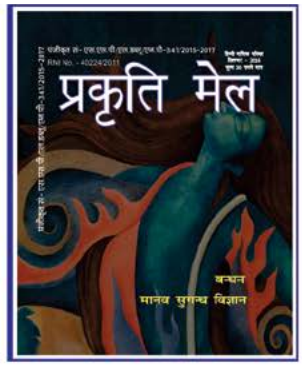

R N I No. UPHIN/2011/40224

प्रकृति मेल

हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रकृति मेल वह आईना है जिसमें आप अपनी वास्तविक तस्वीर के साथ प्रकृति की हर क्रिया प्रतिक्रिया का वैज्ञानिक स्वरूप देखें।

अशोक 'मानव'

उत्तर भारत की तेजी से लोकप्रिय होती हिन्दी मासिक पत्रिका

(शीघ्र ही अपने विज्ञापन की जगह बुक करवाये) (8423330911)

☐ हां, मैं प्रकृति मेल पत्रिका का वर्षिक ग्राहक बनना पसंद करूंगा/ करूंगी

प्रकृति मेल के पक्ष में देय ₹ ☐☐☐ कैश ☐ चेक ☐ तारीख ☐☐☐☐☐☐

1 year membership fee -220/- only. (Must be drawn in favour of 'Prakriti mail' payable at lucknow)

संलग्न चेक/डिमांड ड्राफ्ट नं. ☐☐☐☐☐☐ आहरित बैंक (बैंक का नाम)__________

नाम ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐

पता__________

__________ राज्य__________ पिन__________

फोन नंबर ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐ ई-मेल:__________

कृपया फार्म भरकर निम्नलिखित पते पर भेजे:

प्रकृति मेल, सूर्या आश्रम, मानव नगर, (निकट आई.आई.एस.ई.) कल्याणपुर, लखनऊ, पिनकोड- 226022, उ0 प्र0।

नियम और शर्तें

पत्रिका का मूल्य और आफॅर केवल भारत में लागू। कृपया पत्रिका की पहली प्रति डाक या कोरियर के माध्यम से मंगवाने के लिए कुछ समय दें। किसी भी तरह के विवाद का निबटारा केवल लखनऊ की अदालत में होगा।

नि:शुल्क ई-मैगज़ीन प्राप्त करने के लिए हमारे वेबसाइट - www.prakritimail.com पर सम्पर्क करें।

सूत्र वाक्य

अशोक मानव

- मानव अपनी इच्छा प्रकृति की गंध से सहयोगी गंध को मिलाकर सुगंध पैदा करके दुर्गंध को रोक कर बीमारी से बच सकता है।

- सोच के विपरीत सोच बनाने से गंध की एक दीवार खड़ी हो जाती है जिससे विपरीत गुण भी पार करके पास नहीं हो पाता है जिससे दुर्गंध का निर्माण नहीं हो पता है।

- प्रकृति में रंगों का निर्माण गंध से स्थापित होता है। रंग गुणों को ताकतवर बनाते हैं। जीव की सुरक्षा करते हैं और प्रदूषण फैलाने वाली नकारात्मक ऊर्जा को जलाकर खत्म करते हैं नए निर्माण में अपना रंग मिलाकर सुरक्षात्मक कवच बनाने की क्रिया करते हैं। और गुणों का निर्माण कर नए गुणों में परिवर्तित करते हैं।

- गंध जीव के गुणों का अंश है जिसे श्वसन क्रिया से पहचाना जा सकता है। सामाजिक परिभाषा के अनुसार गंध जीव के व्यक्तित्व की पहचान है।गंध जीव रचना से तैयार होती है जीव द्वारा धारण किया गया आहार,प्रवृत्ति,भावना और विचार के अनुरूप गंध का निर्माण होता है।

- प्रेम बाह्य जगत से हमारे ऊपर थोपी जाने वाली वह अवस्था है जो हमारा शोषण करने का कार्य करती है और हमारे भीतर रासायनिक मिलान करके हमारे अस्तित्व को मिटाने का कार्य करने लगती है।

- सामाजिक अवगुणों से प्रभावित निर्णय जीत नहीं जीवन की पहली हार है।

- गंध वह सूक्ष्म विज्ञान है जो प्रकाश और ध्वनि के साथ मिलकर सजीवता का विस्तार कर ब्रह्मांड का विस्तार करती है।

- गंध कर्म पूर्णता से गंतव्य तक पहुंचाने का बीज और आनंद प्रकृति का प्राकृतिक विज्ञान है।

- जिस प्रकार शांत जल अपने अंदर फैली गंदगी नीचे दबा देता है ठीक उसी प्रकार मानव चित्त(मन) को शांत करके नकारात्मक ऊर्जा खत्म करके अपनी हर परेशानी से बच सकता है।

- जो स्वतः हो रहा है उससे गुजर जाना ही कर्म है,जो पूर्व आत्मिक बीज के परतीय विज्ञान के गंध रूप में मौजूद होता है जब उसका समय आता है तो सक्रिय होकर अपने गंधीय विज्ञान के चुंबकत्व के तत्व पदार्थ का मिलान कर अपने कर्म को पूर्ण करता है।

जीवन विकास में रुकावट की घेराबंदी दूर करने का सूत्र

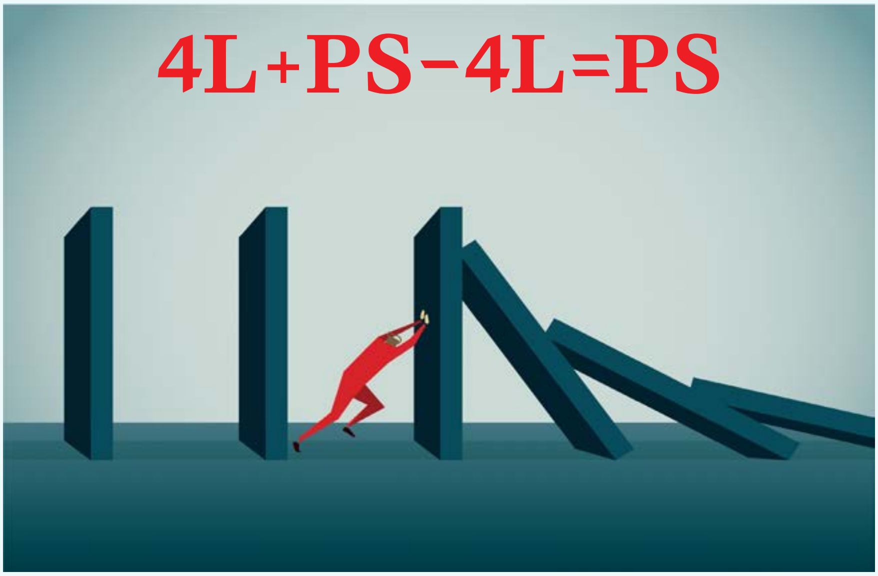

वृहद सोच सकारात्मक होनी चाहिए नकारात्मक होने पर प्रकाश का घेरा कमजोर पड़ जाता है जिससे विपक्ष का प्रकाश अपनी वास्तविक स्थिति जान लेता है और अपना प्रकाश उसे घेर नहीं पता है बृहद प्रकाश सुरक्षात्मक घेरा बनाकर व्यक्ति की रक्षा करता रहता है

अशोक मानव

L-Light - प्रकाश

L-Life - जीवन

L-Large - वृहद

L-Little - छोटा(सूक्ष्म)

P-problem - समस्या

S-Solution - हल

मानव जीवन में अनेकों विषय अपना घेरा बना लेते हैं जो व्यथित करते रहते हैं । यह घेरा उसके आसपास हवा रूप में घूमता रहता है, जो दबाव बनाता रहता है। जब यह हवा श्वसन क्रिया के माध्यम से शरीर के अंदर पहुंच जाती है तो मस्तिष्क में घेरा बना लेती है। मानव फिर उसी के बारे में बार-बार सोचने लगता है नींद कम होने लगती है, स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है, नकारात्मक सोच पैदा होने लगती है। ऐसा होने पर शरीर में बीमारी पैदा करने वाले जीवाश्म बनने लगते हैं जो नकारात्मक जीवाणु को जन्म देने लगते हैं। परिणाम स्वरुप आए दिन कोई न कोई बीमारी पैदा होने लगती है। यह ऊर्जा परिवार या वाह्य लोगों से संबंध खराब होने से जन्म लेती है या खुद की नकारात्मक सोच से जन्म लेती है, अथवा अपनी नाकामयाबी से पैदा होती है। अथवा प्राकृतिक रूप से उद्देश्य की विरोधी ऊर्जा से जन्म लेती है अथवा प्रकृति में घूम रही नकारात्मक ऊर्जा से पैदा होती है।

घेरे की ऊर्जा अपने उद्देश्य के एक सूक्ष्म ब्लैक बिंदु में होती है जो प्रकाश को अपनी तरफ खींचकर एक घेरा बना लेती है। जो अपने विषय के आसपास घूमता रहता है । जिसका दबाव व्यक्ति को कमजोर बनाता रहता है। विषय के कमजोर पड़ने पर श्वसन क्रिया के माध्यम से अंदर चला जाता है। जहां मस्तिष्क में अपना घेरा बना लेता है। ऐसा होने पर व्यक्ति उसी के विचारों में फंस कर रह जाता है। जब तक यह घेरा नहीं टूटता है तब तक व्यक्ति इस में परेशान बना रहता है। वैसे तो सकारात्मक सोच से उत्पन्न होने वाली ऊर्जा हर घेरे को तोड़ देती है। पर इस घेरे को तोड़ने का एक वैज्ञानिक सूत्र है जिसके प्रयोग से किसी भी घेर को तोड़ा जा सकता है वह है - 4L+PS 4L=PS

L-Light (प्रकाश)

प्रकाश के तरल पदार्थ पर पड़ने से ऊष्मा बनती है। इसी ऊष्मा की रासायनिक क्रिया से जीव का निर्माण होता है। जीव प्रकृति के जिस उद्देश्य को पूरा करने के लिए पैदा होता है तब तक अपना जीवन जीता है।

Life - (जीवन) - जीव अपना उद्देश्य पूरा कर सके उसके लिए प्रकृति उसे सदैव गतिमान रखती है, पर उसे रोकने के लिए

नकारात्मक ऊर्जा द्वारा अनेकों घेरे बनते रहते हैं। जो जीवन को सुचारु रूप से चलने नहीं देते जिसे तोड़ने के वैज्ञानिक क्रिया होती है।

L-Large (बृहद) - जीवन किए गए भोजन से प्रकाश बनाता है। भाव के अनुसार उसमें गुणात्मकता मौजूद होती है। वृहद प्रकाश विषय के बारे में विस्तार से सोचने पर बनता है। यह प्रकाश सुरक्षात्मक घेरा बनाता है जो अपनी वास्तविक स्थिति को विपक्ष के घेरे को नहीं देखने देती है और विपक्ष के घेरे को प्रकाश से ढंक देती है। जिससे उसकी ऊर्जा अपने पास तक पहुंचने में रुकावट पैदा करती है। वृहद सोच सकारात्मक होनी चाहिए ,नकारात्मक होने पर प्रकाश का घेरा कमजोर पड़ जाता है। जिससे विपक्ष का प्रकाश अपनी वास्तविक स्थिति जान लेता है और अपना प्रकाश उसे घेर नहीं पता है। बृहद प्रकाश सुरक्षात्मक घेरा बनाकर व्यक्ति की रक्षा करता रहता है अपनी सुरक्षा के लिए वृहद प्रकाश छोड़ना चाहिए जो अपनी सुरक्षा के साथ विपक्ष के घेरे को कमजोर करता है। वृहद प्रकाश सुरक्षा करता है पर वास्तविक स्थिति को नहीं जान पता है ना उसे खत्म कर पता है।

L- Little (छोटा)(सूक्ष्म) -

सूक्ष्म में प्रकाश शक्तिशाली होता है। इसकी तीव्रता अधिक होती है यह कहीं भी पहुंच सकता है। वहां की वास्तविक स्थिति को देख सकता है और अपनी तीव्रता से उस घेरे के ब्लैक बिंदु को जलाकर खत्म कर सकता है। जब बिंदु खत्म हो जाता है तो उस घेरे का प्रकाश स्वतः वहां से हटकर ऊपरी सतह पर चला जाता है और विषयात्मक घेरा खत्म हो जाता है। व्यक्ति उस विषय के घेरे से बाहर निकल जाता है। सूक्ष्म प्रकाश बनाने के लिए व्यक्ति को वृहद सोच की जरूरत नहीं होती है। इसके लिए व्यक्ति को शांत अवस्था धारण करनी पड़ती है। जिस घेरे को तोड़ना हो उसे अपने मन में रखकर व्यक्ति को शांत हो जाना चाहिए कुछ नहीं सोचना चाहिए। यह अवस्था तब तक धारण करनी चाहिए जब तक कि उस

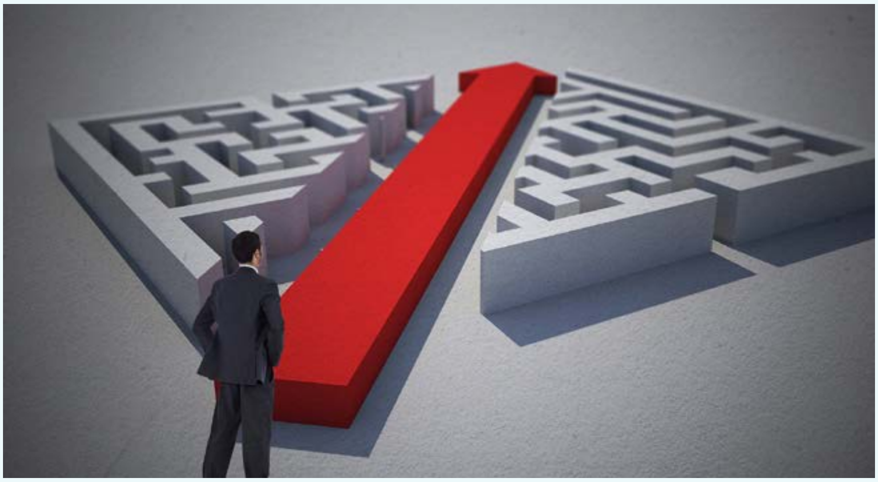

'जीवन में आने वाली रुकावट पर प्रश्न - उत्तर न उत्पन्न करे , जीवन में उत्पन्न होने वाली अवस्था के एहसास से गुजरते जाए, इसी क्रिया में बनने वाला गुण स्वतः रुकावट दूर कर देगा '

घेरे का ब्लैक बिंदु दिखाई पड़ने लगे। जब घेरे का ब्लैक बिंदु दिखने लगे तब मन को इस बिंदु पर केंद्रित करते हुए उसे खत्म करने का भाव पैदा करो। ऐसा करके तब तक अपने मन को निशाने पर रोक रखें जब तक अपने अंदर से सूक्ष्म प्रकाश निकलकर उस बिंदु पर प्रहार ना कर दे। प्रहार करके उसे जलते हुए देखें, जब वह जल जाएगा तो उस घेरे का प्रकाश हटा हुआ दिखाई देगा इसके बाद अपना मन वहां से हटा ले। घेरा समाप्त हो जाएगा और व्यक्ति वहां से निकल जाएगा। ऐसा होने से व्यक्ति उस घेरे से बाहर निकल जाएगा और वह घेरा व्यक्ति के ऊपर दबाव नहीं बन पाएगा व्यक्ति के अंदर उस तरह की सोच आनी बंद हो जाएगी।

P-Problem - (समस्या) -

विषय का जो घेरा बनता है वही प्रॉब्लम व्यक्ति के जीवन में समस्या बनाती है यह समस्या तब तक बनती रहती है जब तक कि वह घेरा ना खत्म हो।

S- Solution - ()

जब सूक्ष्म प्रकाश से घिरे को खत्म कर दिया जाता है तो समस्या हल हो जाती है ।

जब सूक्ष्म प्रकाश से घिरे को खत्म कर दिया जाता है तब -4L+4L से वह कट जाता है अर्थात उस विषय से ध्यान हट जाता है और उत्तर PS बच जाता है।

प्रकृति के योग से प्रकाश रुकता है जिससे जीवन धारण होता है इस विकास को रोकने के लिए रूकावटी घेरा बनाने लगती है जिसे व्यक्ति 4L+PS-4L से खत्म कर देता है। 4L प्रकाश के रुकने से जीवन का विकास होता है।

Large Light - बृहद प्रकाश तैयार करके सुरक्षात्मक घेरा बनाया जाता है और Little Light सूक्ष्म प्रकाश बनाकर रूकावटी घेरे का भेदन किया जाता है। ऐसा हो जाने के बाद -4L+4L से कट जाता है और उत्तर PS Problem Solution बच जाता है। इस सूत्र से व्यक्ति अपने किसी भी रूकावटी घेरे को खत्म कर सकता है। प्रकृति में हर गुण का भंडार है अगर समस्या है तो उसका समाधान भी होगा जरूरत है उसे जानकर क्रियान्वित करने की आप अब सभी इस सूत्र के इस्तेमाल से अपने जीवन में उत्पन्न होने वाली किसी भी समस्या का घेरा खत्म कर सकते हैं।

प्रश्न हमारे
उत्तर श्री अशोक मानव जी के

प्रश्न :- बुद्धि क्या है? इसका हमारे जीवन में प्राकृतिक रूप में क्या उपयोगिता है?

उत्तर :- बुद्धि एक ऐसा मध्य है जो की आत्मा और व्यक्ति के माध्यम एक समझौता करने का कार्य करती है।

प्रश्न :- ध्यान क्या है? इसका वास्तविक स्वरूप क्या है?

उत्तर :- ध्यान एक प्राकृतिक क्रिया है जो जीवन में किसी भी समय हो जाता है। प्राकृतिक गति में आ जाना ही ध्यान है। ध्यान जब किया जाता है तब व्यक्ति किसी एक विषय पर केंद्रित हो जाता है जिसके बाद विषय में जैसा उतार चढ़ाव आता है उसी की गति बन जाती है जब तक वह पूरा नहीं हो जाता तब तक व्यक्ति का खिंचाव उसी तरफ बना रहता है।

प्रश्न :- किसी विषय या पदार्थ पर ध्यान करने का परिणाम क्या होता है?

उत्तर :- पदार्थ पर ध्यान क्रिया करने से जो चुंबकत्व उत्पन्न होता है उसमें पदार्थ और व्यक्ति दोनों की ऊर्जा मिल जाती है जिससे नए विषय की बिजीय रचना हो जाती है जो समय आने पर प्रकृति में स्थापित होकर विषय को पूरा करता है।

यदि किसी पाठक के मन में कोई भी सामाजिक या प्राकृतिक प्रश्न उठ रहा है वह उस प्रश्न का निदान चाहते हैं तो
पाठक हमें अपना प्रश्न निम्न पते पर भेज सकते हैं। निदान प्रश्न के अगले अंक में दिया जाएगा।
आप अपना प्रश्न डाक द्वारा या ईमेल पर भेज सकते हैं

डाक पता : प्रकृति मेल, सर्या आश्रम, मानव नगर (निकट आई.आई. एस.ई), कल्याणपुर, लखनऊ-226022, उ० प्र०
ईमेल - info@parkritimail.com, editor.prakritimail@gmail.com

मेगलेव टेक्नोलॉजी

बढ़ते विद्युत गाड़ियों की ओर एक महत्वपूर्ण कदम

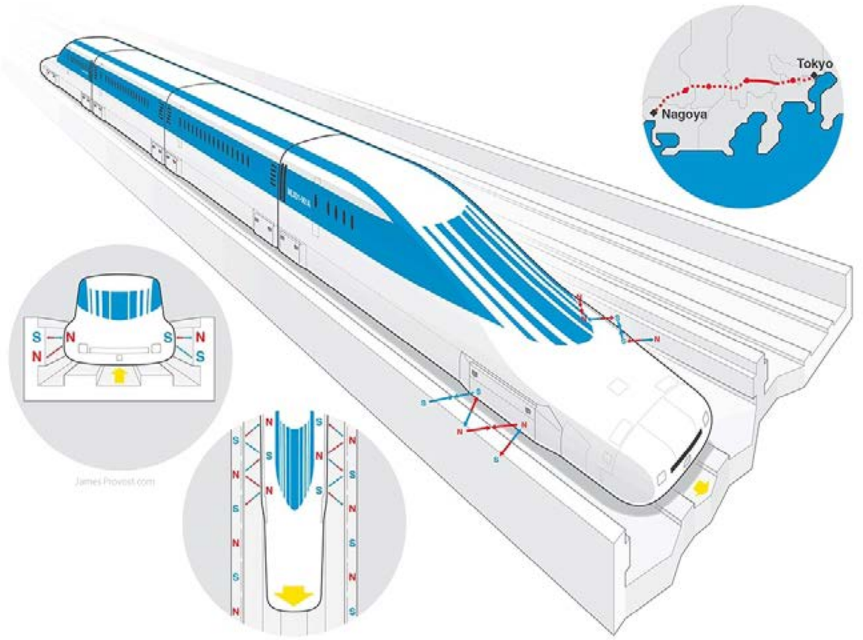

मानवेन्द्र त्रिपाठी

जब ट्रेन चलने का आदेश दिया जाता है, तो इन एलेक्ट्रोमैग्नेट्स को ऊपर और नीचे स्विच किया जाता है, जिससे कि वे रेलट्रैक के साथ पलट जाते हैं और एक आवर्ती मैगनेटिक फील्ड बनता है। इस आवर्ती मैगनेटिक फील्ड के कारण ट्रेन को आकर्षित किया जाता है और यह ऊपर उठता है और रेलट्रैक से ऊपर ले जाता है, जिससे कि ट्रेन को ज़मीन पर कोई संपर्क नहीं होता है। ट्रेन को गति देने के लिए इसे एक इलेक्ट्रिक मोटर द्वारा प्रेरित किया जाता है, जिससे कि ट्रेन आगे बढ़ सके।

मेगलेव, एक अग्रणी इलेक्ट्रिक वाहन निर्माता कंपनी है, जिसने विद्युत गाड़ियों के क्षेत्र में अपनी पहचान बना ली है। यह कंपनी विकसित कर रही है उच्च गुणवत्ता वाली इलेक्ट्रिक गाड़ियां जो न केवल वाहन चालकों के लिए सुरक्षित हैं, बल्कि पर्यावरण के लिए भी फायदेमंद हैं।

मेगलेव के इलेक्ट्रिक गाड़ियां पूरी तरह से बिजली पर चलती हैं, जिससे तेल और डीजल की खपत को कम किया जा सकता है। इसके अलावा, इन गाड़ियों का कार्बन प्रतिशतन भी बहुत कम होता है, जिससे हम प्रदूषण को कम करने में मदद मिलती है।

मेगलेव की गाड़ियों की तकनीकी गुणवत्ता और सुरक्षा मानकों पर पूरा ध्यान दिया जाता है, जिससे वे उपयोगकर्ताओं के लिए एक बेहद विश्वसनीय विकल्प बनती हैं। समर्थन के साथ, इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए बढ़ती मांग को देखते हुए, मेगलेव ने एक नई ऊर्जा के स्रोत के रूप में बिजली का उपयोग करने के सस्ते और प्रदान करने वाले विकल्पों का प्रदान किया है।

इस प्रकार, मेगलेव ने विद्युत गाड़ियों के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया है, जो हमारे समाज और पर्यावरण के लिए एक सकारात्मक परिवर्तन की ओर एक महत्वपूर्ण कदम है।

इन गाड़ियों की तकनीकी विशेषताओं में सबसे अच्छा है कि वे पूरी तरह से विद्युत चालित होती हैं, जिससे प्रदूषण को बिल्कुल कम किया जा सकता है। यह गाड़ियां बिजली के शीर्षक पर चलती हैं, जिससे उनकी चालने में जीरो एमिशन होता है, जो आत्मगति और पर्यावरण के लिए दोनों ही महत्वपूर्ण हैं।

मेगलेव की गाड़ियों के साथ, उनके लॉन्च किए गए इलेक्ट्रिक चार्जिंग स्टेशन्स का भी विकास हुआ है, जो इन वाहनों को तेजी से और सुरक्षित तरीके से चार्ज करने में मदद करते हैं।

मेगलेव के इलेक्ट्रिक वाहनों के बारे में कुछ महत्वपूर्ण तथ्य हैंः

बिजली की बचत

मेगलेव के इलेक्ट्रिक वाहन बेहद कम ऊर्जा खपत करते हैं और इसके परिणामस्वरूप यातायात के लिए बिजली की बचत होती है, जिससे उपयोगकर्ताओं को लाभ होता है।

सुरक्षा और तकनीकी गुणवत्ता

मेगलेव की गाड़ियां सुरक्षा और तकनीकी गुणवत्ता मानकों को पूरा करती हैं, जिससे उनके उपयोगकर्ताओं को एक बेहद विश्वसनीय अनुभव मिलता है।

बैटरी लाइफ

मेगलेव के इलेक्ट्रिक वाहनों की बैटरी लाइफ बेहद अच्छी होती है, जिससे उपयोगकर्ताओं को लम्बे दौर की यात्रा करने का मौका मिलता है।

बैटरी चार्जिंग स्टेशन

मेगलेव ने बैटरी चार्जिंग स्टेशन का विकसन किया है, जो इन गाड़ियों को तेजी से चार्ज करने के लिए सुविधाजनक हैं।

प्राकृतिक जीवन के लिए स्वस्थः विद्युत वाहनों का उपयोग करके प्रदूषण की कमी होती है।

बदलते यातायात परिणाम

मेगलेव के इलेक्ट्रिक गाड़ियां यातायात प्रबंधन को बेहतर बनाती हैं, जिससे यातायात जाम कम होते हैं और शहरों में आनंदमय यात्रा का मौका मिलता है।

मेगलेव के बारे में और रोचक तथ्य

साफ और शांत सफर

मेगलेव की गाड़ियों के बिना इंजन के शोर और वायु प्रदूषण के बिना यात्रा करने का आनंद मिलता है, जिससे यात्रा का मजा और भी बढ़ जाता है।

साथियों के लिए स्वागत

इलेक्ट्रिक वाहन आमतौर पर शांत होते हैं और इनमें अधिक स्थान होता है, जिससे यात्रा के साथियों के लिए आरामदायक और सुरक्षित अनुभव होता है।

संचालन में कम लागत

विद्युत वाहनों का संचालन करने में कम लागत होती है, जिससे उपयोगकर्ताओं को दर्जनों और सेवा में भी बचत होती है।

आवासीय और व्यापारिक उपयोग

मेगलेव के इलेक्ट्रिक गाड़ियां आवासीय और व्यापारिक उपयोग के लिए उपलब्ध हैं, जिससे विभिन्न उपयोगकर्ताओं की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सकता है।

सरकारी प्रोत्साहन

कई सरकारें विद्युत वाहनों के उपयोग को प्रोत्साहित करने के लिए उद्योग को अनुदान और छूट प्रदान कर रही हैं, जिससे विद्युत वाहनों की पैमाइश और पॉपुलैरिटी बढ़ रही है।

मेगलेव विद्युत गाड़ियों की पॉपुलरिटी व्यापक रूप से बढ़ रही है, जिससे यातायात सुरक्षित, तेज, और प्रदूषणमुक्त हो रहा है। ये प्रौद्योगिकी और यातायात के क्षेत्र में एक नई क्रांति का प्रतीक है, जो आने वाले समय में हमारे यातायात की परिस्थितियों को सुधारने में मदद कर सकता है।

मैग्नेटिक लेविटेशन (मैगलेव) प्रौद्योगिकी को प्रशासन करने की कई देशों में प्रयासरत हो रहा है, जो दक्ष और उच्च-गति परिवहन की सुविधा प्रदान करने के लिए है। यहां कुछ ऐसे देश हैं जहां मैगलेव प्रणालियों का इस्तेमाल किया जा रहा है, विकसित किया जा रहा है, या विचार किया जा रहा हैः

चीन

चीन, मैगलेव प्रौद्योगिकी का वैश्विक नेतृत्व करता है। इस देश में मैगलेव ट्रेन लाइनें चलाई जा रही हैं, जैसे कि शंघाई मैगलेव ट्रेन, जो दुनिया की सबसे तेज वाणिज्यिक ट्रेनों में से एक है, जो शंघाई पुडोंग अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे को शहर केंद्र से जोड़ती है। चीन मैगलेव प्रौद्योगिकी में निवेश करने का काम जारी है और अपनी मैगलेव नेटवर्क को बढ़ाने की योजना बना रहा है।

जापान

जापान तकनीकी नवाचार के लिए प्रसिद्ध है, जैसे कि मैगलेव ट्रेन। केंद्रीय जापान रेलवे कंपनी ने चुओ शिंकंसेन, एक Maglev ट्रेन प्रणाली विकसित की है

यूरोप

यूरोप में भी मैगलेव प्रौद्योगिकी परियोजनाएँ चल रही हैं। उदाहरण के लिए, फ्रांस में एक मैगलेव ट्रेन नेटवर्क विकसित किया जा रहा है, जो यात्रा करने का तरीका सुरक्षित और तेज बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

भारत

भारत में भी मैगलेव प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल किया जा रहा है। दिल्ली में तोपसी ट्रेन्स डिलाइटेड ब्युलेट ट्रेन की सेवा चल रही है, जिससे शहर के यातायात को सुधारने का प्रयास किया जा रहा है।

संयुक्त राज्य अमेरिका

अमेरिका में भी कुछ शहरों में मैगलेव प्रोजेक्ट्स का आयोजन किया जा रहा है, जिससे शहरी यातायात को सुधारने का प्रयास किया जा रहा है।

मैगलेव ट्रेन, जिसे मैगनेटिक लेविटेशन ट्रेन भी कहा जाता है, एक उच्च गति रेलवे प्रणाली है जिसमें ट्रेन को विभिन्न प्रकार के मैगनेटों की मदद से ऊपर उठाया जाता है और इसे रेलट्रैक से ऊपर ले जाया जाता है, जिससे की ट्रेन को किसी प्रकार की फिजिकल संपर्क की आवश्यकता नहीं होती है।

मैगलेव ट्रेन का काम इस प्रकार होता है

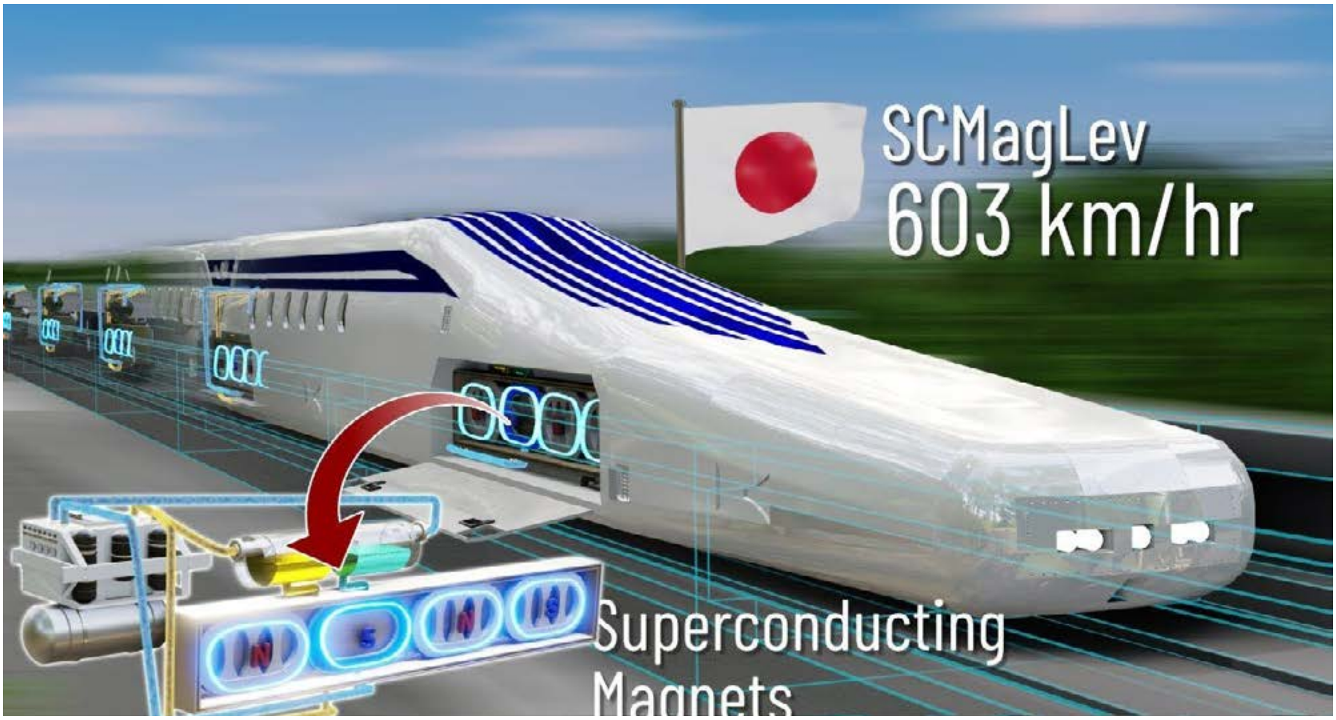

मैगलेव ट्रेन के नीचे एक सीरीज के मैगनेट्स लगे होते हैं, जिन्हें एलेक्ट्रोमैग्नेट्स कहा जाता है।

जब ट्रेन चलने का आदेश दिया जाता है, तो इन एलेक्ट्रोमैग्नेट्स को ऊपर और नीचे स्विच किया जाता है, जिससे कि वे रेलट्रैक के साथ पलट जाते हैं और एक आवर्ती मैगनेटिक फील्ड बनता है।

इस आवर्ती मैगनेटिक फील्ड के कारण ट्रेन को आकर्षित किया जाता है और यह ऊपर उठता है और रेलट्रैक से ऊपर ले जाता है, जिससे कि ट्रेन को ज़मीन पर कोई संपर्क नहीं होता है। ट्रेन को गति देने के लिए इसे एक इलेक्ट्रिक मोटर द्वारा प्रेरित किया जाता है, जिससे कि ट्रेन आगे बढ़ सके।

मैगलेव ट्रेन एक तेजी से और सुरक्षित तरीके से यातायात करने की क्षमता रखती है और इसका उपयोग बड़े शहरों के बीच उच्च गति यातायात के लिए किया जाता है। इसके अलावा, मैगलेव ट्रेन प्रदूषण कम करने में भी मदद करती है क्योंकि इसमें डीज़ल इंजन की आवश्यकता नहीं होती है और यह विद्युत ऊर्जा का उपयोग करती है।

मैगलेव ट्रेन की डिज़ाइन और वास्तुकला के पीछे एक कुशल इंजीनियरिंग और फिजिक्स का संयोजन होता है, जिसका मुख्य उद्देश्य ट्रेन को बिना संपर्क के उच्च गति पर चलाना होता है। यहां मैगलेव ट्रेन की कुछ मुख्य डिज़ाइन और वास्तुकला की बातें हैं

मैगनेटिक लेविटेशन सिस्टम

मैगलेव ट्रेन की डिज़ाइन में सबसे महत्वपूर्ण अंश मैगनेटिक लेविटेशन सिस्टम होता है, जिसमें सुपरकन्डक्टिंग मैगनेट्स और इलेक्ट्रोमैग्नेट्स का मिश्रण प्रयुक्त होता है। यह सिस्टम ट्रेन को ऊपर उठाने और उसे स्थिति में रखने के लिए जिम्मेदार होता है।

डिज़ाइन और एरोडाइनामिक्स

मैगलेव ट्रेन का डिज़ाइन और एरोडाइनामिक्स इसकी उच्च गति को सुनिश्चित करने में मदद करते हैं। ट्रेन की बाहरी संरचना इसे अधिक संवेदनशील और प्रदूषण में कम योगदान करने के लिए डिज़ाइन की जाती है।

इलेक्ट्रिक प्रोपल्शन सिस्टम

मैगलेव ट्रेन को गति देने के लिए एक शक्तिशाली इलेक्ट्रिक प्रोपल्शन सिस्टम का उपयोग होता है। यह सिस्टम ट्रेन को तेजी से चलाता है और इसे आवश्यक गति पर बनाए रखने में मदद करता है।

सुरक्षा

मैगलेव ट्रेन के डिज़ाइन में सुरक्षा का विशेष महत्व होता है। यह सुनिश्चित करने के लिए कई सुरक्षा सुविधाएं शामिल होती हैं, जैसे कि ट्रेन की गति को नियंत्रित करने के लिए तंतु सेंसर्स और विभिन्न सुरक्षा सिस्टम।

स्टेशन डिज़ाइन

मैगलेव ट्रेन के स्टेशन का डिज़ाइन भी महत्वपूर्ण होता है ताकि यात्री आसानी से ट्रेन में बैठ सकें और सुरक्षित रूप से स्टेशन पर आ सकें। स्टेशन प्लेटफार्म और सुरक्षा व्यवस्था को भी ध्यान में रखा जाता है।

मैगलेव ट्रेन का डिज़ाइन और वास्तुकला सुरक्षित और उच्च गति यातायात की जरूरतों को पूरा करने के लिए तैयार किया जाता है, और यह एक प्रौद्योगिकी के रूप में विकसित किया गया है जो स्थिति के संबंध में अद्वितीय है।

निगाहें आसमान की ओर

डॉ0 मृत्युंजय कोईरी

''पूरे शहर में पानी की किल्लत हो गयी है। अब बारिष नहीं हुई तो बहुत मुष्किल है।'' अमूल ''मैं तो आसमान की ओर देखकर प्रतिदिन भगवान से विनती करता हूँ। हे सफेद-सफेद बादल! तू काले-काले बादल में परिवर्तित होकर, खूब उमड़ो-घुमड़ो और गर्जन के साथ बरसो! हे जीवन के आधार!'' ''आप ही नहीं, यहाँ के सभी लोग आसमान की ओर दुख भरी निगाहों में देखकर विनती करते हैं। हे ईष्वर! हम पर कृपा कीजिए।

राँची शहर खुष-मिज़ाज मौसम के लिए जाना जाता है। जेठ मास के अंतिम सप्ताह तक बारिश न होने के कारण आधे से अधिक बोरिंग नल सूख गया। सोसाइटी वाले बोरिंग नल तत्काल खोदवा लेते हैं। बोरिंग गाड़ी रात-दिन बोरिंग खोदता रहा। पर एक के बाद एक बोरिंग सूखता गया। सोसाइटी वालों के साथ-साथ कुछेक मकान मालिक भी बोरिंग खोदवाते हैं। षहरवासी पानी के लिए तीन बजे रात से ही पानी के जुगाड़ में लग जाते हैं। पीने का पानी लेने के लिए लाइन में घंटों इंतजार करना पड़ता है। आषाढ़ मास का प्रथम सप्ताह समाप्त हो चला, लेकिन बारिष न होने के कारण अधिकांष पानी बेचने वालों के बोरिंग में पानी नहीं है। पानीवाला बीस लीटर पानी की कीमत दस रुपया से बीस रुपया कर दिया है। किसी ग्राहक द्वारा पानी भरते समय थोड़ा-सा गिर जाने पर पानीवाला कहता है, ''आप लोग पानी बर्बाद कर रहे हैं। आज रात भर बोरिंग चालू रखा, फिर भी टंकी नहीं भरा है। मेरा टंकी एक घंटा में भरता था। हो सकता है, आज बारह बजे से पहले ही दुकान बंद करना पड़ेगा।''

लाइन में खड़ा हिमांषु कहता है, ''इस बार सब का बोरिंग सूखने लगा है। मेरा मालिक का एक माह से टंकी में पानी नहीं चढ़ता है। चार दिन से एक बाल्टी पानी नहीं आता है।''

''आपके मकान मालिक को दूसरा बोरिंग खोदवाने के लिए नहीं बोले।'' चमनदीप कहता है।

''नया बोरिंग खोदने की बात तो दूर की है। बोरिंग नीचे उतारने के लिए कहने पर

कहता है। अखबार में लिख रहा है। एक-दो दिन में पानी पड़ने वाला है। यही एक माह से बोलता आ रहा है।'' हिमांषु

''मेरे बगल वाले के वहाँ भी एक माह से बोरिंग में पानी नहीं आता है। उनके वहाँ भी बहुत किरायेदार हैं। कुछ किरायेदार खाली करके दूसरे जगह चले गये। जो हैं, वह आपकी तरह यहाँ-वहाँ से पानी लाते हैं। उनका मकान मालिक सुबह-षाम आस भरी निगाहों से आसमान की ओर देखकर कहता है। लग रहा है, एक-दो दिन के अंदर पानी आ सकता है। बहुत उमस है। आकाष में बादल भी बन रहा है।'' अमूल कहता है।

''मेरा मकान मालिक भी एक महीना से यही कहता है। आज बहुत उमस है। देखिए! आसमान में आज सुबह से ही काले-काले बादल बन रहे हैं।'' हिमांषु

मकान मालिक नंदलाल इनकी बातों को सुनकर पड़ोसी रघुवीर अहीर को कहता है, ''मैंने तो किरायेदार को साफ कह दिया है। पानी की व्यवस्था अपने से करो! या रूम खाली करके चले जाओ! बोरिंग खोदवाने से एक लाख का खर्च आयेगा। वह कौन देगा? आपलोग तो दीजियेगा नहीं। ऐसे भी मौसम विभाग के अनुसार दो दिन के बाद मॉनसून आने ही वाला है।''

''ठीक कहा आपने। मेरा किरायेदार टेंकर माँगवा दीजिए, नहीं तो पैसा कम देंगे, कहने लगे। तब मैंने टेंकर माँगवाने के लिए बात भी की। लेकिन एक टेंकर का दो हजार बोला तो मैंने माना कर दिया। आज मैंने भी कह दिया है। रहना है तो एक-दो बाल्टी मिल रहा है। उसी में काम चलाओ! वरना खाली करके चले जाओ!'' रघुवीर अहीर कहता है।

''अरे यार! किरायेदार पैसा देता है तो समझता है कि मकान मालिक को ही खरीद लिया हूँ। आज सुबह मेरा बोरिंग से पानी नहीं निकला तो एक किरायेदार बाल्टी लेकर आया और पानी दीजिए! पानी दीजिए! बोलकर चिल्लाने लगा। तब मैं भी तुरंत खाली करने का आदेष दे दिया। साला! जाए तो कहाँ जायेगा? आस-पास लगभग के घरों और सोसाइटी में पानी की किल्लत है।'' मकान मालिक छोटू सेठ कहता है।

''देखो छोटू! ये तुम भी जानते हो और मैं भी जानता हूँ। हमलोगों के यहाँ दो महीना किरायेदार नहीं रहेगा तो खाना नसीब नहीं होगा। इसलिए कुछ भी बोलो! धीरे से बोलो! षांतिपूर्वक बोलो! मैं तो किरायेदार के कहने से पहले ही आसमान की ओर देखकर कहता हूँ। आज या कल पानी आने की संभावना लग रहा है। इधर-उधर पानी पड़ना षुरू हो गया है। देखो! इधर कब तक आता है। पानी आने के बाद तो दिक्कत नहीं होगी। किसी तरह दो-चार दिन काम चलाओ!'' नीलेष लॉज का मालिक कहता है।

चारों मकान मालिक के चले जाने के बाद चमनदीप कहता है, ''अरे भाई! मकान मालिक को केवल पैसा चाहिए। हम सब से केवल इनका पैसा का संबंध है। एक महीना समय से पैसा ना दो। फिर खाली करने का आदेष दे देते हैं। ये क्या? खाक पानी की व्यवस्था करेंगे। सुबह दो बाल्टी पानी दे देते हैं। फिर आप उसमें खाना बनाओ, स्नान करो, कपड़ा धो या जो करना है करो। वह नहीं जानता है।''

''ये सिर्फ पैसा से प्यार करते हैं। इनमें मानवीयता है ही नहीं।'' हिमांषु

''बिल्कुल! शहर के लोगों के ह्रदय से मानवता मर चुकी है।'' चमनदीप

लाइन में खड़ा साठ साल का वृद्ध कहता है, ''यहाँ नौकरी करते तीस साल हो गया। लेकिन इस साल जैसा कभी पानी की दिक्कत नहीं हुई थी। इस बार की गरमी बहुत ज्यादा है। पता नहीं जून का चैबीस तारीख हो गया। लेकिन पानी पड़ ही नहीं रहा है।''

''चाचा, बारिष कैसे होगी?शहर में कितने पेड़ थे। वे सब विकास के नाम पर काटे गये। और शहर के बीचो-बीच कितना दलदल खेत था। जिसमें जेठ माह में भी पानी रहता था। उस खेत में बड़ी-बड़ी सोसाइटी बन गयी। अब आप ही बताये कि चालीस डिग्री सेल्सियस से भी तापमान बढ़ेगा या नहीं। बोरिंग सूखेगा या नहीं।'' अमूल कहता है।

''भाई, आप ठीक बोल रहे हैं। शहरवासी बारिष होने पर काम-काज में रूकावट समझते हैं। कीचड़ में पैर रखना पसंद नहीं करते। इसीलिए आँगन से सड़क तक पक्का कर दिया है। सरकार भी नाली पक्की बनवा दी। अब घर का और बारिष का पानी सीधे नाली से शहर के बाहर चला जाता है। हर घर और सोसाइटी में वॉटर हार्वेस्टिंग होना आवष्यक है। वरना तीसरा विष्व युद्ध पानी पर होना तय है।'' हिमांषु

''मैं गोपाल सोसाइटी में रहता हूँ। एक बोरिंग सूख जाने के बाद दूसरा बोरिंग अप्रैल में खोदवाया गया था। वह भी सूख गया। दो दिन पहले फिर खोदवाये हैं। उसमें भी बहुत कम पानी आ रहा है। सुबह और शाम केवल पानी मिलता है। बाल्टी में भर के काम चलाना पड़ रहा है।'' गोपाल सोसाइटी का व्यक्ति कहता है।

''पूरे शहर में पानी की किल्लत हो गयी है। अब बारिष नहीं हुई तो बहुत मुष्किल है।'' अमूल

''मैं तो आसमान की ओर देखकर प्रतिदिन भगवान से विनती करता हूँ। हे सफेद-सफेद बादल! तू काले-काले बादल में परिवर्तित होकर, खूब उमड़ो-घुमड़ो और गर्जन के साथ बरसो! हे जीवन के आधार!'' हिमांषु

''आप ही नहीं, यहाँ के सभी लोग आसमान की ओर दुख भरी निगाहों में देखकर विनती करते हैं। हे ईष्वर! हम पर कृपा कीजिए। जल के बिना जीवन अपूर्ण है। और एक सप्ताह पानी नहीं पड़ा तो पृथ्वीवासी पानी के लिए तड़प-तड़पकर मर जायेंगे। हे काले-काले बादल! अब तो बरसो!.......'' चमनदीप

''हाँ, हाँ, सभी की निगाहें आसमान की ओर है।'' लाइन में खड़े सभी लोग कहते हैं।

संयम और नैतिकता अपनाने से सर्वांगीण विकास

गोवर्धन दास बिन्नानी 'राजा बाबू'
बीकानेर, राजस्थान

संयम और नैतिकता के बूते ही जीवन सुखमय तो होता ही है साथ साथ सम्मानजनक भी। जैसा आप सभी जानते हैं कि विलासिता से अनेक अवगुण स्वतः ही अपने आप विकसित हो जाते हैं और इनसे बचने के लिये संयम ही एक कारगर हथियार है। लेकिन हमें सुख जितना पसन्द है उतना संयम नहीं क्योंकि संयम के चलते हमें अपने व्यवहार पर नियंत्रण, वाणी पर नियंत्रण, इच्छाओं पर नियंत्रण अर्थात क्रोध, लालच, द्वेष, मोह, अभिमान आदि मन की अवांछित भावनाओं पर नियंत्रण के लिये प्रयासरत रहना होगा। यदि ऊपर वर्णित में से हम किसी एक को अपनाने के लिये दृढ़ प्रतिज्ञ होते हैं तो बाकी सब भी हमारे में स्वतः विकसित होने लगेंगे क्योंकि हमारा संतुलित अवस्था में रहने से संयम की पालना शुरू हो जाती है। उपरोक्त तथ्यों से यह माना जा सकता है कि संयम से हमारी सोच सकारात्मक होगी ही। फलस्वरूप हमारे में बल व बुद्धि की वृद्धि होगी क्योंकि जब हम प्रसन्नचित्त रहते हैं तो हमें अपने आप अंदरुनी ताकत मिलती है।

यह तो ज्ञात हो गया कि, संयम से अपार खुशियाँ व सुख सुलभ होता है लेकिन अब सवाल यह कि, संयम कैसे विकसित करें ? इसलिए सबसे पहले यह समझ लें कि, इन्द्रिय संयम से ब्रह्मचर्य विकसित होगा, वहीं वाणी के संयम से विद्वता झलकेगी और मन का संयम दोनों में सामंजस्य बैठाने में सहायक होगा, परन्तु जीवन सब तरह से सुखमय तो तभी होगा, जब हम नैतिक शिक्षा अनुसार आचरण करेंगे। इसलिए, नैतिक मूल्यों को ध्यान में रख हमें अपने आचरण में संयम बरतते हुए जीवन जीना होगा।

ध्यानार्थ कि, नैतिकता का प्रथम उद्देश्य अपने निजी हित के स्थान पर समाज के कल्याण को अधिक महत्व देना माना गया है। इसलिए, संयम और नैतिकता के चलते मनुष्य के स्वाभाविक विकार दूर होते हैं। इसके चलते मनुष्य क्षीर, गम्भीर बनता है और निर्णय लेने में गलती की सम्भावना बहुत ही कम होती है, बल्कि हम कह सकते हैं कि गलती हो पाना मुमकिन ही नहीं है।

ऊपर वर्णित से यह स्पष्ट है कि जबसे हम अपने निजी हित के स्थान पर समाज के कल्याण को अधिक महत्व देना शुरू कर देंगे तब हम जीवन में सादगी, संयम, अनावश्यक खर्चों पर नियंत्रण कर पाने में सफल हो सकेंगे। जिसके फलस्वरूप हम सद्कार्य के लिये आवश्यकता के समय पर जो भी संभव हो, जितना भी संभव हो दे पायेंगे । इस तथ्य को प्रमाणित करने के लिये आप सभी प्रबुद्ध पाठकों के लिये कुछ निम्न ऐतिहासिक साक्ष्य प्रस्तुत है -

1. राजस्थान राजपूतानी शौर्य भूमि बीकानेर के मूल निवासी वैश्य अमर चंद बांठिया जी की कीर्ति से प्रभावित होकर ग्वालियर की तत्कालीन सिंधिया रियासत के महाराज ने उनको राजकोष का कोषाध्यक्ष बनाया था। उस समय ग्वालियर का गंगाजली खजाना की जानकारी केवल चुनिन्दा लोगों को ही थी। बांठिया जी भी उनमें से एक थे। यहाँ यह बात गौर करने की है कि उस समय के चलन के मुताबिक गंगाजली खजाना से कोई भी कुछ भी निकाल ही नहीं सकता था फलस्वरूप खजाने की सदैव वृद्धि होती रही।

1857 का स्वातंत्र समर के समय झांसी की महारानी लक्ष्मीबाई अपने योग्य सेनानायक राव साहब, तात्या टोपे और रानी बैजाबाई एवं अपने सैन्य बल के साथ

अंग्रेजों से लोहा लेते हुये ग्वालियर को अपने अधिकार में ले, अंग्रेजों के सहयोगी शासक को वहां से हटने को विवश तो कर दिया था, किन्तु उनकी सेना को कई महीनों से न तो वेतन प्राप्त हुआ था और न हीं उनके भोजन आदि की समुचित व्यवस्था हो पा रही थी अर्थात अर्थाभाव के कारण स्वाधीनता समर दम तोड़ता दिखाई दे रहा था। इस स्थिति को समझते हुये बांठिया जी ने अपनी जान की परवाह न कर महारानी लक्ष्मीबाई को अपनी सारी जमा पूँजी तो समर्पित की ही साथ ही ग्वालियर का राजकोष भी उनके सुपुर्द कर दिया। यह धनराशि उन्होंने 8 जून1959 को उपलब्ध कराई। उनकी मदद के बल पर वीरांगना लक्ष्मीबाई दुश्मनों के छक्के छुड़ाने में सफल रहीं थी ।

2. एक मराठा सैनिक आपा गंगाधर ने 800 साल पहले पुरानी दिल्ली के चाँदनी चौक क्षेत्र में प्रसिद्ध गौरी शंकर मंदिर निर्मित किया गया था । एक बार एक बड़े वैश्य व्यापारी लाला भागमल जी को पता चला कि क्रूर, निर्दयी औरंगजेब ने इस मंदिर को तोड़ने का आदेश अपने सिपाहियों को दिया है तो उन्होनें औरंगजेब से सीधा सीधा पूछाः बताइये तुझे कितना जजिया कर चाहिए? कीमत बोलिये , लेकिन मन्दिर को कोई हाथ नही लगाएगा , मन्दिर की घण्टी बजनी बन्द नही होगी !

कहते हैं इसके जबाब में उस वक़्त औरंगजेब ने औसत जजिया कर से 100 गुना ज्यादा जजिया कर , हर महीने माँगा था। ओर वैश्य व्यापारी लाला भागमल जी बिना माथे पर शिकन लाये हर महीने उतना जजिया कर औरंगजेब को दान के रूप में दिया था। इस तरह वैश्य व्यापारी लाला भागमल जी ने उन आततायी से मन्दिर को बचाया यानि मन्दिर को छूने नहीं दिया। इस घटना के कई दशक बाद इसी गौरी-शंकर मंदिर का जीर्णोद्धार सेठ जयपुरिया नाम के शिव भक्त ने 1959 में कराया था। इस तरह मराठा सैनिक आपा गंगाधर के समय से लेकर आज तक मन्दिर की घण्टियाँ ज्यों की त्यों बज रही हैं।

3. सरहिंद के नवाब वजीर खां ने गुरु गोबिंद सिंह जी के दो पुत्रों को दीवार में चिनवाने के बाद उनके अर्थात दोनों साहिबजादों व दादी माँ, जो 6 पूस से 13 पूस, तदनुसार 21 दिसम्बर से 27 दिसम्बर वाले 7 दिनों में शहीद हुये, के पार्थिव शरीरों को अंतिम संस्कार के लिए जगह नहीं दे रहा था । तब वैश्य व्यापारी टोडरमलजी ने उन तीनों महान विभूतियों का अंतिम संस्कार के लिए सिर्फ 4 वर्ग मीटर स्थान 78000 हजार सोने के सिक्के जमीन पर खडे कर वह जगह मुगल सल्तनत से खरीद स्वयं ही उन तीनों महान विभूतियों का अंतिम संस्कार अपनी पत्नी के सहयोग से फतेहगढ़ साहिब में सम्पन्न किया था।

4. हल्दी घाटी के युद्ध में पराजित पराक्रमी महाराणा प्रताप जब अपने परिवार के साथ जंगलों में भटक रहे थे तब दानवीर वैश्य भामाशाह मातृ-भूमि की रक्षा के लिए महाराणा प्रताप के लक्ष्य को सर्वोपरि मानते हुए अपनी सम्पूर्ण धन-संपदा अर्पित कर दी। जिसके चलते महाराणा प्रताप में नया उत्साह उत्पन्न हुआ और उन्होंने पुनः सैन्य शक्ति संगठित कर मुगल शासकों को पराजित कर फिर से मेवाड़ का राज्य प्राप्त कर लिया था ।

महाराणा प्रताप जी भी जब महल छोड़कर जंगल चले गए थे, व उन्हें अकबर के विरुद्ध नई सेना का गठन करना था , उस समय भी बनिया समाज के श्री भामाशाह जी ने अकूत धनराशि से महाराणा प्रताप जी को भरपूर सहयोग किया था। ऐसे विरल दानवीर वैश्य भामाशाह के लिये ही निम्न पंक्तियाँ कही गयीं थी -

वह धन्य देश की माटी है, जिसमें भामा सा लाल पला। उस दानवीर की यश गाथा को, मेट सका क्या काल भला ।।

5. इसी तरह सामान्य लेखक के रुप में अपना जीवन शुरू करने वाले वैश्य राजा टोडरमलजी (इनको 21 वर्ष की उम्र में बादशाह शाहजहाँ ने 'राजा' की उपाधि से नवाजा था) ने पंडित नारायण भट्ट की प्रेरणा से उत्तर प्रदेश के वाराणसी शहर स्थित भगवान शिवजी अर्थात काशी विश्वनाथ मंदिर, जिसे वर्ष 1447 में इसे जौनपुर के सुल्तान महमूद शाह ने तुड़वा दिया था, को 1585 में पुनःनिर्माण करवा सनातन धर्म रक्षार्थ एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया ।

इसी क्रम में यह भी बताना चाहूँगा कि प्रायः सभी तीर्थ स्थानों में आपको किसी भी वैश्य द्वारा स्थापित धर्मशाला मिलेगी ही हाल ही के वर्षों में वैश्य समाज अस्पताल , विद्यालय, विश्वविद्यालय वगैरह भी छोटे से छोटे जगह पर स्थापित किये जा रहे हैं । इन सब कारणों से हम कह सकते हैं कि वैश्य समाज धर्म कर्म , समाज कल्याण के साथ साथ राष्ट्र उन्नति के लिये कुछ भी करने को सदैव तत्पर रहते हैं क्योंकि उनके जिन्दगी जीने के मापदण्ड कुछ इस प्रकार होते हैं -

जिन्हें सेवा की धुन हो, कुछ अलग होते हैं
दुनिया में ।
उन्हें तकलीफ पाकर भी, बहुत सुकून
मिलता है ।।

सार यही है कि, संयम और नैतिकता के मिश्रण से नश्वर शरीर के मौज-मस्ती में फालतू खर्च न कर मितव्ययिता बरत सेवा , दान , उत्सव , देशहित में सदा अग्रणी भूमिका निभाने के साथ साथ क्षमा, आत्म-नियंत्रण, चोरी न करना, पवित्रता, इन्द्रिय-संयम,बुद्धि, विद्या, सत्य, धैर्य, क्रोध न करना जैसे गुण स्वतः ही विकसित होंगे।अर्थात सब पर दया करना, कभी झूठ नहीं बोलना, बड़ों का आदर करना, दुर्बलों को तंग न करना, चोरी न करना, हत्या जैसा कार्य न करना, सच बोलना, सबको समान समझते हुए उनसे प्रेम करना, सबकी मदद करना, किसी की बुराई न करना आदि कार्य अपनाते हुए जब हम जीवन जीते हैं, तो समाज में सम्मान पाते हैं और परोक्ष रूप से हम जहाँ भी रहेंगे, हमेशा भारत का गौरव बढ़ाते ही रहेंगे।

माँ

सुनील कुमार माथुर
जोधपुर राजस्थान

मां शब्द दिखने में काफी छोटा है लेकिन इसकी महानता अधिक है। चूंकि मां ममता, वात्सल्य, प्रेम, स्नेह, त्याग, संयम, धैर्य, सहनशीलता की प्रतिमूर्ति होती है। गागर में सागर की तरह उसका प्यार हैं। मां हैं तो हम हैं। मां बिना यह जीवन व संसार सुना हैं। सारे रिश्ते नातें छोटे लगते हैं।

मां शब्द दिखने में काफी छोटा है लेकिन इसकी महानता अधिक है। चूंकि मां ममता, वात्सल्य, प्रेम, स्नेह, त्याग, संयम, धैर्य, सहनशीलता की प्रतिमूर्ति होती है। गागर में सागर की तरह उसका प्यार हैं। मां हैं तो हम हैं। मां बिना यह जीवन व संसार सुना हैं। सारे रिश्ते नातें छोटे लगते हैं।

मां है तो ननिहाल है

मां है तो ननिहाल है, वरना ईंट पत्थर कि दीवारे हैं। सारे रिश्ते नातें सिमट जाते है। मां की तुलना हम किसी से भी नहीं कर सकते हैं, क्योंकि मां तो मां ही होती है। लेकिन आज के समय में यह देखकर बेहद दुःख हो रहा है कि जिस मां बाप ने हमें पाल-पोस कर बडा किया उन्हें ही कुछ नालायक बेटे वृध्दाश्रम में पहुंचा कर अपने को कर्तव्य मुक्त समझ रहे हैं।

अंहकार दीमक के समान

अरे, मूर्खो ! मां बाप को वृध्दाश्रम पहुचां कर न तुम सुखी हो और न वे सुखी है। अरे मूर्खो अंहकार दीमक के समान है जो इंसान को भीतर से खोखला कर देता हैं। मां बाप हमारे गुरू है। ईश्वर तुल्य है। हमें ज्ञानवान, संस्कारवान और चरित्रवान बनाते है। हम तो उनके चरणों की धूल भी नहीं है। चूंकि वे अपनी संतान के सुख के लिए अपने जीवन के अंतिम पड़ाव तक प्रयासरत रहते हैं। लेकिन हम मूर्ख उन्हें वृध्दाश्रम में छोड रहे हैं।

मां बाप का ऋण

मां बाप का ऋण हम कभी भी नहीं उतार सकते। भले ही हम सात जन्म लेकर उनकी सेवा क्यों न कर लें। मां ने हमें नौ माह गर्भ में रखा। हमारे जन्म के समय उसने अथाह दुःख उठाया और हमारा लालन-पालन किया। खुद गीले में सोई और हमें सूखे में सलाया। खुद भूखी रही और हमें पौष्टिक भोजन कराया। खुद ने फटे पुराने कपड़े पहने और हमें नये कपडे पहनाये। अगर मां के गुणों का वर्णन करने लगे तो न जाने कितने पन्ने रंगने पडे फिर भी उनके उपकारों का हम सही सही आंकलन नही कर पायेगे, चूंकि मां तो गुणों की खान हैं। जहां मां है वही ममता, वात्सल्य, प्रेम और विश्वास का सागर हैं।

बच्चे प्यार को तरस रहे हैं

मगर दुःख इस बात का है कि आज संयुक्त परिवार बिखर रहे हैं। बच्चे माता-पिता की बात नही सुन रहे है। वे माता-पिता को वृध्दाश्रम में छोड रहे है। उनके खुद के बच्चे नौकरों की देखरेख में पल रहे हैं आज नन्हें नन्हें बच्चे अपनी नाना नानी, दादा दादी के प्यार को तरस रहे हैं। आदर्श संस्कारों से वंचित हो रहे हैं। उनके मुख से मनोरंजन की प्रेरणादायक कहानियां सुनने को तरस रहे है।

मां के नाम पर एक छलावा

इतना ही नहीं इन बाल गोपालों के माता-पिता दोनों नौकरी कर रहे हैं। बच्चों को नहलाना, रखना, स्कूल भेजना, भोजन कराना आदि आदि बातें नौकरों के भरोसे हो तो बच्चों में कहां से प्यार, स्नेह और मान सम्मान व आदर्श संस्कार आयेगें। जब दोनो पति-पत्नी नौकरी करे तो घर का खाना कौन बनाएगा। नतीजन आज होटलों की भरमार हो गई मां जैसा भोजन, साग, रोटी, सतू, मिष्ठान, नमकीन पिज़्ज़ा, पास्ता, छोला भटूडा और न जानें और क्या क्या बिक रहा हैं। जो मां के नाम पर एक छलावा हैं आदर्श संस्कारों के अभाव में आज की युवा पीढ़ी शानो-शौकत, फैशन, परिवर्तन के बहाने लूट रही हैं व आदर्श नैतिक मूल्यों, संस्कारों, भारतीय सभ्यता और संस्कृति को भूलते जा रहे है व पाश्चात्य संस्कृति के रंग में रंग कर छोटे व फटे हुए वस्त्र पहन रहे है, अंग प्रदर्शन कर रहे हैं जो हमारी संस्कृति के विरूद्ध है और इससे परिवार व समाज में नकारात्मक सोच आती है व राष्ट्र पतन की ओर जाता हैं।

मां जैसी ममता कहां हैं

कहने को भले ही ये चीजे मां के नाम पर बिक रही है लेकिन इन खाने पीने की चीजों में मां जैसा प्यार, स्नेह, लाड, दुलार, ममता, शुद्धता, साफ सफाई, पौष्टिकता कहां है। इन्हें खाकर आप अपना पेट तो भर सकते है, लेकिन मन नहीं भरता चूंकि जैसा मां बनाती हैं वैसा स्वाद व गुणवता कहां हैं। यही कारण

है कि जब हम बाहर का भोजन खाते है तो प्रायः किसी न किसी रोग से ग्रसित रहते हैं। चूंकि बाजारों मे बिकने वाले खाधान्नों मे गुणवता की कोई गारंटी नहीं होती है। उनका ध्येय मात्र येन केन प्रकारेण अधिक मुनाफा कमाना ही होता हैं।

माता-पिता ईश्वर तुल्य

अतः युवाओं को चाहिए कि वे अपने से बडों का मान सम्मान करें। माता-पिता का सम्मान करे। उन्हें समय दे। घर का बना भोजन प्यार व स्नेह के साथ ग्रहण करे। इस धरती पर हमारे माता-पिता हमारे भगवान है। इनका सम्मान ईश्वर का सम्मान हैं ये हमारे शुभ चिंतक है, शत्रु नहीं। अगर कभी हमारे गाल पर दो थप्पड भी लगा दे तो उसके मूल में हमारा भला ही होगा। तभी तो कहा गया है कि जो माता-पिता की व अपने से बडों की सेवा व मान सम्मान करता है तो फिर उसे मंदिर जाने की जरूरत नहीं है। चूंकि माता-पिता पिता के चरणों में ही सभी तीर्थ हैं। पूरा जन्नत है। अतः भूल कर भी माता-पिता का अपमान न करे व किसी का भी बिना वजह दिल न दुखाएं।

शब्दों के बाण बहुत ही घातक

कहते है कि शब्दों के बाण बहुत घातक होते है। हथियार से किये घाव दवा से व सही समय पर सही उपचार से ठीक हो जाते है। मगर जुबान से निकले शब्द इतने घातक होते है कि उनका घाव किसी भी दवा या उपचार से ठीक नहीं होते हैं। इसलिए जब भी बोले तब सोच समझ कर सही बोले। अनावश्यक बातें कभी न करें। माता-पिता के पैर की ठोकर भी हमें कभी लग जाये तो वह ठोकर हमारे लिए हितकारी होती है। उससे हमें एक नई सोच, दिशा, ऊर्जा, नयी प्रेरणा व सीख ही मिलती हैं। दुत्कार नहीं। अरे मूर्खो, ! मां बाप की वेल्यू उनसे पूछो जिनके मां बाप इस नश्वर संसार में नहीं है। मां बाप का सम्मान करे। उनके दर्शन करना ईश्वर के दर्शन करना हैं। वे इस धरती पर परमात्मा के सच्चे प्रतिनिधि हैं। अतः उनका अपमान ईश्वर का अपमान हैं। हमारे माता-पिता हमारे अनमोल हीरे है, इसलिए हमें चाहिए कि उस हीरे की चमक को कभी भी धूमिल न होने दें।

अभी जिंदा हूं मैं

श्यामल बिहारी महतो
बोकारो, झारखंड

सुबह के उजाले में भी एक क्षण भूत सा लगा था वह। पर न वह भूत था न भविष्य। पूरा का पूरा वर्तमान था वह। नाम था मनसा ! हां, मनसा तुरी- पूरा नाम था।

लाठी के सहारे चलकर वह मेरे घर तक पहुंचा था। दाढ़ी बढ़ी हुई और आंखें भीतर की ओर धंसी हुई, जिनमें सवाल ही सवाल तैर रहे थे। पिछले छः माह से लापता था वह ! मुझे एक एक कर सब कुछ याद आता चला गया था।

उस समय बदली-बहाली का जोर था। धारा (9.4.0) अर्थात कंपनी का एक ऐसा प्रावधान, जिसके तहत कोई मां, कोई बाप अपने बेटे को अपनी जगह नौकरी देकर अपने बाकी जीवन को सुखमय बनाने और बुढ़ापे का सहारा ढूंढने में लगे हुए थे। जिनका सगा बेटा नहीं, वे दामाद को ही अपनी नौकरी देने की भाग दौड़ करते नजर आ रहे थे। बेटी खुश-दामाद ख़ुश, ताकि भविष्य खुशहाल हों।

नौकरी और जीवन में बड़ा गहरा संबंध होता है। अपने आश्रित को नौकरी देकर,हर मां -बाप, अपने घर -परिवार और पोते -पोतियों के साथ हंसी-खुशी का जीवन जीने की तमन्ना रखते हैं। यहां जाना है, वहां जाना है, बेटे की शादी, बेटियों की शादी, नतनी का वर ढूंढना, पोती की शादी के लिए योग्य दूल्हे की खोज करना,घर - परिवार ठीक ठाक चलने से ही ये सब हो पायेंगे।

लेकिन मनसा ने परिस्थिति वश बेटे को नौकरी देने का मन नहीं बनाया था। बल्कि ऐसा करने के लिए मनसा को विवश किया गया था। मजबूर होना पड़ा था उसे।

वैसे मनसा का परिवार बहुत बड़ा नहीं था। भाईयों से अलग होने के बाद और गर्भपातों की गिनती छोड़ दें,तो दो बेटे, एक बेटी और स्वयं पति-पत्नी, कुल मिलाकर पांच ही सदस्य तो थे। परन्तु पांचों का पांच रूप। पांच जीवन

दर्शन। जीने के सबके अपने अपने तौर -तरीके। उस पर अपनी -अपनी जद्दोजहद भी ! मनसा ने इसी क्रम में एक दिन बताया था कि कैसे और कितनी मुश्किलों से लड़कर यह नौकरी हासिल की थी उसने और उसी नौकरी को परिवार के भविष्य का नाम देकर और एक अप्रत्यक्ष दबाव के तहत छीनने का जी-तोड़ प्रयास किया जा रहा था। सही अर्थों में कहा जाए तो कमरतोड़ मेहनत और लगन के बल पर ही मनसा इस मुकाम तक पहुंचा था। हां, शुरू में मनसा पढ़ा-लिखा नौकरी करना चाहता था, टेबुल -कुर्सी पर बैठ कर, बाबुओं जैसे रौब के साथ। पर उस जमाने में जब दलित -पिछडों के जीवन का ही अपना कोई भविष्य नहीं होता था। तो ऐसे में भला मनसा को कौन काम देता,वह भी ऐसा काम ! फिर भी मनसा ने हिम्मत नहीं हारी थी।

मनसा का जन्म एक गरीब तुरी परिवार में हुआ था। उसके अलावा घर में और पांच भाई -बहनें थीं। पर उन सबको रखने के लिए भी उसके बाप के पास ढंग का एक घर नहीं था। तब इंदिरा आवास का जमाना भी नहीं था। किसी तरह एक झोपड़ी सा खड़ा कर रखा था उसके बाप ने। कुल मिलाकर दूर से ही सूअरबाड़े की तरह दिखता था। उसी में मां बच्चे जन्म देती और उसी में बाप बच्चे पाल रहा था।

वैसे तो मनसा का गांव महतो बहुल था और पूरे गांव में मुखिया नन्दलाल महतो का दबदबा था। उसकी सहमति के बगैर गांव में कोई अहम काम नहीं हो सकता था। किसी तुरी-महरा को नया काम शुरू करने के पहले मुखिया से इजाजत लेनी पड़ती थी। मनसा के बाप को भी मुखिया से अनुमति लेनी पड़ी- गांव के स्कूल में मनसा का नाम लिखवाने की अनुमति। मनसा पढ़ना चाहता था और स्कूल जाने की ज़िद में वह सप्ताह दिन से जिद पसारे - रट लगाए हुए था।

लेकिन मुखिया सीधे तौर पर हां कर दे, तो यह मुखिया पद की तोहीन ही न होती। फिर मुखिया किस बात का? सवाल बड़ा था। उन्होंने हां तो कर दिया। लेकिन बदले में मनसा के बाप को उस वर्ष मुखिया के खेतों में बेगार खटना पड़ा था। सारा गांव इस बात का गवाह था। जब भी किसी तुरी-महरा या घटवार के बच्चों को स्कूल जाना होता, उनके मां बाप को मुखिया के दरवाजे आकर सर झुकाना ही पड़ता था। भले ही स्कूल का खर्च और किताब-पेन्सिल का प्रबंध बाद में हो। शिक्षा के प्रति ऐसी सामंती व्यवस्था दूर दूर तक दिखाई नहीं पड़ती थी। और मनसा के घर में गरीबी इतनी थी कि पैरों में चप्पल की बात तो दूर, पैन्ट -शर्ट भी फटे होते

थे। हां, मनसा पढ़ने में जितना तेज था, उतना ही बढ़िया फूटबॉल खेलता था। खेल के दौरान यूं लगता था जैसे मनसा के पैर और फूटबॉल के बीच कोई चुम्बकीय सम्बन्ध हो। इस कारण गांव के कई लड़के उसके साथी बन गये थे। वे ही मनसा को समय समय पर मदद भी करते थे। कभी किताब तो कभी कॉपियां, तो कभी कपड़े भी बनवा देते थे।

परजीवियों जैसा छात्र-जीवन और पिसते -कुचलते स्वाभिमान के बीच एक दिन मनसा ने माध्यमिक परीक्षा दी और पूरे गांव में एक वही प्रथम आया। मुखिया को मालूम हुआ तो हाथ मल कर रह गया। वहीं कई कानों को विश्वास नहीं हुआ। कई आंखें फटी की फटी रह गयीं। किसी ने सराहा तो किसी के मन में सांप लोट गया तो बहुतों ने सुना मनसा की इस शानदार उपलब्धि के बारे में। महायुद्ध की तरह सरपट दौड़ गयी थी, यह खबर गांव के एक कोने से दूसरे कोने तक। लेकिन फटेहाल -तंगहाल मनसा अपनी पढ़ाई को आगे न ले जा सका। मां बाप ने उसे कहीं भी काम करने को लगभग विवश सा कर दिया था। और तब किशोरावस्था में उसे परिवार तथा नौकरी की चिंता ओढ़ लेनी पड़ी।

इसी बीच मनसा एक दिन कुछ लोगों के साथ नजदीक के खदान में काम करते देखा गया। कोयला-पत्थर-काटने-फेंकने से लेकर कोयला का पौवा-नापी और ब्लास्टिंग तक का काम। मुखिया नन्दलाल महतो को इस बात का पता चला। कई दिनों से मुरझायी मूंछों पर जैसे फिर से ताव आ गया। अवचेतन में कुछ दिनों से रेंग रहे लिजलिजे कीड़े को जैसे गति मिल गयी,देर तक कहकहों में डूबे रहे। वहां उपस्थित लोगों ने सुनी उनकी वह मधुर वाणी ' फस्ट आकर मनसा का कौन सा मनसा पूरा हो गया और कौन सा मनिजर बन गया? अरे,बजेबे - भूतवां हियां जरूर, पर खायल तो मिलतो - मूतवां हियां ही ..!'

समय का पहिया, अपनी गति से घूमता रहा। दिन महीने साल बदलते रहे। दस बारह साल के युग जैसे समय में बहुत कुछ बदला। बहुत कुछ घटा। बहुत कुछ बढ़ा भी। समय से पहले मनसा तुरी का बाप मर गया। छः माह बाद मां भी चल बसी। अब मनसा ही घर का सब कुछ था।

उन्हीं दिनों खदानों का नेशनालाइजेशन हुआ। इस बार भी दफ्तर में टेबुल -कुर्सी पर बैठ कर काम करने की मनसा की इच्छा पूरी न हो सकी। हां, उसे सूट-फायर के रूप में जरूर बहाल कर लिया गया। घर और बाहर दोनों जगह अब मनसा की जिम्मेवारी बढ़ गयी थी। उसने धैर्य से काम लिया। भाई-बहनों की शादी के पहले उसने पूरे कुनबे को रहने के काबिल एक घर बनाया। फिर उसने अपने बच्चों को पढ़ने स्कूल भेजा। हां, इस बार अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए किसी मुखिया की ' हां ' की जरूरत नहीं पड़ी थी।न किसी के यहां उसे बेगार खटने पर विवश होना पड़ा था।

पर यहीं से घर में खटर -पटर भी शुरू हो गई थी। कुछ भाईयों की पत्नियों के कारण और कुछ उसकी पत्नी के कारण। मनसा चाहता था घर न टूटे,पर ऐसा न हो सका। भाईयों की शादी होती गयी,उधर घर में बर्तन से बर्तन टकराते गये। बर्तनों के टकराव ने एक दिन दीवारों को हिला दिया और घर में बंटवारे की लकीर खींच गयी।

घर अलग हो जाने से भले ही किसी को सुख पहुंचा हो,पर मनसा के हिस्से में तो दुःख ही दुःख आये। घाटा ही घाटा। पहले भी रीता था,अब और रीत गया था मनसा। अवसाद और दुःख के बादल भी उतने ही घने हो गये थे।

यह दुःख तब और बढ़ गया,जब बड़ा बेटा रति तुरी पढ़ाई छोड़ ताश का शौकीन बन गया। वहीं बेटी स्कूल जाना छोड़ मां की पिछलग्गू - नकचढी बन गयी। मनसा चाहता था कि उसके बच्चे पढ़ाई में उससे भी आगे जाएं, पर कहां हो पाया यह सब। छोटा बेटा भी पढ़ाई के प्रति लापरवाह ही निकला। यह देख - सुन मनसा को अपार दुःख होता। लाचार मनसा किसी एक को भी सही रास्ते पर ला पाने में नाकाम रहा। इन सबके पीछे पत्नी परबतिया देवी का शह काम कर रहा था। घर में अब उसी का राज़ चलता था।

बदलते सामाजिक माहौल ने जहां मनसा के बच्चों को बाहर से आत्मकेंद्रित कर दिया था, वहीं परिवार में शनैःशनैः उगते स्वार्थ ने एक दूसरे को एक दूसरे के प्रति शंकालु भी बना दिया था।

उस दिन भी ब्लास्टिंग के दौरान धड़ाम -धड़ाम कर खदान में आवाजें हो रही थीं। चारों तरफ कोयला -पत्थर,टूट टूट कर हवा में उड़ते नज़र आ रहे थे और धूल-गर्दा से पूरी खदान पट सी गयी थी। कहीं कुछ नज़र नहीं आ रहा था। यहां तक कि ब्लास्टिंग करने वाला मनसा भी दिखाई नहीं पड़ा। लोगों को मालूम था, कि मनसा आज कल पीने लगा है। उस दिन भी उसने पी रखी थी। ब्लास्टिंग के घंटे भर बाद भी जब मनसा नहीं लौटा, तो कानों - कान यह खबर लोगों के बीच फैल गयी। उसके बाद ही लोगों ने इधर -उधर तलाशना शुरू कर दिया। खदान के अलावा झाड़ियों में भी खोज शुरू हुई। घंटा भर बाद जब धूल-गर्दा थम गया, तभी मनसा लहूलुहान एक झाड़ी में बेहोश मिला।

घंटों बाद ही मनसा को होश में लाया जा सका। लेकिन रह -रह कर बेहोशी के दौर भी जारी रहा। इससे न सिर्फ डाक्टरों की परेशानी बढ़ी, बल्कि कोलियरी प्रबंधन की नींद भी उड़ गयी थी। ब्लास्टिंग अफसर पहले ही फरार हो चुका था। उस पर बिना बालू ब्लास्टिंग करने और ठेकेदार के साथ सांठ-गांठ कर फर्जी बिल उठवाने का गंभीर आरोप पहले भी लग चुका था। इस वक्त मजदूरों का सबसे अधिक गुस्सा उसी पर था।

महीने भर बाद मनसा जब अस्पताल से बाहर आया, तो जैसे वह कोई और मनसा हो। ब्लास्टिंग के साथ कोयला गर्द और धुंए के गुब्बारे उसकी आंखों में तैर रहे थे। बल्कि कसैले धुंए तथा बारूद मिश्रित कोयले के गर्द मनसा के मन में कहीं गहरे और गहरे पैठ चुके थे। हमेशा कुछ न कुछ बोलते और गुनगुनाते रहने वाला मनसा के जीवन पर ब्लास्टिंग के बाद की सी चुप्पी और खामोशी छा गयी थी।

अब मनसा का खदान का काम पीछे छूट चुका था। वह हाजरी बनाता और वहीं हाजरी घर के बाहर चौकोर बड़े पत्थर पर घंटों बैठा

रहता। अब अफसरों के सामने समस्या आयी कि इसे किस विभाग में रखा जाए ताकि इसका तनख्वाह बन सके। लेकिन मानसिक रूप से अस्वस्थ मनसा को रखने के मामले में सभी अधिकारी होशियार निकले।

कभी का अच्छा फूटबॉल खिलाड़ी रहा मनसा,अब खुद फूटबॉल बन चुका था। फिर तो कभी उत्खनन विभाग में तो कभी विधुत विभाग में, तो कभी सिविल विभाग में उछाला जाने लगा मानसा। परिणाम यह हुआ कि लगी हाजरी के बावजूद उसके पंद्रह दिनों का वेतन कट गया। परबतिया ने जाना तो खौलते पानी की तरह पति मनसा पर उबल पड़ी' पंठवा,मर ही क्यों नहीं गया। अगर ऐसी हालत रही तो एक -एक कर घर के सारे समान बेचने पड़ेंगे ..!'

तभी एक दिन फूचा महतो ने परबतिया के कान में कहा' चिल्लाती क्यों हो भाभी, अभी नौकरी का फार्म भराया जा रहा है,तुम भी मनसा दादा की जगह रति के नाम फार्म भरवा दो। कंपनी का नियम है भी।'

परबतिया को और क्या चाहिए था,अंधा मांगे दो आंखें!

वैसे भी मनसा से घर में कोई खुश नहीं था। सभी की यही इच्छा थी कि मनसा जैसे जीव से मुक्ति मिल जाए,चाहे जैसे भी हो और जब फूचा महतो ने परबतिया के सामने यह प्रस्ताव रखा, तो उसकी आंखें खुल गयीं। इस प्रस्ताव के साथ और भी एक प्रस्ताव था जिसे परबतिया खूब समझती थी और जिस पर उसने मौन स्वीकृति भी तत्काल दे दी थी।

इधर रति अब शराब भी पीने लगा था। यही नहीं, कभी - कभी तो रति बाप मनसा की गर्दन पर हाथ भी फेरने लगा था। सच पूछा जाए तो मनसा के लिए उसके हृदय में अब घृणा ही घृणा पलने लगी थी। उन्हीं दिनों उसके दोस्त मोहन के पिताजी की एक सड़क दुघर्टना में मृत्यु हो गयी, जिसके बदले मोहन को तुरंत नौकरी मिल गयी थी। नशे की हालत में अक्सर रति अपने शराबी मित्रों से कहता ' पता नहीं मेरे लिए वह शुभ दिन कब आएगा..!'

हालांकि मनसा को वेतन में जो भी मिलता ले जाकर वह पत्नी को ही देता -सारा का सारा! फिर भी घर में वह बिलकुल उपेक्षित और अकेला महसूस करता। अन्ततः रति को नौकरी देने के लिए सहमत हो जाना पड़ा था उसे।

और एक माह बाद ही मेडिकल बोर्ड बैठी थी। मनसा का भी उस दिन मेडिकल हुआ। परन्तु जब फिट-अनफिट की सूची निकली, तो उसमें मनसा का नाम फिट लिस्ट पर टंगा था। देखकर लगा था जैसे मनसा खुद रस्सी पर टंगा हो अर्थात, कंपनी ने मनसा को काम करने योग्य पाया था। रति को अब मनसा के जीते जी नौकरी नहीं मिल सकती थी।

पर जैसी कि आशा थी, सूचना -पट के सामने ही खड़े कम्पनी के इस निर्णय का परिणाम भी दिख गया। मनसा को रति और परबतिया दो गिद्ध की तरह दिखे। एक दूसरा ही चेहरा उग आए थे उन दोनों के चेहरों पर। मनसा इधर-उधर देखने लगा था। करता भी क्या? फिर फिट अपनी इच्छा से तो हो नहीं रहा था। डाक्टर की मर्जी, जो चाहे लिख दे। तभी मनसा की सोच को विराम लगा था। कारण परबतिया ने उसे ट्रेकर की ओर धकियाया था।

और उस दिन मैं एक जरूरी फाइल में उलझा था। सामने कई मजदूर अपनी बात रखने के लिए आगा-पीछा,ठेला-ठाली हो रहे थे। यह देख एक खीझ-सी उठी थी मन में। कैसे -कैसे मजदूर हैं कोलियरी में! आकर बैठा नहीं कि माथे पर सवार। पियून पंचानन बाहर एक नौजवान से बातें कर रहा था। उसकी दाढ़ी अपेक्षाकृत कुछ बढ़ी हुई थी। पर आंखों की चमक उतनी ही गहरी थी। मैंने दूर से ही देखा, वह रति था, मनसा का बड़ा बेटा। पंचानन ने कुछ दिन पहले बताया था कि मनसा अब इस दुनिया में नहीं रहा।

कई दिनों की अफवाह और मनसा को लेकर टुकड़ों -टुकड़ों में मिल रही खबरों के बाद आज उसका मृत्यु प्रमाण -पत्र भी मेरी टेबुल पर पड़ा था। पर पता नहीं क्यों यह मृत्यु प्रमाण-पत्र मुझे एक साज़िश प्रमाण पत्र सा लग रहा था।

कभी मैं मृत्यु प्रमाण-पत्र को देखता, कभी सामने खड़े रति को। थाने से मिली मृत्यु प्रमाण-पत्र के आधार पर ग्राम सेवक के द्वारा ' फार्म ' टेन निर्गत किया गया था और दोनों की ही छाया-प्रतियां दरखास्त के साथ अटैच थीं। एक पल के लिए मेरी आंखों के सामने मनसा का चेहरा उभर आया, वहीं रति का चेहरा पल -पल बदल रहा था-गिरगिट की तरह! मैंने भी गहरे भाव से कहीं से महसूस किया था मनसा की मृत्यु को,क्षण भर के लिए ही सही।

' कब उसका क्रिया-कर्म है ..?' उनसे पूछा था।

' कल ही दस कर्मा है..!' रति ने हकलाते हुए कहा था।

' बारहवां भी करोगे ही ..?' फिर पूछा था।

' नहीं..!' उसका जवाब था।

' ठीक है, तुम जाओ। ' आगे और पूछना जरूरी नहीं समझा था।

मनसा मर गया? पर कहां? और कैसे? न मैंने रति से पूछा और न उसने बताया,पर उत्तर तो चाहिए ही था। तभी कैंटीन में चेतो घटवार मिल गया। मनसा का पड़ोसी। आलूचोप खा रहा था। उसी ने बताया था कि थाने से मिली लाश काफी क्षत-विक्षत और कुचली हुई थी। लाश मनसा की भी हो सकती थी, और किसी और की भी। लाश ऐसी हालत में थी कि उसका सही-सही पता करना, उतना ही मुश्किल था। सुनने में आया था कि लाश के कपड़े मैले-कुचैले और फटे हुए थे। वह हर तरह से मलबे से निकाली लाश की तरह लग रही थी फिर भी थानेदार ने कहा था कि लाश मनसा की है, ले जाकर जला दो। पर कुछ प्रश्न थे जो अब भी अनुत्तरित थे- क्या गांव के मुखिया का भी यही कहना है? मनसा के घरवाले क्या कहते हैं? इस दुर्घटना की पूरी जानकारी किसी के पास नहीं थी।

इन सबसे अलग रति खुश था।बाप की जगह नौकरी उसे मिलने जा रही थी। जिसे प्राप्त करना उसका अंतिम लक्ष्य था। वहीं मुरली नायक खुश था कि उसका पैसा रति के काम में खर्च हो रहा था। वह अच्छी तरह जानता था कि नौकरी लग जाने के बाद रति से सूद कई गुना वसूल लेगा वह। इस क्षेत्र में इस तरह के

रोजगार करने वालों की कमी नहीं थी।
रति के काम में पंख लग गया और उसकी नौकरी वाला पेपर अब उड़ रहा था। और साथ में उड़ रहे थे ऑफिस के बड़ा बाबू - मनसुख कंगाडी! एक दिन हवा कुछ तेज़ हुई, तो बड़ा साहब को लिए बड़ा बाबू उड़ गए मनसा के गांव ' केस सही है या नहीं ' की जांच करने। लौटे तो दोनों बहुत खुश दिखे। दूसरे दिन वही चेतो ने बताया कि कल दोपहर को मुरली नायक के घर में जम कर मुर्गा-दारू चला।
महीना दिन बाद कहीं से पता चला कि रति को बाप की जगह नौकरी मिल गयी। सुनकर कोई हैरत नहीं हुई। हां, दुःख जरूर हुआ।
बड़ी देर तक मनसा-प्रकरण पर सोचता रहा। सर दुखने लगा तो उठकर कैंटीन चला गया। संयोग से वहीं फिर चेतो घटवार मिल गया। मैंने पूछा ' चेतो, क्या सचमुच रति को' ज्वाइनिंग लेटर ' मिल गया?'
उसने कहा' हां, मिल गया, और आज उसी खुशी में रति पूरे गांव वालों को सही- भात, खिला रहा है..।'
'क्या कहा, सही-भात! यह सही-भात क्या है भाई?' मुझे चेतो की इस नयी बात पर हंसी आ गई' भोज-भात,बहू- भात, और जात - भात भी हमने सुना था, लेकिन यह सही- भात, कभी नहीं सुना था..!'
'सही-भात,का मतलब सही-भात! अर्थात मनसा मर गया यह सही है और उसकी जगह रति को नौकरी देकर कम्पनी ने कोई ग़लत नहीं किया - सही है..!'
'बहुत खूब! पर यह सुझाव किसका था? मेरा मतलब सही -भात खिलाने की आइडिया किसकी थी?'
'मुखिया जी की ..!'
'लगता है, मुखिया जी को कोई मोटा माल हाथ लगा है।'
'हां, दस हजार का हल्ला है, गांव में..!'
'और गांव वालों को क्या मिला..?'
'गांव के शिव मंदिर की ढलाई में बीस बोरी सीमेंट देने की बात है..!'
और विचित्र संयोग यह था कि ' सही-भात ' खाने के दूसरे दिन मनसा गांव पहुंचा, बूझे-बूझे और भारी मन से। कारण था कि गांव घुसने के पहले उसने हल्के धुंधलके में कुछ लोगों की बातें सुनी थीं। कोई कह रहा था' मानना होगा,कल रति ने दम भर खिलाया लोगों को..!'
'उसकी जिंदगी भी तो बन गयी, नहीं तो नौकरी कहां मिलती है अब इस तरह..!'
कहीं रति उसकी नौकरी लेने में सफल तो नहीं हो गया? यदि ऐसा हुआ तो? आन्तरिक उत्साह में बहुत तेज उसके बढ़ते कदमों की गति अचानक मन्द पड़ गयी। लगा वह किसी गहरी खाई में गिर गया है। नहीं, गिरा नहीं, बल्कि गिरा दिया गया था। और यह खाई कोयले की खदानों वाली खाई से भी गहरी और खतरनाक थी। एक क्षण के लिए मनसा की आंखों के सामने अंधेरा छा गया।
उसका जी चाहा कि वह उल्टे पांव ही लौट जाए। उसे याद हो आया कि जब वह गांव -घर के लिए चला था तो कितना खुश था। कटे हाथ का दुःख भी भूल गया था वह।बस मन मेंघर पहुंचने की प्रबल इच्छा थी और उसने चाहा था कि जितनी जल्दी हो सके, वह घर पहुंच जाए। बाल-बच्चों विशेषकर पत्नी से मिलने की खाश ललक थी मन में,उस पत्नी से जिसे देखे बगैर कभी एक रात रहा नहीं जाता था। रति को भी बहुत चाहता था। एक बार वह बीमार पड़ा तो रात-रात भर मनसा ही जागता रहा था।
और अब वह घर-परिवार से कितना निकट था, सिर्फ सौ-दो-सौ, गज की दूरी.. और वह है कि लौट जाना चाहता है। थोड़ी देर तक 'हां, या न ' की स्थिति में पड़ा रहा।
अन्ततः मनसा ने सोच लिया। सामान उठाकर वह पुनः चल पड़ा -घर की ओर। सामान के नाम पर था ही क्या? अस्पताल से मिला एक पुराना कम्बल, जिसे उसने कन्धे पर डाल लिया और लाठी को मजबूती के साथ पकड़ गांव में घुस गया 'ठक-ठक-ठक ' करती लाठी की आवाज सुन, गली में कदम रखते ही कुत्तों ने मिलकर उसका स्वागत किया। यकायक उसका जबड़ा सख्त हो उठा था। लाठी उठा कर उसने सामने आये कुत्ते पर एक जोरदार प्रहार किया। अब सामने कोई दिखाई नहीं दे रहा था।
मनसा ने अपने घर के अगल-बगल एक नजर देखा, फिर घर के पिछवाड़े की ओर चला गया। उसने किवाड़ को धीरे से खटखटाया। दरवाजा अन्दर से बन्द था। पहले तो मन में मधुर कल्पना उठी,पर भीतर से कोई जवाब नहीं मिला, तो उसने जोर से सिकरी खटखटायी। यूं लगा जैसे कुत्तों पर का आक्रोश पुनः उसके अन्दर उत्पन्न हो गया था।
तभी अन्दर से आवाज सुन उसके कान खड़े हो गये। इतने में दरवाजा आहिस्ता से खुला और एक आदमी घर से बाहर की ओर लपका। मनसा ने लफा कर एक जोरदार लाठी उस पर दे मारी, ' बाप रे,..मरा..!' की चीख के साथ वह पिछवाड़े की ओर भागा। तभी -' कौन है..?' के प्रश्न के साथ दोनों किवाड़ खोल परबतिया बाहर निकली। उजियारी रात में सामने मनसा को देख वह जड़ हो गयी, मानो किसी भूत या प्रेत-आत्मा से भेंट हो गयी हो।उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। वह मूरत बनी वहीं जम गयी थी-चुपचाप।
तभी भीतर दूसरे कमरे से रति की आवाज आयी-' कौन है मां..?'
' कितना अच्छा सपना देख रही थी मैं..!' बेटी कुनमुनाते हुए निकली।
'कहां, कहां से आ जाते है लोग, दूसरों की नींद खराब करने..।' छोटा बेटा कुछ ज्यादा ही नाराज़ दिखा।
अगले ही क्षण मनसा का पूरा परिवार आंगन में खड़ा था। सबके चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं थीं। जहां रति बाप से नजरें नहीं मिला पा रहा था, वहीं बर्फ बनी परबतिया को लगा कि वह अब घर विहिन हो गयी है। इस घर में उसके लिए अब कोई जगह नहीं बची है। मनसा ने बेटे को हिकारत भरी नजरों से देखा और कहा -' ट्रेकर क्या पलटी, तुमने मुझे मरा ही समझ लिया और षडयंत्र रच लाश बना तुम सबने मुझे ठिकाने भी लगा दिया। लेकिन मैं बच गया ..!' फिर उसने भरपूर नजरों से परबतिया की ओर देखा और एक निर्णायक चीख सी उभरी उसके गले से - 'अभी जिंदा हूं मैं!'

होम्योपैथी एक प्राचीन चिकित्सा पद्धति

होम्योपैथी एक प्राचीन चिकित्सा पद्धति है, जिसमें स्वास्थ्य समस्याओं के इलाज की विचारधारा अलग मॉडर्न मेडिसिन सिस्टम से पूरी तरह से अलग है। होम्योपैथिक चिकित्सा के अनुसार शरीर में खुद को ठीक करने की क्षमता होती है और बीमारी से होने वाले लक्षण वास्तव में शरीर द्वारा फिर से स्वस्थ होने के लिए किया गया प्रयास है।

डॉ0 अमलेन्दु त्रिपाठी
9795513223

होम्योपैथी क्या है

होम्योपैथी को होम्योपैथिक मेडिसिन भी कहा जाता हैए जो एक विशेष चिकित्सा ज्ञान है। होम्योपैथिक चिकित्सा के अनुसार शरीर में खुद को ठीक करने की क्षमता होती है और इसमें बीमारी के लक्षणों को शरीर द्वारा फिर से स्वस्थ होने के लिए की गई प्रतिक्रियाएं समझा जाता है। इस चिकित्सा पद्धति में इलाज भी एक अलग विचार पर आधारित होता हैए जिसे अंग्रेजी भाषा में 'लाइक क्योर लाइक'कहा जाता है और हिन्दी में इसका मतलब श्वही रोग वही इलाजश् है। यदि सरल भाषा में कहें तो होम्योपैथी के अनुसार यदि किसी पदार्थ से एक स्वस्थ व्यक्ति में

बीमारी के लक्षण होने लगते हैंए तो वही पदार्थ उसे थोड़ी सी मात्रा में देने पर वह ठीक हो सकता है। होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति के सिद्धांत के रूप में होम्योपैथिक दवाएं शरीर की अपने आप ठीक होने की क्षमता को बढ़ा देती है। होम्योपैथी के चिकित्सकों को होम्योपैथ कहा जाता हैए जो नियमों के अनुसार पहले रोग का निदान करते हैं और फिर परिणामों के अनुसार दवाएं व अन्य उपचार थेरेपी निर्धारित करते है। इलाज के दौरान आमतौर पर मरीज को गोलियां व घोल

दिए जाते हैंए जिन्हें एक निश्चित मात्रा में दवा के सक्रिय तत्व होते हैं। हालांकिए विज्ञान की तरफ से अभी तक कोई ऐसा प्रमाण नहीं मिल पाया हैए जिसमें होम्योपैथी दवाओं को किसी रोग के इलाज के लिए प्रभावी बताया गया हो।

होम्योपैथी चिकित्सा प्रणाली का इतिहास

होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति का जन्म 18वीं शताब्दी के अंत में हुआ था और इसके संस्थापक जर्मनी के चिकित्सक सैमुअल हैनिमैन को माना जाता है। होम्योपैथी शब्द ग्रीक के दो शब्दों 'होमियोस' और 'पैथोस' से मिलकर बना है। होमियोस का मतलब 'एक समान' और पैथोस का मतलब 'कष्ट' या (रोग) होता हैए जो होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति के सिद्धांत 'लॉ ऑफ सिमिलर' को दर्शाता है।

होम्योपैथी का उपयोग

होम्योपैथिक चिकित्सा प्रणाली का इस्तेमाल स्वास्थ्य को बनाए रखने और दीर्घकालिक रोगों का इलाज करने किया जाता है। होम्योपैथिक दवाओं का इस्तेमाल मुख्य रूप से एलर्जीए एटोपिक डर्मेटाइटिसए रूमेटाइड आर्थराइटिस और ईरिटेबल बाउल सिंड्रोम जैसे रोगों काइलाज करने के लिए किया जाता है। वहीं खरोंच या अन्य प्रकार की

छोटी.मोटी चोटों का इलाज करने के लिए भी

होम्योपैथी चिकित्सा प्रणाली को काफी फायदेमंद समझा जाता है। हालांकिए कुछ गंभीर रोग हैं जिनका इलाज करने के लिए होम्योपैथी को उपयुक्त नहीं माना जाता है। इनमें मुख्य रूप से कैंसरए हृदय रोगए गंभीर संक्रमण और अन्य आपात स्वास्थ्य समस्याएं आदि शामिल हैं।

होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति के लाभ

होम्योपैथिक चिकित्सा प्रणाली में न सिर्फ रोग का इलाज किया जाता हैए बल्कि उसके कारण को जड़ से खत्म करके व्यक्ति को फिर से स्वस्थ भी किया जाता है। यदि सरल भाषा में कहें तो होम्योपैथी में न सिर्फ रोग का इलाज किया जाता हैए बल्कि उसका कारण बनने वाली समस्याओं को ठीक करके जड़ से समस्या का समाधान किया जाता है। यही कारण है कि आज होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति का इस्तेमाल भारतए इंगलैंड और कई यूरोपिय देशों में व्यापक रूप से किया जाता है। होम्योपैथिक चिकित्सा प्रणाली से प्राप्त होने वाले प्रमुख लाभों में निम्न शामिल हैं

कम विपरीत प्रभाव

होम्योपैथी के अनुसार इसमें दवाओं को एक विशेष मानक रखकर और पूरी तरह से स्वच्छता के नियमों का पालन करके बनाया जाता है। एक सही मात्रा होने के कारण ये शरीर के किसी अंदरुनी अंग को नुकसान नहीं पहुंचाती हैं और स्वच्छता के कारण इनके विषाक्त प्रभाव भी बेहद कम पाए गए हैं। इतना ही नहीं होम्योपैथी दवाएं बनाते समय किसी रंगए फ्लेवर या किसी अतिरिक्त सामग्री को शामिल नहीं किया जाता हैए जिस वजह से इनके सुरक्षित होने की संभावना बढ़ जाती है।

हर उम्र के लिए सुरक्षित

होम्योपैथिक चिकित्सा के सिद्धांतों के अनुसार ये दवाएं बच्चों से बुजुर्गों तक सभी के लिए सुरक्षित रहती हैं और यहां तक कि गर्भवती महिलाएं भी इन दवाओं को ले सकती हैं। हालांकिए फिर भी आपको कोई भी होम्योपैथिक दवा लेने से पहले चिकित्सक से बात करने की सलाह दी जाती है।

जड़ से इलाज

होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति के अनुसार इसमें व्यक्ति के रोग का इलाज नहीं बल्कि रोगग्रस्त व्यक्ति का ही इलाज किया जाता है। जिसका सरल मतलब यह है कि इसमें रोगग्रस्त व्यक्ति के ठीक होने की क्षमता को बढ़ाया जाता हैए जिससे किसी भी रोग के जड़ से खत्म होने की संभावना बढ़ जाती है। यह भी माना जाता है कि होम्योपैथी दवाओं की मदद से से कई रोगों का जड़ से इलाज किया जा सकता हैए जो मॉडर्न मेडिसिन सिस्टम में संभव नहीं है।

हर प्रकार के उत्पाद उपलब्ध

एलोपैथिक मेडिसिन सिस्टम की तरह होम्योपैथी में भी लगभग हर प्रकार के उत्पाद आसानी से मिल जाते हैं। उदाहरण के रूप में इसमें दवाओं के साथ.साथ शैम्पूए तेलए साबुनए पाउडरए मलम और अन्य कई प्रकार के प्रोडक्ट मिल जाते हैं। ये सभी उत्पाद रोगों का इलाज करने के लिए एक श्ओवर द काउंटरश् मेडिसिन के रूप में काम करते हैंए जिसका मतलब है कि आप इन उत्पादों को बिना होम्योपैथी चिकित्सक की सलाह लिए इनका इस्तेमाल

कर सकते हैं। हालांकिए फिर भी आपको कोई भी होम्योपैथी दवा या प्रोडक्ट का इस्तेमाल करने से पहले चिकित्सक से परामर्श लेने की सलाह दी जाती है।

संपूर्ण शारीरिक स्वास्थ्य सुधार

जैसा कि हम आपको ऊपर बता चुके हैंए होम्योपैथी में किसी एक रोग का इलाज नहीं बल्कि रोगग्रस्त व्यक्ति को फिर से स्वस्थ करने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। यही कारण है कि इन दवाओं से व्यक्ति को कई गुना लाभ मिलता है। नियमित रूप से होम्योपैथिक इलाज कराने वाले व्यक्तियों की प्रतिरक्षा मजबूत बन जाती है और वे अपेक्षाकृत कम बीमार पड़ते हैं।

होम्योपैथी में रोग निदान

होम्योपैथिक चिकित्सा प्रणाली मे रोग के निदान की प्रक्रिया मॉडर्न डायग्नोसिस सिस्टम से थोड़ी अलग है। होम्योपैथी में रोग का निदान होमियोपैथ द्वारा किया जाता हैए जिसमें रोगी के लक्षणों की जांच ही नहीं साथ ही साथ उसका समस्त शारीरिक परीक्षण किया जाता है। निदान के दौरान मरीज से उसके स्वास्थ्य संबंधी प्रश्न पूछे जाते हैंए जिनकी मदद से चिकित्सक रोग के प्रकार और उसका कारण बनने वाली स्थितियों का इलाज करते है। परीक्षण के दौरान मरीज की

मानसिक स्थिति की जांच भी की जाती हैए जिसके लिए उससे उसके जीवन की स्थितिए चिंताए भयए तनाव और अन्य मानसिक दबाव आदि के बारे में पूछा जाता है। होम्योपैथिक चिकित्सा प्रणाली में रोग निदान की मदद से चिकित्सक मरीज के रोग व उसके कारण का पता लगाने के साथ.साथ उसकी शारीरिक व मानसिक स्थिति के बारे में भी जान लेते हैं। रोग निदान से प्राप्त परिणामों के अनुसार ही उचित इलाज निर्धारित किया जाता है। होम्योपैथी चिकित्सा प्रणाली में रोगों को चार अलग.अलग श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है।

होम्योपैथिक चिकित्सा प्रणाली में इलाज

होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति में किया जाने वाला इलाज मॉडर्न मेडिसिन ट्रीटमेंट सिस्टम से काफी अलग है। एलोपैथिक दवाएं मुख्य रूप से रोग के लक्षणों को कम करने पर ध्यान केंद्रित करती हैंए वहीं होम्योपैथिक दवाओं की मदद से व्यक्ति के स्वास्थ्य को शक्ति प्रदान की जाती है ताकि व स्वयं रोग से लड़ सके। जैसा कि ऊपर बताया गया है होम्योपैथ सबसे पहले शरीर की बारीकी से जांच करते हैंए जिससे रोग के प्रकार व उसके कारण का पता लगाया जाता है।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए नियमित करें योग और प्राणायाम

मुकेश कुमार सिंह
योगगुरु

आज आधुनिक जीवनशैली में रोग हर घर में पहले की तुलना में बहुत से बढता जा रहा है शायद कोई ही ऐसा घर हो जिसमें परिवार के सदस्य को बिमारियां न हो जैसे -जैसे हम विकास की तरफ तेजी से बढ रहे है उसी तरह से रोग भी बहुत तेजी से बढ रहे है पहले से ज्यादा अस्पताल खुलते जा रहे है और दिन व दिन मरीजों की संख्या भी बढती जा रही है और कई नये-नये रोग होते जा रहे है अब तो बच्चों को बचपन से ही चश्मा लगने लगा है साथ ही हृदय रोग की बिमारियां और मोटापा भी तेजी से बढाने लगा है जिसके कारण भी कई सारे अन्य रोग और होने लगे है जैसे कमर दर्द, थायरायड, एसिडिटी, डायबिटीज, और मानसिक रोग बहुत तेजी से बढ रहे है। इस रोगों के शिकार सभी आयु वर्ग के लोग हो रहे है। साथ में बढते प्रदूषण के कारण भी कई सारे रोगों को जन्म दे रहे है और सबसे बड़ा कारण खान-पान में बढता फास्ट फूड जिसके कारण बच्चे और महिलायें और पुरूषों मे भी बिमारियों बहुत तेजी से बढ रही है। इसके साथ ही बिगडती दिनचर्या के कारण न सोने का सही समय है न ही जगने के इस कारण रोग बढते जा रहे है।

- अच्छे स्वास्थ्य के लिए अपनी दिनचर्या में सुधार करें समय से सोये और समय से जगने का प्रयास करें।
- भोजन केवल स्वाद के लिए न करें सेहद और पौष्टिकता के अनुसार करें।
- फास्ट फूड और जंक फूड को कम करें या खाने से बचें।
- नियमित रूप से सुबह टहलें। योग और प्राणायाम करें।
- बच्चों को भी पौष्टिक और घर का भोजन खिलाए और मौसमी फल और मौसमी साग-सब्जी जरूर खिलाए और बच्चों को समय दें। हो सके तो रोज शाम को बच्चों को थोडा समय दें उनके साथ पार्क में खेलें और नही तो सप्ताह में एक दिन बच्चों के पार्क में ले जाय और उनके साथ खेले। क्योकि मोबाइल ने आज सारे खेलों को खत्म कर दिया है। इसलिए कुछ समय प्रकृति के साथ जरूर बिताये यह जीवन जीने की एक अलग खुशी देता है।
- नियमित सुबह सूरज निकले से पहले उठे उगता सूरज एक नई ऊर्जा और नई प्रेरणा और एक सकारात्मक ऊर्जा और आत्मविश्वास देता है जिससे हमारा शरीर मजबूत होता है। कई सारे रोगों से लडने की शक्ति मिलती है। सुबह सूरज की किरणों से विटामिन डी मिलता है जिससे हमारी हडिडया और मजबूत होती है और हमारे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढती है और हमारा शरीर स्वस्थ और निरोगी होता है।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए प्रमुख आसन और प्राणायामः-

ताड़ासन

ताड़ शब्द का अर्थ है ताड़ या खजूर का पेड़। इस आसन के अभ्यास से स्थायित्व व शारीरिक दृढ़ता प्राप्त होती है यह खड़े होकर किये जाने वाले सभी आसनों का आधार है। इसलिए ताड़ासन को नियमित करना चाहिए।

अभ्यास की विधि

- सर्वप्रथम पैरों के बल खड़े हो जाएं तथा

दोनों पैरों के बीच दो इंच की दूरी रखें।

- सांस अंदर ले हाथों को सामने की ओर कंधो के स्तर से तक उठाए।
- दोनों हाथों की अंगुलियों को आपस में एक-दूसरे में फसाएं तथा हथेलियों को बाहर की ओर श्वास भरते हुए दोनों भुजाओं को सिर से ऊपर उठाएं।
- भुजाओं को ऊपर ले जाने के साथ-साथ पैर की एड़ियों को जमीन से ऊपर उठाएं और पैर की अंगुलियों पर अपना संतुलन बनाएं। इस स्थिति में अपनी क्षमतानुसार रूकें रहें। एड़ियों को वापस जमीन पर ले आएं।
- श्वास को छोड़ते हुए हाथ की अंगुलियों को अलग- अलग करें,भुजाओं को वापस लाएं, इसके बाद प्रारंभिक स्थिति में वापस आ जाएं।

शारीरिक लाभ

इस आसन के नियमित अभ्यास से शरीर में स्थिरता आती है। यह मेरूदण्ड से सम्बन्धित नाड़ियों के रक्त संचय को ठीक करने में भी सहायक है। किशोरों के शरीर की ऊॅचाई बढ़ती है।

मानसिक लाभ

व्यक्ति तनाव रहित होता है उसकी एकाग्रता बढ़ती है। मानसिक शांति मिलती है।

सावधानियां एवं सीमाएं

जिन व्यक्तियों को आर्थराइटिस तथा चक्कर आने जैसी समस्याएं हो उन्हें एड़ियों पर उठने पर प्रयास नहीं करना चाहिए। अन्तिम स्थिति में रूकने की समय सीमा अपने सामथ्र्यानुसार रखनी चाहिए।

त्रिकोणासन

त्रिकोणासन शब्द का अर्थ त्रि अर्थात तीन कोणों वाला आसन है चूंकि आसन के अभ्यास के समय धड़, बाहुओं एवं पैरों से बनी आकृति त्रिभुज के सदृश्य दिखाई देती है, इसलिए इस अभ्यास को त्रिकोणासन कहते है।

अभ्यास विधि

- त्रिकोणासन के अभ्यास के समय दोनों पैरों को 3 फुट तक फैलाकर आराम से खड़ा होना चाहिए।
- दोनों हाथों को बगल से कंधों के स्तर तक धीरे -धीरे उठाना चाहिए।
- श्वास को शरीर से बाहर छोड़ते हुए धीरे-धीरे दाई तरफ झुकना चाहिए। झुकने के बाद दांए हाथ की उंगलियों को पीछे की ओर रखना चाहिए।
- बायें हाथ को सीधे ऊपर की ओर रखते हुए दायें हाथ की सीध में लाना चाहिए। तत्पश्चात बाई हथेली को आगे की ओर लाना चाहिए।
- सिर को घुमाते हुए बाएं हाथ की बीच वाली अगुंली को देखना चाहिए।
- समान्य श्वास लेते हुए इस आसन में अपनी क्षमतानुसार रूकना चाहिए।
- श्वास शरीर के अंदर लेते हुए प्रारंभिक अवस्था में वापस आ जाय।
- इस आसन को दूसरी ओर भी करना चाहिए।

लाभ

मेरूदण्ड को लचीला बनाता है, पिण्डली,जाघों और कटि भाग की मांसपेशियों को मजबूत बनाता है तथा फेफड़ो की कार्यक्षमता को बढ़ाता है।

सावधानियां एवं सीमाएं

- स्लिप्ड डिस्क, साइटिका एवं उदर में किसी प्रकार की सर्जरी होने के बाद इस आसन का अभ्यास नहीं करना चाहिए।
- शरीर की क्षमता तथा सीमा से परे जाकर यह अभ्यास न करें तथा शरीर को सीमा से अधिक न खीचें।
- अभ्यास करते समय यदि आप जमीन को न छू सकें तो घुटनों को छूनों का प्रयास करें।कभी भी जबरजस्ती शरीर के साथ न करें। क्षमतानुसार ही नीचे झुकें।

धनुरासन

इस आसन में आकृति धनुष के समान दिखाई देती है इसलिए इसका नाम धनुरासन पडा है।

अभ्यास की विधिः-

- पेट के बल लेटकर दोनों पैरों एक हाथ का फासला रखें और दोनों हाथ शरीर के दोनों तरफ सीधा रखें।
- घुटनों को धीरे-धीरे मोड कर कमर के पास लाए और हाथों से पैर को पकडे।
- श्वास भरते हुए अपनी क्षमता अनुसार छाती को जमीन से ऊपर को ओर उठाये और पैरों को कमर की ओर खीचें। और समाने की ओर देखें।
- श्वास पर ध्यान रखते हुए अपनी क्षमतानुसार आसन में बने रहें। ऐसे में शरीर की आकृति धनुष के समान बन जाती है।
- लम्बी गहरी श्वास लेते हुए आसन विश्राम करें।
- आसन हमेशा अपनी क्षमतानुसार ही करें। जरूरत से ज्यादा शरीर को न कसें।
- 10 से 20 सेकेन्ड बाद श्वास छोडते हुए पैर और छाती को धीरे -धीरे जमीन पर वापस लॉए। और लम्बी गहरी श्वास के साथ विश्राम करें।

लाभ

- धनुरासन से रीढ की हड्डी लचीली होती है।
- तनाव और थकान में लाभ मिलता है।
- हाथ और पेट के स्नायु को पुष्टि देता है।
- यह मेरूदंड के उत्तम स्वास्थ्य का सर्वश्रेष्ठ आसन है।
- नियमित धनुरासन करने से व्यक्ति जवान बना रहता है।
- अर्थिरइटिस,गठिया,वात तथा जोडों के दर्द व अशुद्धियां दूर करता है।
- महिलाओं को होने वाले मासिक धर्म तथा गर्भाशय से संबंधित रोगों के कारणों को दूर कर उन्हें स्वस्थ जीवन की खुशियां प्रदान करता है।

सवधानियां

जिन लोगों को ब्लडप्रेशर,हृदय रोग और अल्सर रोग या हाल में कोई आपरेशान हुआ हो वह इस आसन को न करें। साथ ही गर्भवती महिलाएँ इस आसन का अभ्यास न करें।

मयूरासन

इस आसन में व्यक्ति की आकृति मोर की तरह दिखाई पडती है इसलिए इस आसन का नाम मयूरासन है। इस आसन को बहुत ही सावधानीपूर्वक बैठकर किया जाता है इस आसन में पूरे शरीर का भार हाथों के पंजों पर होता है पूरा शरीर हवा में होता है।

अभ्यास की विधि

सबसे पहले अपने दोनों हाथों को दोनों घुटनों के बीच में रखें। धीरे -धीरे हाथ के अँगूठे और अगुलियां अंदर की ओर रखते हुए हथेली जमीन पर रखें। उसके बाद अपने दोनों हाथों की कोहनियां को नाभि केंद्र के दाऐं और बाऐं अच्छे से जमा लें। और अपने शरीर का भार धीरे-धीरे हाथों पर बराबर देकर आगे की तरफ झुकते हुए दोनों पैरों को सावधानी पूर्वक ऊपर की ओर अपनी क्षमता अनुसार उठाॅए। जितनी देर होल्ड कर सकते है होल्ड करें फिर पुनः सामान्य स्थिति में आये। इस अभ्यास को बार -बार करें जितनी ही अंगुलिया और हाथ की कलाई मजबूत होगी उतना ही अच्छा मयूरासन होगा। इस आसन को कभी भी जल्दबाजी में न करें। क्योंकि पूरे शरीर का वजन इन्ही हाथों के पंजे और कलाई पर होता है। इसलिए इस आसन का अभ्यास अच्छे से करें तभी इस आसन को आप सब आसानी से कर पाएंगे।

लाभ

- मयूरासन के नियमित अभ्यास से हाथों के पंजे और कलाई बहुत मजबूत होती है।
- मयूरासन के अभ्यास से यकृत, अग्नाश्य, आमाश्य और पाचन तंत्र को बहुत लाभ मिलता है।
- मयूरासन के नियमित अभ्यास से फेफडे बहुत मजबूत होते है।
- मयूरासन के नियमित अभ्यास से मधुमेह के रोगियों के लिए लाभकारी आसन है।
- मयूरासन के नियमित अभ्यास से पेट के रोग जैसे कब्ज,अपच,पेट साफ न होना वायु विकार और पेट दर्द में बहुत लाभदायक होता है।
- मयूरासन के नियमित करने से शरीर का रक्त संचार सुचारू रूप से रहता है।
- वात-पित-कफ से उत्पन्न होनेवाले रोगों म शीघ्र लाभकारी है।
- मयूरासन के नियमित करने से वृद्धावस्था में भी अच्छा स्वास्थ्य, उत्साह और शक्ति बनी रहती है।
- मयूरासन के नियमित अभ्यास से हाथ, पैर और कंधे की मांसपेसियों में मजबूती आती है।

सावधानी-

जिन लोगों को ब्लडप्रेशर, हृदय रोग और अल्सर रोग या कोई जल्द में कोई आपरेशान हुआ हो वह योग प्रशिक्षक की देखरेख में ही करें।

सर्वागासन

इस आसन को करने से शरीर के सभी अंगो को लाभ मिलता है इसलिए इस आसन को सर्वागासन कहा जाता है।

अभ्यास की विधि-

- इस आसन को करने के लिए सबसे पहले पीठ के बल लेट जाएं। एक साथ अपने पैरों कूल्हे और फिर कमर को उठाऐं। शरीर का पूरा भार आपके कन्धों पर आ जाये। अपनी पीठ से अपने हाथों से सहारा दें।
- अपनी दोनों कोहनियो को पास में लें आयें और हाथों को पीठ के साथ रखें,कन्धों को सहारा देते रहें। कोहनियों को जमीन पर दबाते हुए और दोनों हाथों को कमर पर रखते हुए अपनी कमर और पैरों को सीधा रखें। शरीर को सीधा करें शरीर का पूरा भार आपके दोनों कन्धों व हाथों के ऊपरी हिस्से पर होना चाहिए न कि आपके सिर और गर्दन पर। अपनी क्षमतानुसार इस आसन में रूके रहें।
- अपने दोनों पैरों को सीधा व मजबूत रखें। अपने पैरों कि उँगलियों को नाक की सीध में लें आयें। अपनी गर्दन पर ध्यान दें उसको जमीन पर न दबाएं गर्दन को मजबूत रखें और मासपेशियों को सिकोड लें अपनी छाती को ठोडी से लगा लें। गर्दन में दर्द महसूस हो

रहा है तो आसन से धीरे -धीरे बाहर आ जाय।
- लंबी गहरी सांस लें जितनी देर इस आसन में रह सकते है अपनी क्षमतानुसार बने रहे।
- आसन से बाहर आने के लिए घुटनों को धीरे से माथे के पास लें कर आयें हाथों को जमीन पर रखें। बिना सिर को उठाये धीरे -धीरे कमर को नीचे लेकर आये तथा दोनों पैरों को जमीन पर लें जाए। और पैरों को सीध कर लेट जाए एक लम्बी गहरी सांस ले कुछ देर विश्राम करें।

लाभ

- इस आसन को नियमित करने से रक्त-संचार की दिशा परिवर्तित होकर रक्त आसानी से हृदय की ओर दौडने लगता है। इस आसन से हृदय रोगियों को विशेष लाभ व आराम मिलता है।
- हाथों व कन्धों को मजबूत बनाता है और पीठ को अधिक लचीला बनाता है।
- कब्ज से राहत देता है और पाचन क्रिया को सक्रिय बनाता है।
- महिलाओं और पुरूषों के प्रजनन अंगों को स्वस्थ,सबल व विकसित करता है।
- मोटापा,बंध्यापन, प्रदर आदि रोगों को दूर कर महिलाओं को स्वस्थ व सुडौल बनाता है।

सावधानियां

गर्भावस्था, माहवारी, उच्च रक्तचाप हृदय रोग में योग विशेषज्ञ की देखरेख में ही करें।

शवासन

शव शब्द का अर्थ मृत शरीर है। इस आसन को यह नाम इसलिए मिला है कि इसमे एक मृत शरीर के समान आकार लिया जाता है। शवासन विश्राम करने के लिए है और अधिकांश पूरे योगसान क्रम के पश्चात किया जाता है एक पूरा योग का क्रम क्रियाशीलता के साथ आरम्भ होता है और विश्राम में समाप्त होता है यह वह स्थिति है जब आपके शरीर को पूर्ण विश्राम मिलता है और तनाव से बहुत आराम मिलता है।

शवासन करने की विधि

- सर्वप्रथम पीठ के बल लेट जाय न तकिया हो न ही किसी अन्य वस्तु सहारा हो आंखे बंद कर ले।
- अपने हाथ और पैरें आरामदायक स्थिति में फैलाकर रखें। अपने हाथ घुटने पैरों और उॅगलियों को साथ ही पूरे शरीर को अचेतन अवस्था में शिथिल छोड दें।
- अपने हाथों को शरीर के साथ रखें परंतु वे आपके शरीर को न छुंए। हथेलियॉ आसमान की ओर फैली हुई हो।
- समान्य श्वास .प्रश्वास की प्रक्रिया पर ध्यान केंद्रित करें।
- अपना ध्यान शरीर के हर अंग पर धीरे धीरे लेकर जॉए और पूरे शरीर को विश्राम दें। जब तक पूर्ण विश्राम एवं चित्त शांत न हो जाय।

शवासन के लाभ

- शवासन करने से व्यक्ति के सभी प्रकार के तनावों से मुक्त होता है। शरीर और मस्तिष्क दोनों को आराम मिलता है।
- आसन के अभ्यास से आपका षरीर पुनः एक नई ऊर्जा से भर जाता है और शरीर तनाव मुक्त होता है।
- बाहरी दुनिया के प्रति लगातार आकर्षित मन अंदर की ओर गमन करता है इस तरह धीरे.धीरे महसूस होता है कि मस्तिष्क स्थिर हो गया है और अन्दर से षांति मिलती है जिससे मानसिक तनाव का कम होता है।
- आसन शरीर को स्थिर करने का सबसे उत्तम आसन है और वात दोष को शरीर में ठीक करता है।

भुजंगासन

भुजंग का अर्थ सांप अथवा नाग है। इस आसन में शरीर की आकृति सांप के फन की तरह ऊपर उठती है जिसके कारण इस आसन को भुजंगासन कहते है।

अभ्यास विधि

- सर्वप्रथम पेट के बल लेट जाएं और अपने दोंनो हाथों पर सिर टिकाते हुए शिथिल रखें।
- अब अपने दोनों पैरों को आपस में मिला लें।
- हाथों को शरीर के ठीक बगल में ऐसा रखें कि हथेलियां और कोहनियां जमीन पर टिके रहें।
- श्वास को धीरे -धीरे अंदर खीचते हुए ठुडडी और नाभि क्षेत्र तक शरीर को ऊपर उठाएं। अपनी क्षमतानुसार होल्ड करें। पुनः वापस लौटते हुए ललाट को जमीन पर टिकाएं।
- यह सरल भुजंगासन कहा जाता है
- हथेलियों को वक्ष के बगल में रखें और कोहनियां ऊपर की ओर उठी हुई होनी चाहिए।

- धीरे -धीरे श्वास को भरते हुए ठुडडी एवं नाभि क्षेत्र तक के शरीर को ऊपर उठाएं रखें।
- पुनः श्वास को बाहर छोड़ते हुए ललाट को जमीन पर शिथिल होने दें और हथेलियों के ऊपर सिर तथा पैर को फैलाकर शरीर को शिथिल करें।

लाभ

- पीठ दर्द और श्वास नली से संबंधित समस्याओं को दूर करता है।
- यकृत (लीवर) के सभी रोगों को दूर कर रक्त बनाने की प्रक्रिया तेज करता है।
- भोजन के बाद गैस का ऊपर चढ़ना, डकार आने पर राहत मिलना उदराध्यान तथा पाचन की कमियॉ आदि रोगों को दूर कर उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करता है।

सावधानियां

- जो लोग हर्निया,अल्सर से पीडित हो उन्हें इस आसन का अभ्यास नहीं करना चाहिए।

वृहद भारत और उसकी सीमाएं

तारादत्त भट्ट

भारत का हृदय उत्तराखंड या आर्यावर्त कहा जा सकता है पर इसका विकसित शरीर तो समस्त संसार ही रहा है, पर यदि विशिष्ट प्रभाव और विशिष्ट प्रयास को आधार मानकर सीमा निर्धारण किया जाए तो एशिया महाद्वीप का अधिकांश भूखंड भारत की भौगोलिक परंपराओं में आ जाता है।

प्राचीन भारत का भौगोलिक सीमांकन करना कठिन है। क्योकि उन दिनों शासन क्षेत्र का बहुत महत्व न था। यातायात के साधन कम होने से राजा और प्रजा दोनों को ही बड़े राज्यों में कठिनाई झेलनी पड़ती थी। इसलिए छोटे-छोटे गणतंत्र ही शासन का विस्तार उतना रखते थे जितने में सुव्यवस्था का उत्तरदायित्व आसानी से निभाया जा सके। चक्रवर्ती शासन सत्ता आसीन होती थी वह प्रांत प्रदेश की सीमाएं आगे बढ़कर समस्त विश्व में राज्य की नीति एवं मर्यादाओं का नियंत्रण करती थी कहीं भी अनीति का प्रवेश और उदंडिता का शासन सत्ता में समावेश नहीं होने देती थी। इस प्रकार इन दिनों विश्व राज्य संघ भी था जिसे चक्रवर्ती सत्ता कहते थे। छोटे-छोटे गणतंत्र भी थे जो नीति और मर्यादा की दृष्टि से तो पराधीन थे, बाकी शासन संचालन स्वतंत्र थे।

राजकीय दृष्टि से देखा जाए तो आज जितना बड़ा भारत है उतने में ही सैकड़ो गणतंत्र थे जो परस्पर सहयोग के आधार पर सर्वोत्मुखी प्रगति के लिए मिलजुल कर बिना किसी द्वेष विग्रह के लोक व्यवस्था के लिए कार्य करते थे। उन दिनों राजतंत्र का नहीं लोक मानस पर धर्म तंत्र का शासन था। इसलिए देश की सीमा निर्धारित करते समय यह देखना पड़ता था कि कितना क्षेत्र किस संस्कृत व्यवस्था से प्रभावित और प्रकाशित हो रहा है। भारत की सीमाएं लगभग विश्व सीमा जितनी थी। क्योंकि यहां के तत्वदर्शी विदुः मनीषी अपने मस्तिष्क में किसी छोटे

क्षेत्र या वर्ग का हित साधन करने की बात ना सोचकर समस्त विश्व की समृद्धि एवं प्रगति को ध्यान में रखकर अपने चिंतन एवं कर्तव्य का निर्धारण करते थे। ङ्क्षवसुधैव कुटुंबकमङ्क्ष की भावना उन्हें किसी क्षेत्र विशेष के हित साधन तक सीमित रहने नहीं दे सकती थी।

लोक शिक्षण एवं सांस्कृतिक विस्तार की दृष्टि से भारत जगतगुरु था। शासन नियमन की दृष्टि से चक्रवर्ती। दोनों को मिलाकर सोचा जाए तो यूं कहना कि राजतंत्र और धर्म तंत्र का काम समस्त विश्व को निरंतर पहुंचते रहने के कारण भारत की भौगोलिक मर्यादाएं समस्त भूखंड में सुविस्तृत थीं।

भारत का हृदय उत्तराखंड या आर्यावर्त कहा जा सकता है पर इसका विकसित शरीर तो समस्त संसार ही रहा है, पर यदि विशिष्ट प्रभाव और विशिष्ट प्रयास को आधार मानकर सीमा निर्धारण किया जाए तो एशिया महाद्वीप का अधिकांश भूखंड भारत की भौगोलिक परंपराओं में आ जाता है।

इन दिनों लंका नेपाल, भूटान, सिक्किम, वर्मा, पाकिस्तान, बांग्लादेश भारत से अलग कट गए हैं। यह सभी इसी शताब्दी तक अपने देश के अविश्चन अंग रहे हैं। 100 वर्ष पहले का यदि भूगोल देखा जाए तो सभी देश भारत के साथ जुड़े हुए दिखाई देंगे। दरिद्रता ग्रस्त कुटुंब में से हर एक किशोर लड़का निकल भागने और अपना अलग घर बसाने की बात सोचता है ठीक इसी दृष्टिकोण से उपरोक्त देशों का भी अलगाव हुआ है।

भारत युद्ध में एकत्रित राजाओं और उनकी सेना का वर्णन पढ़ने से स्पष्ट हो जाता है कि समस्त एशिया के गणतंत्र उस समय विश्व युद्ध में सम्मिलित थे। यह नहीं समझना चाहिए कि विश्व निर्माण अभियान पर निकले हुए भारतीय केवल धर्म प्रचार ही करते थे। अरस्तु न केवल धर्म प्रचारक

वर्णक थे बल्कि सभी विशेष विशेषताओं के विशेषज्ञ भी थे वे अपनी क्षमता का अनुदान विश्व नागरिकों को प्रदान करने के लिए उत्साह और साहस पूर्वक अपनी यात्रा आरंभ करते थे। सुदूर पूर्व के देश किसी समय भारत के लिए घर आंगन जैसे बन गए थे इतिहासकार गोखरू ने अपनी पुस्तक इंडियन इंग्लिश नामक पुस्तक में लिखा है कि ईसा से 400 वर्ष पूर्व भारतीय दार्शनिक इस देश में धर्म शिक्षा देने पहुंचे थे। मगध और सिंधु तट निवासी क्षेत्रियों ने यूनान में सर्व सिद्ध राज्य सत्ता की स्थापना की थी।

गार्डन चाइल्ड की किताब 'न्यू लाइट ऑन द मोस्ट असिएंट ईस्ट' के अनुसार यूनानी सभ्यता का मूल स्रोत भारतीय सभ्यता है। सर जॉन मार्शल 3 की ओर नॉट बजी ने जो खोजें की हैं उनसे प्राचीन यूनान में विवाह संस्कार अग्नि की परिक्रमा करते हुए होते थे तथा मुर्दे जलाए जाते थे।

प्राचीन काल में भारत का विस्तार कितना व्यापक था और उसके प्रभाव क्षेत्र में किस सीमा तक समस्त एशिया आ चुका था। उसकी भाविक जानकारी प्राप्त करने के लिए हमें निम्न पुस्तक पढ़नी चाहिए-

1. **सुरेंद्रनाथ कृत इंडियन टीचर्स और चीन**
2. **राहुल सांकृत्यायन कृत जापान**
3. **स्टैन कृत एन्सिएंट खोतान**
4. **बी ए स्मिथ कृत अर्ली हिस्ट्री ऑफ इंडिया**
5. **रामचंद्र वर्मा कृत अरब और भारत के संबंध**
6. **एनेस्टीनी कृत हिस्ट्री ऑफ़ जापानीज बुद्धिस्म**
7. **बुद्धिस्ट रिकॉर्ड ऑफ़ द वेस्टर्न वर्ल्ड**
8. **वाडेल कृत लामाइज़्म**
9. **स्टैन कृत इनर्मोस्ट एशिया**
10. **जनार्दन झा कृत बौद्ध कालीन भारत**
11. **जगमोहन वर्मा कृत फाह्यान**

कोलकाता की द ग्रेट इन इंडियन सोसाइटी ने अपनी प्रोग्रेस आफ ग्रेटर इंडियन रिसर्च योजना के अंतर्गत सन 1917 से 1942 की अवधि में अफगानिस्तान सेंट्रल एशिया, तिब्बत, मंगोलिया, वर्मा, कंबोडिया, चंबा, जावा, बनी, बोनिया, सिलोइस, सुमात्रा, मकाया, सिलोन आदि पर श्री यू एन घोषक के द्वारा किए गए शोध कार्य को प्रकाशित किया था।

इस प्रकार का प्रमाणिक ऐतिहासिक साहित्य पढ़ने से हम सहज ही इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि भारत किसी भौगोलिक सीमा की परिधि में अवरुद्ध नहीं था। वरन इसका कार्य क्षेत्र समस्त विश्व था। वह अपनी ही तरह संसार को सुखी और सुमानत बनाने के महान मिशन में निरंतर जीवन व्यतीत करते थे।

क्या है महिला आरक्षण बिल 2023

सुषमा त्रिपाठी

महिला आरक्षण बिल पिछले 27 वर्षों से लटका हुआ था अगर यह बिल कानून बन जाता है तो 2024 के चुनाव में महिलाओं को 33% आरक्षण मिल जाएगा इससे लोकसभा की हर तीसरी सदस्य महिला होगी महिला आरक्षण बिल 2023 में महिलाओं को ध्यान में रखते हुए उनके हित में अच्छा और सम्मानजनक तरीके से बहुत सारे फायदे हैं।

सामाजिक बदलाव तो संसार का नियम है यह बात सभी को बहुत अच्छे से पता है हाल ही में लोकसभा और राज्यसभा दोनों में महिला आरक्षण बिल 2023 संविधानिक संशोधन विधेयक अथवा नारी शक्ति वंदन अधिनियम पारित कर दिया गया। यह विधेयक लोकसभा राज्यसभा और दिल्ली विधानसभा में महिलाओं के लिए एक तिहाई सीट आरक्षित करता है इसके बाद परिसीमन आयोग का काम शुरू होगा, इसमें प्रक्रिया को पूरा करने और आखिरकार पुनर्गठन और बढ़े हुए निर्वाचन क्षेत्र की घोषणा करना भी शामिल है। इस ऐतिहासिक कानून का लक्ष्य लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में 33% सीट आरक्षित करने का प्रस्ताव है जबकि विधयक का कार्यान्वयन जनगणना और परिसीमन अभ्यास से जुड़ा हुआ है जिससे इसकी समय सीमा आगामी चुनाव के निहतार्थ आगे पीछे हो रही है।

महिला आरक्षण विधेयक 2023 के प्रमुख प्रावधान

लोकसभा द्वारा पारित महिला आरक्षण विधेयक भारतीय राजनीतिक प्रतिनिधित्व में महत्वपूर्ण बदलाव लाने का प्रयास किया जा रहा है यहां इसके प्रमुख प्रावधान हैं।

एक तिहाई सीट आरक्षित करने का उद्देश्य

महिला आरक्षण विधेयक 2023 में महिलाओं के लिए लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में 33% सीट आरक्षित करने का प्रस्ताव रखा गया है यह कदम भारत के राजनीतिक परिदृश्य में लैंगिक समानता को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाने का प्रयास किया जा रहा है जो की एक बहुत ही सराहनीय और महत्वपूर्ण कदम उठाने जैसा है इस आरक्षण का कार्य नई जनगणना और परिसीमन अभ्यास पर निर्भर है

जनगणना और परिसीमन रुका

भारत में अंतिम परिसीमन सन 1976 में हुई थी और वर्तमान निर्वाचन क्षेत्र की सीमाएं 2001 की जनगणना के आंकड़ों पर आधारित हैं। 2002 में संविधान संशोधन के माध्यम से 2026 के बाद आयोजित पहली जनगणना तक परिसीमन को रोक दिया गया था।

जनगणना देता के आसपास अस्पष्टता

जब केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह जी ने घोषणा की थी की जनगणना परिसीमन आम चुनाव के तुरंत बाद होगा, विशिष्ट तारीख अज्ञात हैं। पिछली देरी के लिए कोविड-19 महामारी को जिम्मेदार ठहराया गया था

ऐतिहासिक संदर्भ

महिला आरक्षण विधेयक की यात्रा 1990 के दशक की शुरुआत से होती है जब भारत में महिलाओं के लिए राजनीतिक सशक्तीकरण की दिशा में अपना पहला कदम उठाया था 1992 में पंचायत और नगर पालिकाओं में महिलाओं के लिए सिम आरक्षित करने के लिए संविधान में संशोधन किया गया था इसके बाद संविधान 81वां संशोधन विधेयक, 1996 और इसके बाद के विधेयकों में महिलाओं के लिए लोकसभा और राज्यसभा में एक तिहाई सिम आरक्षित करने की मांग की गई है जबकि इन शुरुआती प्रयासों को बहुत सारी समस्याओं का सामना

करना पड़ा। अंततः राजनीतिक दलों के बीच आम सहमति और सभी के सहयोग से विभिन्न कार्यों से यह अलग-अलग तरीकों से सफल हुआ। सबसे हालिया प्रयास 2008 में किया गया था, जब यह विधयक राज्यसभा में पारित हो गया था लेकिन लोकसभा के विघटन के कारण यह रद्द हो गया था यह भी एक ऐतिहासिक संदर्भ के अंतर्गत ही आता है

महिला आरक्षण बिल लोकसभा में भी चर्चा में रहा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने पुराने संसद भवन में अपने अंतिम भाषण में कहा कि दोनों सदनों में अब तक 7500 से अधिक जनप्रतिनिधियों ने काम किया है जबकि महिला प्रतिनिधियों की संख्या करीब 600 रही है, उन्होंने कहा कि महिलाओं के योगदान से सदन की गरिमा को बढ़ाने में मदद मिलेगी।

इसके बाद नेता पक्ष अधीर रंजन चौधरी ने पिछले 75 सालों में कांग्रेस सरकारों के कामकाज का लेखा-जोखा भी दिया और इस दौरान सोनिया गांधी जी ने भी उन्हें महिला आरक्षण बिल की याद दिलाई थी। महिला आरक्षण बिल सन 1996 से ही अधर में लटक रहा था। उस समय देवगौड़ा सरकार ने 12 सितंबर 1996 को इस बिल को संसद में पेश किया था लेकिन पारित ही नहीं हुआ था। आरक्षण के भीतर में अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षण का प्रावधान था लेकिन अन्य पिछड़े वर्ग के लिए आरक्षण का प्रावधान नहीं था इस बिल में प्रस्ताव है कि लोकसभा के हर चुनाव के बाद आरक्षित सीटों को रोटेट किया जाएगा। आरक्षित सीट राज्य या केंद्र शासित प्रदेश के विभिन्न निर्वाचित क्षेत्र में रोटेशन के जरिए आवंटित की जा सकती हैं। इस विधयक में प्रावधान है कि लोकसभा दिल्ली विधानसभा और राज्यसभाओं के विधानसभा में महिलाओं को 33% आरक्षण मिलेगा यानी कि महिलाओं के लिए एक तिहाई सीट आरक्षित होंगी।

इस ऐतिहासिक बदलाव के बाद से सक्रिय राजनीति में महिलाओं की भागीदारी बढ़ेगी। संसद के अलावा और भी सरकारी योजनाओं में नौकरी मिल सकती है। सरकार ने इस बिल को नारी शक्ति वंदन बिल का नाम दिया है।

महिला आरक्षण बिल से महिलाओं को क्या-क्या फायदा और लाभ मिल सकते हैं

महिला आरक्षण बिल के नाम से ही जाहिर होता है कि इस बिल के पास होने के बाद महिलाओं को किसी भी प्रकार का फायदा होना तो सुनिश्चित ही हो गया। इसका सीधा मतलब यह हुआ कि बिल के कानून बनते ही लोकसभा विधानसभा की एक तिहाई सीट महिलाओं के लिए रिजर्व हो जाएंगे वर्तमान समय में लोकसभा में 543 सीट हैं जिसमें से अब 181 सीट महिलाओं के लिए रिजर्व रहेंगे मौजूदा समय की बात करें तो लोकसभा में 84 सीटों में से 28 सीट महिलाओं के लिए रिजर्व रहेगी। वहीं 47 एसटी सीटों में से 16 सीट महिलाओं के लिए आरक्षित हो जाएगी।

देश की नई संसद की कार्यवाही पहले दिन केंद्रीय कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल महिला आरक्षण से जुड़ा विधेयक पेश किया और संसद की कार्रवाई के दूसरे दिन और दो तिहाई बहुमत के साथ या पास हो गया।

इस बिल को राज्यों की मंजूरी की जरूरत नहीं

जब यह बिल कानून की शक्ल ले लेगा तभी यह बिल राज्यों में भी लागू हो जाएगा इसके लागू होते ही देश राज्य और केंद्र शासित प्रदेशों की विधानसभाओं में 33% का आरक्षण मिल ही जाएगा। राज्यसभा विधान परिषद में महिलाओं को इस बिल में आरक्षण का कोई प्रावधान ही नहीं है

फिलहाल इस बिल के लागू होने में अभी बहुत ज्यादा समय भी लग सकता है यह बिल पिछले 27 वर्षों से लटका हुआ था अगर यह बिल कानून बन जाता है तो 2024 के चुनाव में महिलाओं को 33% आरक्षण मिल जाएगा इससे लोकसभा की हर तीसरी सदस्य महिला होगी। महिला आरक्षण बिल 2023 में महिलाओं को ध्यान में रखते हुए उनके हित में अच्छा और सम्मानजनक तरीके से बहुत सारे फायदे हैं।

जीवन का उपहार किसलिए पाए हैं

जीवन का उपहार किसलिए पाए हैं।
पता नहीं हम क्यों धरती पर आये हैं।।

जीवन अपना कैसे हो सकता है जब।
जन्म मृत्यु के दोनों छोर पराये हैं।।

बाहर के संकट तो बात अलग ही है।
अंतस में ही संकट के घन छाये हैं।।

चैन खोजने निकले घर से बाहर हम।
बाहर ज्यादा बेचैनी के साये हैं।।

कल की खबर नहीं लेकिन सौ वर्षों का।
सारे अपना अपना गणित बिठाये हैं।।

आज दुखी हैं, कल सुख की बारिश होगी।
कैसे कैसे स्वर्णिम स्वप्न सजाये हैं।।

जीवन के दो चार दिवस अनमोल सखे।
ज्यादातर लोगों ने व्यर्थ गँवाये हैं।।

दूजे ने क्या किया किसी को क्या मतलब।
सबने अपने अपने काम गिनाये हैं।।

किस किस को खुश रखें लोग बिन बातों के।
क्रुद्ध भेड़ियों के जैसे मुंह बाये हैं।।

कभी सेज फूलों की रास नहीं आई।
और कभी लोहे के चने चबाये हैं।।

गीत ख़ुशी के फिर गाएंगे किसी समय।
यही सोचकर हमने दिवस बिताये हैं।।

©वेद प्रकाश भट्ट 'सत्यकाम'

जीवन सार

वय का पंछी नीड़ के,तिनके-तिनके तोड़।
गिरा रहा है रात-दिन,जाना है जो छोड़।।

पल-पल जीवन घट रहा,होने लगे फकीर।
बाल पके घुटने घिसे, गालों पड़ी लकीर।।

जब आये थे जगत् में,कोमल तन-मन साथ।
यौवन के बल सब मिटा,लौटे खाली हाथ।।

मद खाया मद ही पिया,मद झूमें दिन-रात।
मद में अंधे हो जिये, अंत सहा आघात।।

जन्म गवायाँ व्यर्थ में,पल भर मिला न चैन।
राम भजन को छोड़ कर,धन मद में बेचेन।।

बचपन में भोले बने, यौवन में उन्माद।
अंत समय सब तज गये,कौन करे संवाद।।

जीवन-संध्या ढल रही, बैठा करे विचार।
अस्ताचल दिनकर बढ़ा,गया तमस से हार।

मन ही मन वह सोचता,क्या थे वे दिन-रैन।
यौवन का उन्माद था, ज़रा नहीं था चैन।।

नस-नस यौवन लरजता,सुखद दिवस मधु रात।
गज मद पद चंचल नयन, कामदेव से गात।।

सुरमय रूप सुहावना, कामदेव से अंग।
सुदृढ़ कंध शुक नासिका,भव्य भाल प्रत्यंग।।

दिनकर-सी आभा सजे,मुँख मंडल पर ओज।
यौवन सरि में खिल उठा,शतदल लिये सरोज।।

अधर 'मुकुल से अधखिले,नेत्र धधकते आग।
भुजबल मन मर्जी करे,रैन दिवस की जाग।।

जो सोचा पूरा किया, ले भुजबल की आस।
धन, माया,छल,कपट,मद,हास और उपहास।।

नव यौवन उन्माद में, भला कहां थी लाज।
भूल गया आदर्श सब,याद रहा निज काज।।

सिंहासन आरूढ़ हो, ले अपनों का संग।
जोड़-जोड़ बल देखता,योग देख था दंग।।

कामदेव ने तज दिया, रति ने छोड़ा हाथ।
कफ, खाँसी,बलगम रहे अंत समय में साथ।

जो जोड़ा सब छोड़ कर,निकला अपनी राह।
एक कफ़न को छोड़ कर,रही न दूजी चाह।।

हेमराज सिंह
'हेम' कोटा राजस्थान

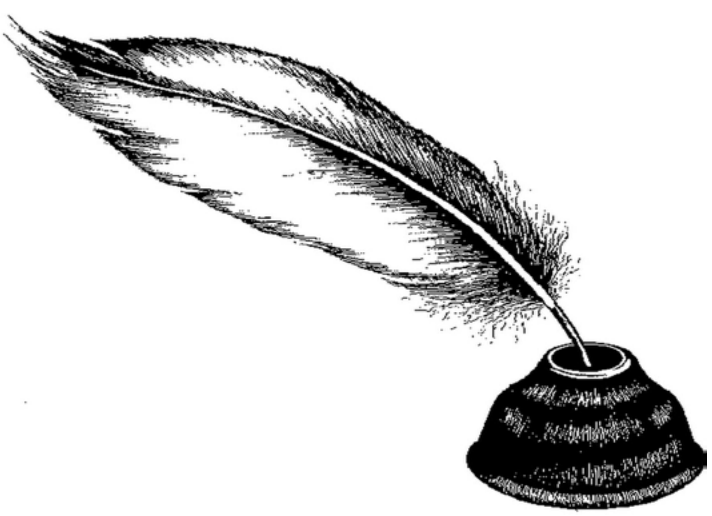

सूर्ययान आदित्य

सूर्यदेव तपलीन हैं, बीते अरबों वर्ष।

ठान लिया 'आदित्य 'ने, दर्शन करूँ सहर्ष।

सूर्यदेव के विषय में, पढ़ा शास्त्र - साहित्य।

खोज खबर लेने वहाँ, पहुँचेगा आदित्य।

जाएगा आदित्य सुत, सूर्य पिता के पास।

विंदु लैंग्रेज - एक से, राज खुलेंगे खास।

निकट लैंग्रेज विंदु पर, नहीं गुरुत्व प्रभाव।

परखेगा 'आदित्य' अब, कैसा सूर्य स्वभाव।

सूर्य विषय में आंकड़े, कर आदित्य एकत्र।

क्यों धब्बे हैं सूर्य में, पढ़ेगा आदि - प्रपत्र।

पराबैंगनी रश्मियाँ, सौर पवन की चाल।

अब उपग्रह आदित्य ही, लेगा सबका हाल।

सूर्यदेव की कुंडली. बाँचेगा आदित्य

सकल जगत होगा मुदित, देख सौर - लालित्य।

भारत में अनुदिन बढ़ा, अंतरिक्ष विज्ञान।

मिटे धरा का दुख - कलह, तभी सफल अभियान।

इसरो को शुभकामना, जय - जय एस सोमनाथ।

सूर्य मिशन होगा सफल, जोड़ रहा जग हाथ।

-गौरीशंकर वैश्य विनम्र

वह कौन है रहता कहां मैं

वह कौन है रहता कहां मैं
जान ना पाया,
लोग कहते हैं वह है ही नहीं
तू खोजता जिसको, पर वह
है नहीं यह बात तो मैं मान न
पाया,,
था खोजने निकला उस दिव्य
शक्ति को ,मैं खोजता ही रह
गया, पर खोज ना पाया उस
अलौकिक ज्योति को,,
चकोरी देखती जिसको न जाने
कौन है चंदा,
पपीहा पीउ कह कर है पुकारे
जाने कौन बंदा,,
है चातक चाहता किसको यह
जाना है भला किसने,बुझाए
स्वाति की बूंदे भला क्यों प्यास
है उसकी,भला क्या है भरा
बूंदों में उन सीपी भी जिसे
चाहे,,
पी कहां पी कहां कहकर
पुकारे मोर हैं किसको,है छिपा
जो वादियों में या जंगलों में
घूमता,
रिझाने को भुलाने को नाचता
है मोर जिसको,,
वह कौन है स्पर्श से जिसके
चिड़ियां चहक उठती,सुगंधित
कौन होता है फिजाओं में
भला,
वह कौन इतना खास है
जिसके लिए,सुमन भी खुद
महक उठती,,
समुंदर में छिपा है कौन, जिसे
खोजने नदियां पहाड़ों से
निकल कर चल पड़ी एक रस
भरे अंदाज में,,
मधुर संगीत में जो सुर बना,
जो फूट पड़ता है गले से, वह
कौन है मैं कह नहीं सकता,
जो स्वर भरे हैं साज मे,,
चकोरी है बनी नजरें मेरी
नजारा देखना जो चाहती,
पपीहा बन गया दिल भी मेरा
है ढूंढता प्रीतम, एक चाह
मन में है भरा उस बूंद के रस
पान की,पी कहां मन मोर मेरा
चाहता जिसको, समुंदर वह
मिले आगोश में अपने खुद
खींच ले मुझको,,
फिर जो देखा मैं अपने तहे
दिल में,था मुस्कुराता चेहरा मैं
देखता ही रह गया, अब शेष
है एक आस उसकी, वह खुद
अभय वरदान दे मैं खोजता
फिरता जिसे वह था मेरे हृदय
की झील में।।

(कामेश)

तड़प रही हिन्दी

कितने युगकवि गुजर गये,
कितने ही लेखक गुजर गये,
फिर भी,आज विद्यालयों में,
अंग्रेजियत का बोलबाला कैसे?

हिंदी बोलने वाले,कोई कम नहीं हैं।
काव्य-पाठ की गूँज, कोई कम नहीं हैं।
फिर,अंग्रेजी गानों की फूहड़ता,
आधुनिकता की पर्याय कैसे?

निराला-दिनकर का,काव्य जीवंत हैं।
प्रेमचन्द का अभी,आया कहाँ अंत हैं?
फिर,पूंजीवाद के बाजारों में,
तड़प रही हैं हिंदी कैसे?

अंग्रेजी सीखना बुरा नहीं हैं।
बुरा हैं तब,जहाँ हिंदी नहीं हैं।
फिर,अंग्रेजी का न बोलना,
पुरातन का हैं प्रमाण कैसे?

मनु प्रताप सिंह शेखावत

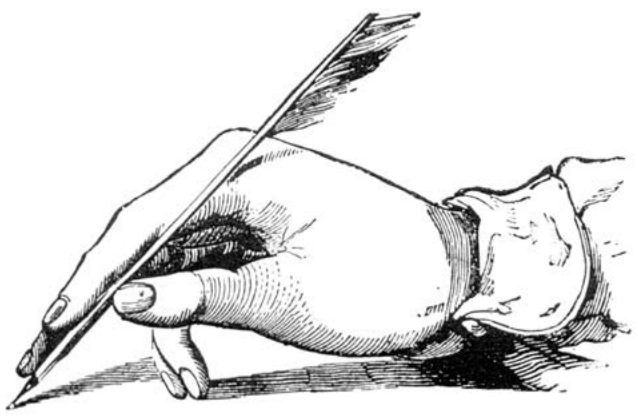

मकोय (मुकाईया)

इस बार हम एक ऐसे पौधे की बात करेंगे जो कि औषधिये रूप से गुणों की खान है, पर बागवानी के लिहाज से यह एक खर-पतवार के रूप में देखी जाती है। यहाॅ तक इसके पत्तों का साग भी बनाकर खाया जाता है। पहले के समय में अधिकांश घरों में यह पाई जाती थी। काली और लाल रंग की मकोय होती हैं। 1 से 3 फुट के पौधे होते है मकोय के, इसके फल छोटे होते है और स्वाद में टमाटर जैसे लगते है।

गुणों के हिसाब से मकोय बहुत लाभकारी है। त्रिदोष का शमन करता है, इसकी जड़ का काढा पीने से शरीर के विषैले पदार्थ नष्ट हो जाते है। मकोय को रोगनाशक कहा जाता है। मकोय हर जगह आसानी से मिल जाने वाला होता है। इसमें आने वाले फल यू ही खाये जाते है जो कि बहुत लाभकारी होते है। मकोय सांस संबंधी दिक्कतों में आराम देता है। बुखार, खांसी में लाभकारी होता है, मूत्र विकारों में फायदा पहुॅचाता है। किडनी की सेहत के लिए यह राम बाण है। पेट के विकारों में जैसे उल्टी, दस्त, बवासीर आदि में भी मकोय फायदा करती है। शरीर की सूजन में भी मकोय का प्रयोग किया जाता है। मकोय चर्म रोगो में भी लाभ देने वाला होता है। लीवर की समस्या में भी यह औषधि के रूप में काम करता है। पीलिया में यह काफी आराम देता है।

इसके फल के सेवन से रक्त शुद्ध होता और प्रतिरोधक क्षमता बढती है। मुह के छालों में भी यह आराम देता है। दांत के दर्द में भी यह लाभकारी है।

एक झाड के तौर पर यह फैलता है और बड़ी आसानी से उग जाता है। अपनी बागवानी में इसे थोड़ी सी जगह दें। यह एक अत्यंत लाभकारी औषधि है जो आपके घर में होनी चाहिए।

इसका वैज्ञानिक नाम Solanum है। यह एक प्रमुख बागवानी फसल भी है, लेकिन कुछ प्रजातियाँ इसमें जहरीली हो सकती हैं, जैसे कि ब्लैक नाइटशेड (Solanum nigrum) और डेडली नाइटशेड (Solanum dulcamara)।

नाइटशेड के पौधों पर छोटे, सफेद या हरे फूल और छोटे गोल फल होते हैं। यह फल शाकाहारी और नीरसी जानवरों के लिए हानिप्रद हो सकता है, क्योंकि इसमें सोलानिन नामक जहरीला रासायन होता है। यह पौधा गर्म क्षेत्रों में अधिक पाया जाता है और आमतौर पर खुदाई या पुरातात्विक स्थलों में उगता है।

प्रकृति के रंग

लक्ष्मीकांत वर्मा
लखीमपुर खीरी

" जिस प्रकार बाह्य जगत से शरीर में चुभने वाला कांटा शरीर स्वीकार नहीं करता उसे पकाकर बाहर निकाल देता है ठीक उसी प्रकार बाहर से कोई भी भाव या पदार्थी गुण नहीं जोड़ा जा सकता, जुड़ने वाली अवस्था को शरीर की जिस परिस्थिति से बाहर निकल सकता है उसी परिस्थिति से बाहर निकाल देता है, जो अवस्था जुड़ती है उसका ईधन शरीर में पहले से मौजूद होता है जो कर्म को पूरा करने की आवश्यकता होती है उसे पूरा कर शरीर का रसायन विज्ञान मिटा देता है। "

'अशोक मानव '

स्थापित 1948
74 वर्षों का विश्वास
लाला जुगल किशोर
गोटे वाले
परिधान वही जो
व्यक्तित्व को निखार दें
55 अमीनाबाद पार्क, लखनऊ। सम्पर्कः 9935329775

दुर्गा आटो सेल्स

सेवा ऐसी जो पसीना न बहने दे

Aurhorised Dealer for Mahindra Tractors, Farm Equipments & Spare Parts

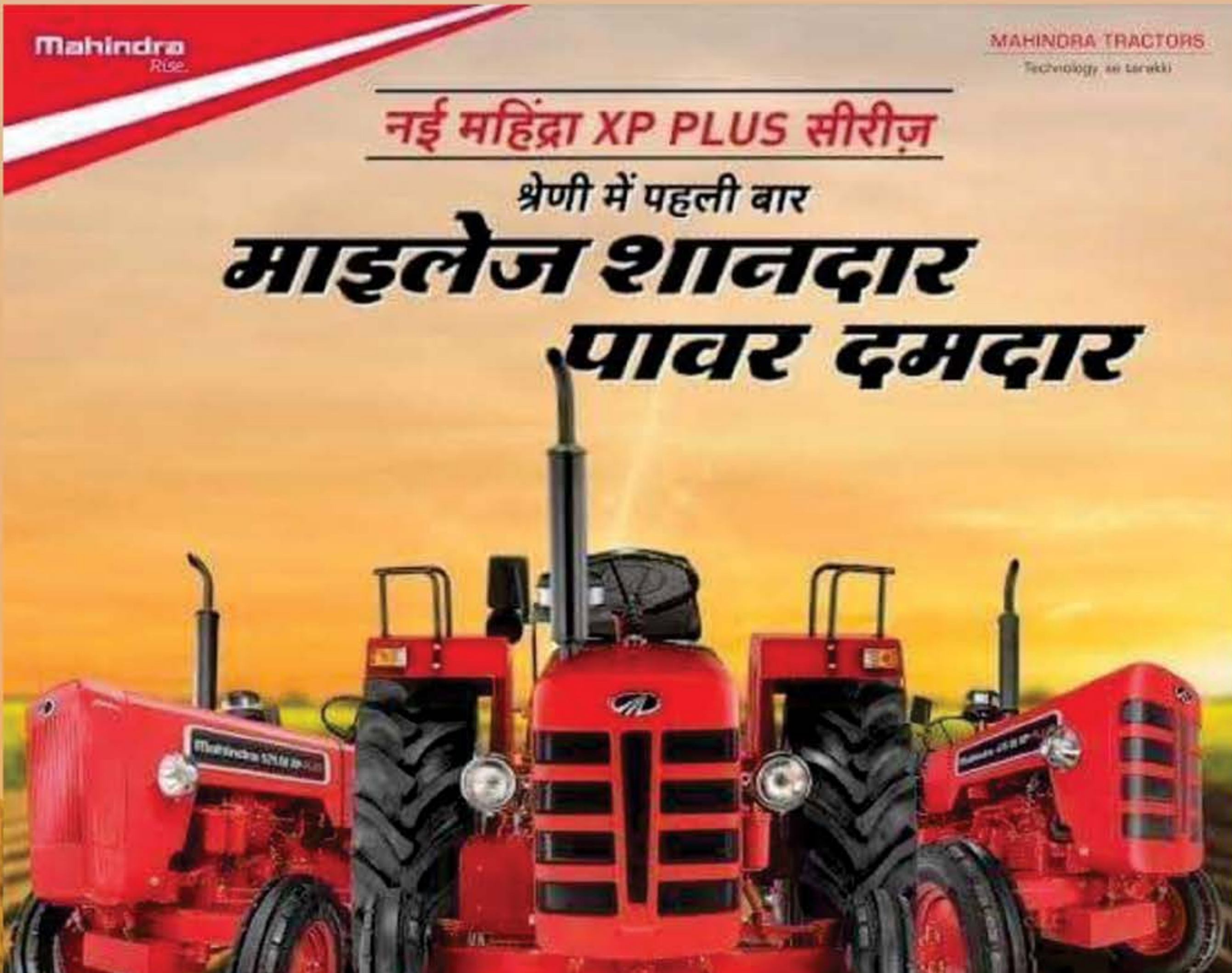

durgaautosale2000@gmail.com 9919528830 0545-4242216

इलाहाबाद-जौनपुर रोड, मछली शहर, जौनपुर, उ. प्र.।